अर्जुनविषादयोग
सांख्ययोग
कर्मयोग
ज्ञानकर्मसंन्यासयोग
कर्मसंन्यासयोग
आत्मसंयमयोग
ज्ञानविज्ञानयोग
अक्षरब्रह्मयोग
राजविद्याराजगुह्ययोग
विभूतियोग
विश्वरूपदर्शनयोग
भक्तियोग
क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग
गुणत्रयविभागयोग
पुरूषोत्तमयोग
दैवासुरसंपद्विभागयोग
श्रध्दात्रयविभागयोग
मोक्षसंन्यासयोग

अनुग्रह

श्रीमद्भगवद्गीतेतील शाश्वत जीवनमूल्ये

विवेक गंगाधर इनामदार

।। अनुग्रह ।।

विवेक गंगाधर इनामदार

© विवेक गंगाधर इनामदार

प्रथमावृत्ती
श्रावण वद्य द्वादशी , शके १९४२
(दि. १६ ऑगस्ट २०२०)

प्रकाशक
अभय मधूकर कोटलवार,
अभय प्रकाशन
विवेक नगर, नांदेड.

अक्षरजुळणी
प्रा. गिरीष सुधीर देशपांडे
मुखपृष्ठ
व्यंकटेश विठ्ठलराव कोडगीरे
मुद्रक
अविरत प्रिंटर्स, नांदेड

मूल्य : १५०/-

ISBN 81-87006-52-8

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

Issue : XII, Vol. I
IWRJ
IMPACT FACTOR 5.50
ISSN 2454-3292
March 2020 To August 2020

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	Critical Analysis of Farmers' Suicides in Maharashtra **Dr. Nilam Chhangani**	1
2	Trends and Challenges of India's Balance of Payments **Dr. D. V. Shinde**	10
3	John Masters Savage Novel "Night Runners of Bengal" **Dr. Anuradha S. Jadhale**	16
4	Reading Habits of Ladies Students in Academic Libraries **Kishan K. Talgane**	24
5	Historical Approach and Yoga Sutras in Wrestling **Dr. B. N. Gapat**	30
6	Indira Gandi and Bangladesh War Foreign Policy **Dr. S. M. Akashe**	37
7	साठोत्तरी हिन्दी गजल में राजनीतिक वोध **डॉ. रमाकांत मोहनराव बिडवे**	43
8	घेतलेल्या कर्जावायत अकोला जिल्हा मध्यवती सहकारी बँकेची महाराष्ट्रातील इतर जिल्हा मध्यवती सहकारी.बँकांशी तुलना **सुनिल हरीभाऊ पांडे**	47
9	भारतातील वेद व पुराणातील इतिहास लेखन **योगेश मधुकर चव्हाण**	51
10	पर्यावरणवादी साहित्याचा चिकित्सक अभ्यास डॉ. एच. एन. गायकवाड	56
11	महात्मा गांधी यांच्या शिक्षण विषयक विचारांचा आढावा प्रा. प्रशांतकुमार वनंजे	59

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

Indo Western Research Journal (IWRJ)

IMPACT FACTOR 5.50

www.iraso.com

ISSN 2454-3292
Indo Western Research Journal (IWRJ)
Issue : XII, Vol. I
March 2020 To August 2020

Research Paper 7 Hindi

साठोत्तरी हिन्दी गजल में राजनीतिक बोध

डॉ. रमाकांत मोहनराव बिडवे
हिन्दी विभाग,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुक्रमाबाद, जि. नांदेड

प्रस्तावना :-

आधुनिक युग में जीवन और समाज का प्रत्येक क्षेत्र राजनीति से प्रभावित रहा है। राजनीति प्रगति का महत्वपूर्ण साधन है। जिस राष्ट्र की राजनीति शिथिल, अपाहिज और राष्ट्रहित के स्थान पर व्यक्तिगत स्वार्थ को ही महत्व दिया जाता है वहाँ समाज के उन्नति के मार्ग में रुकावट निर्माण होती है। परिणामस्वरूप राष्ट्र पतन की ओर बढ़ने लगता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात धर्म निरपेक्षता का अर्थ राजनीतिक दलों ने अपने - अपने अलग मत से लिया। जिसके कारण देश में धर्म पर आधारित विकृत राजनीति ने जन्म लिया। निराशा का वातावरण चारों ओर फैल गया। शुरु में जो भी नैतिकता राजनीति में थी, बाद में वह भी लुप्त हो गयी। राजनीति का आदर्श और नैतिकता से कोई संबंध नही रहा सामाजिक वातावरण दूषित होता गया। राजनीति का राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति से कोई संबंध नही रहा। स्वतंत्रता के पहले राजनीति त्याग, बलिदान, देशहित तथा समाज की उन्नति का पर्याय थी बाद में वह राजनीति व्यक्तिगत स्वार्थ का आखाड़ा बन गयी। जनतंत्र का मनमानी उपयोग करना राजनैतिक लोगों ने आरंभ कर दिया। राजनीतिक लोगों के प्रति लोगों की आस्था टूटती चली गयी। राजनीति और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पर्याय बन गये। भ्रष्टाचार को शिष्टाचार समझकर भ्रष्टाचार किया जाने लगा। आज राजनीतिक लोग चुनाव के समय ही जनता को याद करते है। बाद में उन्हें भूल जाते हैं। आज वोट के लिए नोट देकर राजनीति की जा रही है। युवाओं को शराब पिलाकर उनकी जिंदगी बरबाद की जा रही है।

आज संसद संसद नही रही, वह आखाड़ा बन गयी है। चुनाव जीतने के लिए कई हथकंडे अपनाये जाने लगे। जाति - पाति, भाषा, धर्म, वर्ग के आधर पर देश को बाँटा जाने लगा। जाति के नाम पर शक्ति प्रदर्शन किया जाने लगा। वर्तमान युग में अनैतिकता, भ्रष्टाचार, स्वार्थ आदि कई कुप्रवृत्तियाँ राजनीति का अंग बन गयी। इसलिए अच्छी सोचवाला आदमी राजनीति से दूर भागने लगा। अवसरवादी तथा दल - बदल की राजनीति ने तो सभी मूल्यों की हत्या कर दी। भारत देश में रहनेवाले करोडों लोगों की वह विडम्बना रही कि स्वतंत्रता के पूर्व आजादी का जो सपना देखा था, वह कुछ ही वर्षों में चूर - चूर हो गया। सभी ने यही सोचा था की खाने को अन्न, पहनने को कपडा और रहने के लिए मकान मिलेगा, समानता

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

प्राप्त होगी, लेकिन वास्तविकता कुछ विपरीत ही सामने आयी। सरकार और राजनीति से जनता का विश्वास उठ गया। साहित्य में राजनीतिक चेतना कई रूपों में व्यक्त होती है। हिंदी साहित्यकारों ने भी वर्तमान राजनीति के भ्रष्ट चरित्र को विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से चित्रित किया है। हिंदी के गजलकार भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं है।

१. भारतीय लोकतंत्र का चित्रण -

२६ जनवरी १९५० को भारत का संविधान लागु हुआ। भारतीय नेताओं ने लोकतंत्र की सारी मर्यादाओं को भंग कर दिया। आज का लोकतंत्र कलंकित हो गया है। वह लोकतंत्र की बजाय जोंक - तंत्र बन गया है। कैलाश भारद्वाज ने इस लोकतंत्र का वर्णन अपनी एक गजल में इस प्रकार किया है -

"लोकतंत्र - लोकतंत्र,
पर्याय जोंक-तंत्र।
जनता परचून तो,
जनार्दन जी थोक तंत्र।
मंत्री जी ठंडाई,
वोटर जी फोक-तंत्र।"१

आज लोकतंत्र केवल कहने मात्र को लोकतंत्र रह गया है। उसकी गरीमा उसका महत्व खत्म हो गया है। इस बात को स्पष्ट करते हुए आलोक यादव कहते है -

"लोकतंत्र क्या, राजतंत्र क्या, क्या तानाशाही,
परिभाषाएँ बदल गई, बस शेष रह गए नाम।"२

दूसरी ओर प्रजातंत्र पर व्यंग्य करते हुए जहीर कुरेश लिखते है -

"इस प्रजातंत्र की व्यवस्था में,
तंत्र की ढील - ढाल मत पूछो।
मूल्य इतने गीरे 'मनुजता' के,
हँस रहा था दलाल मत पूछो।"३

२. देश के भ्रष्ट एवं स्वार्थी राजनेताओं का चित्रण :-

देश का नेता कैसा हो, महात्मा गांधीजी जैसा हो अक्सर हम ऐसा कहते हैं। राजनीति में नेता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वे ही राजनीति के सक्रीय एवं गतिशील बनातें हैं। किसी भी देश की उन्नति, विकास उस देश के नेताओं के चारित्रिक गुणों पर आधारित होती है।

आजादी के पहले हमारे देश में अनेक महान नेताओं ने जन्म लिया। उन नेताओं ने देश के लिए अपना सबकुछ न्योच्छावर कर दिया। उन्ही की कुर्बानी या बलिदान का यह नतीजा है कि हम आज भारत में साँस ले रहे है। आज के वर्तमान समय में नेता गण स्वार्थ के दल - दल में नख - शिख डूब गए है। कुर्सी के लिए वे कुछ भी करने के लिए तैयार है। जनता की सेवा या लोक कल्याण आदि बातों से उन्हें कोई लेना - देना नहीं है। आज के राजनेता आम आदमी का शोषण करते रहते है। समाज सेवा का ढोंग

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Issue : XVI, Vol. I
IAP
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN 2348-5825
Oct. 2020 To Mar. 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	A Geographycal Analysis of Ganga Action Plan **Dr. K. R. Kande**	1
2	Open Source Software for Libraries: An Overview **Sankalp Shamrao Gajbe**	9
3	Sports - in Ancient India **Dr. Uttam Dhumal**	15
4	Impact of Physical Education Training Programme on Self-Efficacy on Sedentary Students **Dr. G. M. Togare**	21
5	विवेकी राय के उपन्यासों में व्यक्त यथार्थ बोध **डॉ. रमाकांत मोहनराव विडवे**	27
6	नाबार्ड आणि ग्रामीण विकास : एक अर्थशास्त्रीय अभ्यास **डॉ. गिरीष मायी, डॉ. राजेंद्रकुमार गव्हाळे**	32
७	माहिती-तंत्रज्ञान उद्योग आणि भारत **डॉ. राजश्री जाधव**	41
8	प्रखर बाण्याचे परखड वृत्तपत्र : 'वऱ्हाड समाचार' **डॉ. अरुण एन. फरपट**	46
9	भारतीय राज्यघटना व सामाजिक न्याय **डॉ. अनिल रेड्डी**	51
10	वृध्द महिलांच्या समस्येची कारणे व उपाययोजना **डॉ. जितेंद्र कोकणे**	57
11	महात्मा फुले यांचे सामाजिक तत्वज्ञान **डॉ. प्रशांतकुमार वनंजे**	64

Indo Asian Philosopher (IAP)

IAP

IMPACT FACTOR
6.10

ISSN 2348-[illegible]
Indo Asian Philosopher (IAP)
Issue : [illegible], Vol. I
Oct. 2020 To Mar. 2021
www.iraeg.com

Research Paper 5 Hindi

विवेकी राय के उपन्यासों में व्यक्त यथार्थ बोध

डॉ. रमाकांत मोहनराव शिंदे
हिन्दी विभाग,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुखमाबाद, जि. नांदेड

प्रस्तावना :-

उपन्यास आधुनिक युग की सबसे मनोरंजक साहित्यिक विधा है । इसके जरिए समाज की यथार्थ स्थिती सरल एवं मनमोहक रूप मे उजागर होती है । पूर्व प्रेमचंद युग में घटनाप्रधान उपन्यासों की बहुलता थी । लेकिन प्रेमचंद के पदार्पण से हिन्दी मे यथार्थ और आदर्श के ठोस धरातल पर उपन्यासों की संरचना होने लगी । समाज की ज्वलंत समस्याओ का मर्मस्पर्शी सन्निवेश भी इस युग के उपन्यासों की खासियत है । प्रेमचंदोत्तर युग मे मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, व्यक्तिवादी, सामाजिक एवं आंचलिक उपन्यासों का सूत्रपात हुआ । उपन्यास क्षेत्र में 'मैला आंचल' के आगमन से आंचलिकता का समारंभ हुआ । अंचल से आंचलिकता शब्द की उत्पत्ती हुई । आजकल साहित्य में एक अर्थ प्रदेश या क्षेत्र विशेष के रुप में रुढ हो गया । पिछडे हुए अंचल का चित्रण इसकी खासियत है । ये विस्मय एवं कुतूहल के माहौल से परिपूर्ण है । अंचल के निवासियों के रीति - रिवाज, जातीयता, एवं नई राष्ट्रीय जागरन का दिग्दर्शन इसमें शामिल है । आंचलिक उपन्यासों मे लोकजीवन तथा लोकसाहित्य को उजागर करने के लिए आंचलिक भाषा तथा बोली का सहारा लिया जाता है ।

डॉ. विवेकी राय ने आपने उपन्यास मे सभी तरह के यथार्थ का चित्रण किया है इसमें आधुनिकाता की कसमसाहट, परिवर्तित जन-जीवन, षडयंत्रकारी दुष्ट राजनिति, मूल्य टूटन की पीडा, अभावग्रस्तता, प्रकोपों की पीडा, सुधार योजनाएँ, शोषन के विविध आयाम, पारंपारिक ईर्षा-द्वेष, आन्दोलन की स्थिती, नौकरशाहीका दर्शन, ग्रामांचल का दलित जन-जीवन, भ्रष्ट शासन व्यवस्था का चित्रण, यौन संबंधोका चित्रण सनातन प्रवृतियाँ, नारी का यथार्थ चित्रण,धर्म, सांस्कृतिक रुढीयां आदी विभिन्न स्थितीपर आपने उपन्यास में यथार्थ बोध दिखाने का प्रयास किया है । उपन्यास के उन्नायकों में श्री फणीश्वरनाथ रेणु का स्थान सर्वोपरि है । उनसे पहले प्रेमचंद जैसे सर्जकों ने परिवेश के स्थूल वर्णन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संदर्भ संकेत :-

१] बबूल - डॉ. विवेकी राय - अनुराग प्रकाशन, वाराणसी-पुनरावृत्ति - २००१ - प्रथम संस्करण - १९६७

२] पुरुष पुराण - डॉ. विवेकी राय - भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली - प्रथम संस्करण - १९७५

३] लोकऋण - डॉ. विवेकी राय - विश्व विद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी - पुनरावृत्ति - २००१ - प्रथम संस्करण -१९७७

४] श्वेत पत्र - डॉ. विवेकी राय - अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली - पुनरावृत्ति - १९९८ - प्रथम संस्करण - १९७९

५] सोनामाटी - डॉ. विवेकी राय - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली - पुनरावृत्ति - १९९५ - प्रथम संस्करण - १९८३

६] समर शेष है - डॉ. विवेकी राय - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली - प्रथम संस्करण - १९८८

७] मंगलभवन - डॉ. विवेकी राय - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली - प्रथम संस्करण - १९९४

८] नमामि ग्रामम् - डॉ. विवेकी राय - विद्याविहार, दिल्ली - पुनरावृत्ति - १९९७ - प्रथम संस्करण - १९९६

९] अमंगलहारी - डॉ. विवेकी राय - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली - प्रथम संस्करण - २०००

१०] देहरी के पार - डॉ. विवेकी राय - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली - प्रथम संस्करण -२००२

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta Mukhed Dist.Nanded

INDEX

Sr. No.	Title for Research Paper	Page No.
[illegible]	Financial Reforms in Banking Sector and its Impact on The Consumer [illegible]	[illegible]
2	Role of FDI in Banking in generating wealth in Indian Economy Dr. [illegible]	[illegible]
3	[illegible] of Self Physical and Psychological condition [illegible] [illegible]	[illegible]
4	[illegible] Resources [illegible]	[illegible]
5	[illegible] [illegible]	[illegible]
6	[illegible] [illegible]	[illegible]
7	[illegible] [illegible]	[illegible]
8	[illegible] [illegible]	[illegible]
9	[illegible] [illegible]	[illegible]
10	[illegible] [illegible]	[illegible]
11	[illegible] [illegible]	[illegible]

PRINCIPAL

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

14) A study on Financial Soundness Indicators of HDFC Bank and SBI
Dr. Vivek Shankar, Bodh Gaya, Bihar ||57

15) केशवसुत आणि बालकवींच्या कवितांमधील शेती संस्कृती मूल्य व ग्रामीण जीवन
मोरे गुणवंत व्यंकटराव, नांदेड ||61

16) आदिवासी कुटुंब व्यवस्था व आदिवासी स्त्री
डॉ. मुक्ता गजेंद्र आंभेरे, जि. पुणे ||64

17) महाराष्ट्रातील आदिवासी कोलाम जमातीचे समाजशास्त्रीय अध्ययन
प्रा.डॉ.एस.जी. अन्सारी, जि.लातूर ||69

18) भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि सद्यःस्थिती
प्रा. डॉ. शिवाजी दिवान, जि. बीड ||72

19) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची कृषी व जलनीती
प्रा. डॉ. श्रीकांत गायकवाड, लातूर ||74

20) एकविसाव्या शतकातील आंबेडकरवादी कवितेचे स्वरूप
डॉ. कालीदास गुडदे, पालम ||78

21) प्रा. गौतम गायकवाड : आंबेडकरी विचारांचे एक धगधगते वादळ
कैलास मच्छिंद्रनाथ होके, जि. बीड ||81

22) महिला आयोग आणि महिला सुरक्षा समिती
प्रा.डॉ.सर्जेराव राजाराम कहाळे, जालना ||83

23) बचतीला प्रभावित करणारे घटक : एक अर्थशास्त्रीय अभ्यास
प्रा.डॉ.जितेंद्र पांडुरंगराव काळे, जि.नांदेड ||86

24) महाराष्ट्रातील शेतक-यांच्या आत्महत्या : कारणे आणि उपाय
प्रा.डॉ.आर.डी.खनाळ, जि.बीड (महाराष्ट्र) ||88

25) REDIRECTING TEACHER EDUCATION : PROBLEMS AND CHALLENGES IN THE ...
Dr. Sekh Abdul Hakim, Nagaon (Assam) ||90

26) प्रवासवर्णन वाङ्मयाचे स्वरूप
प्रा.डॉ.गणपती जांतोबा मोरे, जि.परभणी ||93

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

[illegible] प्रमाणात [illegible] आणि [illegible] यांचे [illegible] करणे. [illegible] आणि [illegible] यांचे [illegible] असा [illegible] प्रकार [illegible] भविष्यकालीन [illegible] करणे. [illegible] कुटुंबाचे [illegible] कुटुंबाच्या [illegible] भविष्यकालीन [illegible] करणे.

[illegible]

[illegible] बचत [illegible] देशात [illegible] बचत [illegible] भविष्यकालीन [illegible] बचत केली जाते.

[illegible]

[illegible] बचत अधिक [illegible] बचत [illegible] भविष्यकालीन [illegible] करतात. भांडवल गोळा करणे

भांडवल निर्मिती हे विकसित आणि विकसनशील देशात [illegible] बचत [illegible] भांडवल निर्मिती होत नाही आणि विकासाचा वेग कमी होतो.

[illegible] दूर करणे

[illegible] दूर करण्यासाठी व्यक्ती बचत करतात. [illegible] बचत [illegible] दूर करण्यासाठी व्यक्ती बचत करतात हे [illegible] स्पष्ट केले आहे.

[illegible] बचत [illegible] आहे. व्यक्तींच्या बचतीला [illegible] व्यक्ती [illegible]

देशातील [illegible] बचत करतात. या संस्थांमध्ये केंद्र सरकार, राज्य सरकार, जिल्हा परिषद, नगरपालिका, [illegible] इत्यादी संस्थांचा समावेश होतो. या संस्थांना प्राप्त होणारे उत्पन्न [illegible] आर्थिक खर्च, [illegible] सुधारणा, [illegible] विकास आणि [illegible] बचतीचा उपयोग करतात.

सारांश

देशात गुंतवणुकीचे प्रमाण जेवढे अधिक [illegible] अधिक रोजगार संधी निर्माण होतील हे स्पष्ट आहे. भारतासारख्या देशात [illegible] करणे आहे. [illegible] आवश्यक आहे. [illegible] बचत आणि गुंतवणुकीचे प्रमाण वाढले पाहिजे.

देशातील बचतीचे व भांडवल निर्मितीचे प्रमाण जेवढे अधिक [illegible] भांडवल निर्मितीचे [illegible] आर्थिक व [illegible] अनेक आर्थिक, [illegible] या [illegible] बाधा पोहचू शकते.

निष्कर्ष

थेंबे थेंबे तळे साचे या म्हणी प्रमाणे वैयक्तिक बचत जरी छोटी असली तरी त्या बचतीचे एकत्रित स्वरूप अर्थ व्यवस्थेत मोठ्या प्रमाणात भांडवल निर्मितीचे कार्य करतात. बचतीचे हे प्रमाण जास्त असेल तर अर्थव्यवस्थेत गुंतवणूक मोठ्या प्रमाणात होते. गुंतवणूक [illegible] होते. [illegible] वाढते. उत्पन्न वाढते [illegible] आणि बचत वाढते म्हणून अर्थ व्यवस्थेचा विकास होतो.

संदर्भ

१) डी.आर कुलकर्णी, विकासाचे अर्थशास्त्र, कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद. १९९२, पृ.७७

२) ठाकरे, [illegible], विकासाचे अर्थशास्त्र, पिंपळापुरे पब्लिशर्स, नागपूर, पृ.९०

३) एच.एल. झिंगन, समष्टी अर्थशास्त्र, वृंदा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, २००६, पृ.१२०-१३०

४) मधुकर [illegible], भारतीय आणि जागतिक आर्थिक विकास, निराली प्रकाशन, पुणे, २००१, पृ.१२४-१२८

५) Census of India 2011

६) http: www.maharashtra.gov.in

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist. Nanded

2010 21

Yale I.P.

ISSN 2319-4766

On The Occasion of Centenary Birth Anniversary Year of
Hon. Dr. Shankarraoji Chavan
&
Silver Jubilee Years of Globalization of Indian Economy
A One Day National Level Conference
On

GLOBALIZATION & ITS IMPACT ON INDIAN ECONOMY
(GIIE 2020)

Date: 8th February 2020

Organized by

P. G. & Research Department of Economics
Yeshwant Mahavidyalaya, Nanded
(NAAC Reaccredited at 'A' Level (III Cycle) with 3.29 CGPA)
(College with Potential for Excellence – CPE)

In Collaboration with
S. R. T. M. University, Nanded

Special Issue of
An International, Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
INTERDISCIPLINARY STUDIES
JAN-MAR 2020, V-8/46

Editor In Chief
Principal Dr. G. N. Shinde

Editor
Dr. P. R. Muthe

Co-editor's
Dr. D. D. Bhosale
Dr. D. A. Pupalwad

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

[illegible]

31 [illegible]

32 [illegible]

33 [illegible]

34 [illegible]

35 [illegible]

36 [illegible]

37 [illegible]

38 [illegible]

39 [illegible]

40 [illegible]

41 [illegible]

42 [illegible]

43 [illegible]

44 [illegible]

45 [illegible]

[illegible]
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mudkhed Tq.Mudkhed Dist.Nanded

शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : नवीन आर्थिक धोरणाचा परिणाम

प्रा.डॉ. विनोद पांडुरंगराव काळे

अर्थशास्त्र विभागप्रमुख स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुखमाबाद ता मुखेड जि नांदेड

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषिप्रधान अर्थव्यवस्था असून विकसनशील देशात ग्रामीण अर्थव्यवस्थेला खूप महत्त्व आहे. कारण भारत हा कृषिप्रधान देश असून भारतीय अर्थव्यवस्था ही कृषीवर आधारित आहे. भारतातील ६४ टक्के लोकांचा प्रमुख व्यवसाय शेती आहे. मात्र जागतिकीकरणाच्या काळात शेती व्यवसाय अडचणीत आला आहे. शेती व्यवसायासाठी लागणारे आवश्यक भांडवल शेतकऱ्यांकडे उपलब्ध नसते. त्यामुळे बरेचसे भांडवल हे कर्जरूपाने घेतात. हे भांडवल उभारताना शेतकऱ्यांनी आपली शेती गहाण ठेवून कर्ज घ्यावे लागते. अशा पद्धतीने कर्जरूपाने मिळविलेल्या भांडवलाद्वारे शेतकरी आपली शेती करतो. परंतु शेती ही निसर्गावर अवलंबून असल्यामुळे शेती व्यवसायातील भांडवल परत मिळेलच याची खात्री नाही. त्यामुळे शेतकरी कर्जबाजारी होत आहेत. या दुष्टचक्रामुळेच शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या मोठ्या प्रमाणात होताना दिसून येत आहेत. त्यामुळे शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील आव्हान ठरलेल्या आहेत.

उद्देश

१) शेतकरी आत्महत्यांच्या कारणांचा शोध घेणे.

२) शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यांवर उपाययोजना सुचविणे.

गृहितके

१) शेतकरी आत्महत्येचे प्रमाण वाढ होत आहे.

२) शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यांवर केंद्रीय उपाययोजना करणे काळाची गरज बनली आहे.

संशोधन पद्धती सदर शोधनिबंधासाठी दुय्यम माहितीचा आधार घेतला आहे. दुय्यम माहितीत इंटरनेट, संदर्भ ग्रंथ, दैनिक वर्तमानपत्रातील लेख, पुस्तके, मासिके इत्यादींचा आधार घेतला आहे.

आत्महत्या म्हणजे काय? आत्महत्या म्हणजे स्वतःचे जीवन स्वतःच्या मर्जीने संपविणे.

इन्सायक्लोपेडिया ऑफ ब्रिटानिका नुसार : "आत्महत्या करणारा व्यक्तीने जाणीवपूर्वक आत्महत्या करणे." सन २०१८ मध्ये देशभरात एकूण १०,३४९ शेतकऱ्यांनी आत्महत्या करून आपली जीवनयात्रा संपवली. हा आकडा देशातील एकूण १३४५१६ आत्महत्यांच्या तुलनेत ७.७ टक्के एवढा जास्त आहे असे राष्ट्रीय गुन्हे नोंद ब्युरोच्या अहवालावरून लक्षात येते. २०१६ मधील ११३७९ च्या तुलनेत २०१८ मध्ये काहीशा कमी म्हणजे १०३४९ शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केली. यावर्षी पश्चिम बंगाल, बिहार, ओरिसा, उत्तराखंड, मेघालय, गोवा, चंदीगड, दमण व दीव, लक्षद्वीप व पाँडेचेरी यासारख्या राज्य व केंद्रशासित प्रदेशात

Principal
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq Mukhed Dist Nanded

ISSN: 2319-4766

कोणत्याही शेतकरी किंवा शेतमजुराची आत्महत्येची नोंद नाही असे एनसीआरबीने म्हटले आहे. २०१८ मध्ये १०३४९ शेतकरी व शेतमजुर (५७६३ व ४५८६) आत्महत्या केली. हा आकडा देशभरातील सर्वच प्रकारच्या एकूण आत्महत्यांच्या तुलनेत ७.७ टक्के एवढा आहे. २०१८ मध्ये देशभरात १३४५१६ आत्महत्या झाल्या. सन २०१७ च्या आत्महत्येच्या तुलनेत (१२९८८७) हा आकडा ३.६ टक्के जास्त आहे. सर्वाधिक १७९७२ आत्महत्या महाराष्ट्रात नोंदवले आहे. त्यानंतर तामिळनाडू (१३८९६), पश्चिम बंगाल (१३२५५), मध्यप्रदेश (११७७५) आणि कर्नाटक (११५६१) क्रमांक लागतो. प्रस्तुत पाचही राज्यांची आत्महत्यांची संयुक्त टक्केवारी ५०.९ टक्के असून उर्वरित २४ राज्य व ७ केंद्रशासित प्रदेशात ४९.१ टक्के आत्महत्येची नोंद आहे. लोकसंख्येच्या दृष्टीने सर्वात मोठे राज्य असलेल्या उत्तर प्रदेशात २०१८ मध्ये ३.६ टक्के लोकांनी आत्महत्या केली आहे. तर केंद्रशासित प्रदेशात दिल्लीत सर्वाधिक २५२६ तर त्यानंतर पंडुचेरीत ५०० आत्महत्या नोंदवण्यात आल्या आहेत.

तक्ता क.१ सन १९९५ पासून भारतातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या

अ.क्र.	वर्षे	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या
१	१९९५	१०७२०
२	१९९६	१३७२९
३	१९९७	१३६२२
४	१९९८	१६०१५
५	१९९९	१६०८२
६	२०००	१६६०३
७	२००१	१६४१५
८	२००२	१७९७१
९	२००३	१७१६४
१०	२००४	१८२४१
११	२००५	१७१३१
१२	२००६	१७०६०
१३	२००७	१६६३२
१४	२००८	१६७९६
१५	२००९	१७३६८
१६	२०१०	१५९६४
१७	२०११	१४०२७
१८	२०१२	१३७५४
१९	२०१३	११७७२
२०	२०१४	१२३६०
२१	२०१५	१२६०२
२२	२०१६	११३७९
२३	२०१७	—
२४	२०१८	१०३४९

Source : National Crime Record Bureau

Principal
Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Mukramabad Ta Mukhed Dist Nanded

[illegible]

RNI MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR 6.20

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXII, Vol. III
Year - 11 (Half Yearly)
(July 2020 To Dec. 2020)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Loheavan,
PENSULVIYA (USA)

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi , Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Poitical Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur (M.S.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani (M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College
Chakur Dist. Latur (M.S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

[illegible]

Globalization and Higher Education: Challenges and Advantage

Introduction:

[illegible]

[illegible]

over the delivery of social goods. Everything began to be viewed as a commodity that could be produced and delivered by the private sector in line with market forces and according to the principles of supply and demand. One by one - water, electricity, postal services, health, and now education, have been turned into a commodity.

Globalization is a process, which has affected many areas of human life, one of those being education. In the twentieth century, many developing countries have experienced growth in the educational facilities available to them due to the entry of institutions from the West. Some believe that this process is an invaluable opportunity for the people of the developing countries to raise their skills and standards of education. Others fear that it is merely a modern version of cultural imperialism that will lead to the creation of a universal, ultimately Western society. One aspect of the globalization of education has been the creation of 'twinning projects' between one Western and one non-Western university (www.ssn.flinders.edu.au). Through Globalization of education, which is being knowledge transfer from the Western countries into developing countries, is intended to improve the skills and capabilities of the people receiving it. Bull and Watson wrote in their book 'The Expansion of International Society' that the European elites who entered India were accused of Western imperialism actually rediscovered India's languages and religions and identified the region's social, legal and political traditions and they also argued that the transplantation of Western institutions into developing countries shapes the behavior of those involved and thus makes for greater similarity with the people in which the institutions first evolved. In fact a study has shown that the process of transferring such institutions results in an increasing similarity of outlooks and values.

Structure of Higher Education in India:

Over the last 50 years, the Government of India has provided full policy support and substantial public funds to create one of the world's largest systems of higher education. These institutions, with the exception of some notable ones, have however, not been able to maintain the high standards of education or keep pace with developments in the fields especially in knowledge and technology. Over time, financial constraints with exploding enrolments, and a very high demand from primary and secondary education has led to the deterioration in the financial support provided by the

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

institutions. The enrolment is growing at the rate of 5.1 per cent per year. However, of the Degree students only 5 per cent are enrolled into engineering courses, while an overall 20 per cent in sciences. The demand for professional courses is growing rapidly. Now in the era of reverse brain drain, the IIT graduates increasingly prefer to return or remain in the country. It is stated by some that Bangalore today has 150,000 software engineers compared to 130,000 in Silicon Valley. According to Computer wise, the top 50 global IT service firms alone target raising India's headcount from 173,000 in September 2004 to 500,000 by end of 2005.

References :-

1. Guy Neave, "The Dark Side", Globalization: Threat, Opportunity or Both, Report presented to the IAU Administrative Board Meeting at its Mexico City meeting in November 2001).
2. Guy Neave, "Globalization: Threat, Opportunity or Both", Report presented to the IAU Administrative Board Meeting at its Mexico City meeting in November 2001).
3. Philip G Altbach, Higher Education and the WTO: Globalization Run Amok, Chronicle of Higher Education.
4. Development in Practice-Higher Education: Lessons of Experience' May 1994, World Bank, Washington, D.C.
5. Website hosted & maintained by National Informatics Centre. Contents provided by Ministry of Human Resource Development, Government of India.

PRINCIPAL
[illegible]

Indo Asian Scientific Research Organization(IASRO)

And

Rajarshi Shahu Research Institute

Jointly Organized by

One Day E-Interdisciplinary International Conference

On

"Research Methodology in Higher Education"

(14th June 2020)

Editor in Chief

Dr. Balaji G. Kamble

PRINCIPAL

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Research Methodology in Legal Research **Dr. Kamalakar S. Waghmare**	1
2	Higher Education and Research in India : An Overview **Dr. Jeetendra P. Kale**	7
3	Commerce Education: Challenges & opportunities in India **Dr. S. E. Patil**	21
4	Higher Education Research in India **Dr. Madhav Palmante**	25
5	National Research Foundation, 2019: An Overview **Dr. Anjusha J. Gawande**	33
6	Research Methodologies in Physical Education **Anjali Barde**	45
7	A Volumetric and Viscosity Study for the Binary Mixtures of Cinnamaldehyde with Methanol over the entire Range of all Compositions at 298.15, 308.15 and 318.15 K. **Satish Maulage**	49
8	Equitable and Inclusive Education in NEP 2019: An Overview **Manisha Mohite**	58
9	Impact of E-Commerce on Traditional Retail Trade **Subhash Baban Nakhate**	68
10	Research Methodology in Faculty of Music **Dr. Surekha Ratnaparkhi**	75
11	Identification of the problem: A significant step of social Research **Dr. Narhari Govindrao Patil**	83

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq Mukhed Dist Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

treasure trove in a sealed vault. Education includes all that which completes the personality of an aware and cultured citizen.....True education must, therefore, provide also the skill for application and enable development of the traits, which nurture its future growth. The ethical component of education is an element, which caters to this need. It is in the different ethical values of the knowledge makers that we find the cause for the difference in their contribution, even though they are equipped with the same level of knowledge.[3]

Prof. Yaspal said, "My complaint against the present education system in our country is that it tends to be contextually disconnected. Personal observation and experience do not change what is required to be learnt and the manner in which it is to be learnt. A defined collection of competence and well-listed pieces of information constitute education for everyone, with little or no room for personal variation. Not only the learner but also the teacher is bound by contours, in expanse and in depth. The interconnections with allied areas are normally frowned upon but when allowed they are restricted to examples that might not be relevant any more. The testing methods ensure that diversion from the well-defined path does not take place.

Even the pathways for excursion are defined to the extent that they too form a part of the inorganic contour that contains the syllabus. This works reasonably well for restricted training but not for growing minds that might wander off into unexpected but often exciting new areas. We are not honed for creating new disciplines."[4]

According to K.C. Pandey, "The higher education constitutes of academic workers, administrative structures, systems, and conventional procedures. Academic workers or educationists include teachers, teacher trainers, academics and policy makers. These all are responsible for the crisis in higher education. The crisis is multi-faceted such as institutional mismanagement and structural rigidity, financial constrains and commercialization of higher education, equity vs. quality debate, political interference, undue emphasis on interdisciplinary and applied study and syllabi's irrelevance, and integrity of academic workers, and issues about moral basis of education."[5]

Indian Higher Education :

India has successfully created one of the biggest higher education systems in the world. Quality of many top institutions is recognized to be comparable to the best in the

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukhed Ta.Mukhed Dist.Nanded

Issue [illegible], Vol. [illegible]
[illegible] UNIVERSAL RESEARCH [illegible] [illegible] ISSN 2229-[illegible]
[illegible]

world. However, Indian education system faces problems and issues that originate from disparities and developmental models adopted. With all the impressive development in the areas of Information Technology, space science, nuclear technology, oil exploration, industrial production etc., India could not solve its problems of poverty, ignorance and underdevelopment completely and successfully due to various reasons. Nearly 25% people are still below poverty line; one-third are illiterate and disparities amongst rich-poor, urban-rural, educated-uneducated are high, which are creating enormous social tensions. The country has to face challenges of globalization and pressures of liberalization while continuing its fight against poverty, illiteracy and disadvantages. The major problems before the Indian Higher education are[6]:

1) Comodification of Education: Higher education is becoming a marketing commodity. It is a multi-billion dollar business. Foreign universities are trying to have a share of Indian educational markets, and have prepared for this during the last decade or more. This shift from education as a social good to marketable commodity is against the Indian culture, and sufferers in these changes will be poor and disadvantaged people of India.
2) Global Competitiveness: The competition will essentially be for offering quality education recognized at the International level and relevant to the local needs
3) Concerns of weaker institutions: High disparities in educational standards and quality of education offered by Indian universities and colleges is of great concern to all.

Developmental disparities and unsolved Indian problems: Many colleges and universities were started in India for removing regional imbalances and for supporting education of weaker and disadvantaged classes, particularly of women. These institutions and other developmental programs for weaker classes are still facing resource constraints, which are further aggravated by ignorance, poverty and disadvantages of the people they serve. This is resulting in widening divides and in keeping many educated from weaker and disadvantages sections outside the job and employment markets. The challenge of these marginalized and deprived to the system of education is enormous.

Weak linkage of education with developmental processes is creating frustration

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(i) [illegible]

(ii) [illegible]

(iii) [illegible]

(iv) [illegible]

(v) [illegible]

(vi) [illegible]

[illegible]

[illegible]

expansion in higher education with inclusiveness, quality, relevance, and with academic reform.[2]

Much greater challenges continue to exist with respect to quality and the provision of relevant education. Curricular reforms leading to regular revision and upgrading of curricula, introduction of semester system, choice-based credit system, examination reforms are yet to take place in all higher educational institutions across the country. Exceptions apart, majority of our higher education institutions perform poorly in the area of quality on a relative global scale. To materialize a "quantum jump" in achieving the triple objectives of access and expansion, equity and inclusion, and quality and excellence, with an emphasis on consolidation and optimal use of infrastructure already created during the 11th FYP, it is proposed to focus on the following strategies during the 12th FYP[3]:

1. The focus will be towards achieving higher access through expansion by consolidation and better utilization of the existing infrastructure, upgradation of the infrastructure as and where necessary, and creation of new institutions primarily to meet the objective of regional equity.
2. Increasing and enhancing access through a mission mode national programme, "Rashtriya Uchch Shiksha Abhiyan (RUSA)" aimed to achieve 25% national level GER which will include (a) upgrading of Autonomous Colleges, Colleges with Potential for Excellence, and A grade-accredited Colleges by the National Assessment and Accreditation Council (NAAC), as university-level institutions; (b) promoting evening universities/evening colleges; (c) introduction of undergraduate programmes in the universities as integrated undergraduate/postgraduate (UG/PG) programmes; (d) enhancing the intake capacity of the existing institutions of higher education; (e) developing the 'College Cluster Universities' regionally; and (f) establishing "Meta University Complexes" in association with public/private sector undertakings as a part of their corporatesocial responsibility, on an industry-academia mode.
3. The strategy for promoting equity at all levels and all branches of higher education, from enrolment to pass-out stage, shall be through new schemes for financial support of socially deprived groups, minorities and women, along with significant

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

12. [illegible]

13. [illegible]

14. [illegible]

15. [illegible]

16. [illegible]

17. [illegible]

18. [illegible]

[illegible]

better resource use efficiency and at the same time respecting the academic autonomy. A norm-based funding mechanism based on the justified requirements submitted by the universities and colleges with due approval of their decision making bodies, (Academic Council and Executive Council) and moderated by the availability of resources with the UGC shall replace the existing conventional approach.

19. For better coordination and speedy implementation of the 12th FYP priorities, the UGC, as an organisation, shall have to be restructured and modernised, and rejuvenated as a vibrant academic, administrative and fund providing/monitoring body by the introduction of new management system of good governance which is a layer above e-governance, with transparency and accountability on the one hand and by roping in eminent academics on full-time basis as advisers on the other, besides lateral entry/deputation- mediated administrative talent infusion.

20. State Councils of Higher Education have so far been established only in a few states as an interface bodies between the state governments, the universities of the State and the national bodies/councils like the UGC/All India Council for Technical Education (AICTE), etc.

21. Universities and Colleges being the end-users of the public funds, provided by either the central or the state governments, shall have to be made accountable for the funds, provided by introducing a New Educational Management System whereby their accountability would be assessed more in terms of their performance and outcomes and less in terms of insistence on adherence to elaborate processes and procedures.

22. State Universities and Colleges affiliated thereto account for an overwhelmingly large number of enrolments in higher education and it is this sector that has been least attended to in terms of resource support and subjected to external influences and pressures in the name of accountability.

23. A large number of new Central Universities and Model Colleges that were established during the 11th FYP would require continued and accelerated support because during this Plan they are likely to fast pace their development and

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

[illegible]

[illegible] growth and development.

Higher Education and Research in India :

A brief appraisal of Indian higher education system reveals that there is a proliferation of higher educational institutions, however, due to the prevailing systemic deficiencies, continues to produce graduates that are unemployable despite growing shortage of skilled manpower in an increasing number of sectors. Deterioration of standards of education and research, inadequate infrastructure and facilities, large vacancies in faculty positions, low student enrollment rate etc. are the established consequences.

Excellence and expansion :

Indian higher education, the significant and impressive developments of the past few decades notwithstanding, faces major challenges in both quantitative and qualitative terms. Perhaps the clearest and boldest statement of this concern can be found in the "Report to the Nation 2006" of the National Knowledge Commission which concludes that there is "a quiet crisis in higher education in India that runs deep", and that it has to do with both the quantity and the quality of higher education and research in India.

Regulation and governance :

Besides it's quantitative limitations and qualitative deficits, Indian higher education is also considered to be sub-optimally organized and significantly overregulated, limiting initiatives for change. In it's assessment of the existing regulatory arrangements, the National Knowledge Commission concludes: "In sum, the existing regulatory framework constrains the supply of good institutions, excessively regulates existing institutions in the wrong places, and is not conducive to innovation or creativity in higher education."

The privatization of higher education :

One of the striking features of the development of higher education in India over the last few decades has been the extent to which private institutions have come into the scene and attempted to respond to the massive demand for education at the post-secondary level.

Staffing higher education :

Should the ambitious plans of both the public and the private sector for the massive

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

...development of higher education in India have a chance to succeed, one of the key prerequisites is a large and highly capable pool of teachers who can provide academic leadership in teaching and research.

Interface between University and other Stake Holders :

With the shortage of adequate funding to meet the demands of various novel innovative programmes has affected in developing a meaningful and purposeful inter face between the universities, National Research Laboratories, industries, government, NGOs and society, etc. ICT in higher education policy may not be able to completely overcome all these challenges though it may play a role in information and resource sharing.

It is clear from the above that we need to recognize the prevailing crisis in higher education in India which runs deep. The need of the hour is to address this crisis in a systematic, forthright manner. We must emphasize the urgency of the situation, because our future depends on it. We are convinced that it is important to act here and now. At the same time, we believe that there is an opportunity in this crisis. Given the demographic reality of a young India, expansion, inclusion and excellence in higher education can drive economic development and social progress. Indeed, what we do in the sphere of higher education now can transform economy and society in India by 2025.[11]

In view of the above, we are baffled by various questions i.e. Do the educational institutions produce people who can deal with life as a whole? Have the institutions of higher learning been able to meet the increasing needs of the society? Do we teachers prepare our students to play the expected role? What are the factors that adversely affect teaching and research and in turn the quality of higher education? Are the pertinent questions relating to transparency and accountability of higher education institutions is addressed? Do these institutions prepare the students to face the highly competitive world? These are some of the pertinent questions that this seminar will look into and would try to find answers through intellectual deliberations from the diversified group.[14]

The higher education needs to be expanded without diluting quality and in fact by raising the standard of education imparted and making higher education more relevant to the needs and opportunities of a knowledge society. The higher education system must provide for accountability to society and create accountability within. An expansion of

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

[illegible] [redacted] [illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

and technological developments in terms of building the skills and knowledge, [illegible] needs to address the more fundamental issues of the social and moral consequences of such unregulated activities. In this context, there is now a growing demand to lay greater emphasis on education to inculcate, nurture and develop values, particularly among the youth of the country. Major recommendations of this seminar are given below".

Conclusion:

Education not only makes a man a perfect gentleman, it also arms him to meet all the situations in life. An educated man can always face difficulties in a better way than an uneducated person. He knows how to face the difficulties in a calm and quiet way. Instead of getting worried on the onslaught of difficulties, he will welcome them. This is the only chance in the life of a man to bring to the fore the latent powers which lie hidden in a man, till they are put to use. So long as the man is in a comfortable position, he need not exploit this hidden treasure.

References :-

1. Inclusive and Qualitative Expansion of Higher Education :Compilation Based on the Deliberations of the Working Group for Higher Education in the 12th Five-Year Plan (2012-17), University Grants Commission, New Delhi, November 2011, p.09
2. Higher Education in India: Issues, Concerns and New Directions, U.G.C. New Delhi, December 2003, p.iii
3. Justice J.S. Verma, Significance of Ethics in Education, UGC Golden Jubilee Lecture Series, UGC, December 2003, p.02.
4. Prof. Yash Pal, Reinventing Education For An Inclusive World, Golden Jubilee Lecture Series, UGC, December 2003, p.02.
5. Kali Charan Pandey, "Is Higher Education a Profession in Crisis?", p.02.
6. Prof. Ram Takwale, Challenges and Opportunities of Globalization for Higher Education in India – Alternatives through e-Education, Golden Jubilee Lecture Series, UGC, December 2003, pp.03-04.
7. ibid.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq Mukhed Dist Nanded

SOCIAL GROWTH

[illegible]

[illegible]

Webside

www.irasg.com

E-mail :

[illegible]

Published by :

[illegible]

Price : ₹ 200/-

[illegible]

PRINCIPAL

[illegible]

INDEX

Sr. No.	Title for Research Paper	Page No.
[illegible]	Role of Small Scale Industries in Economic Development Dr. [illegible]	[illegible]
[illegible]	Poverty, Unemployment and Inflation are Major Challenges before India's Vision of Sustainable Development Dr. [illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] in India [illegible]	[illegible]
[illegible]	Investigation of [illegible] Competition [illegible] of Baseball Players Dr. [illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[redacted] [illegible] [redacted]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उद्देश्य

१ स्टार्टअप इंडिया के तहत औद्योगिक विकास का अध्ययन करना

२ स्टार्टअप इंडिया उद्योग द्वारा प्राप्त निधि का अध्ययन करना।

३ स्टार्टअप इंडिया के अंतर्गत निधिकरण एवं पंजीकरण के पूर्वानुमान का अध्ययन करना।

देश में स्टार्ट अप की स्थिती

तालिकाक्र. १ देश के सात प्रमुख राज्योमें स्टार्ट अप की स्थिती

अ.क्र	राज्य	स्टार्ट अप	प्रतिशत
1	महाराष्ट्र	2587	17.72
2	कर्नाटक	1973	13.51
3	दिल्ली	1883	12.55
4	उत्तर प्रदेश	1129	7.73
5	तेलंगाना	748	5.12
6	गुजरात	712	4.88
7	हरियाणा	710	4.86

Source -Government of India Ministry of Commerce and Industry Department of Industrial Policy and prmotion -States Startup Ranking 2018

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि सबसे अधिक उद्योग महाराष्ट्र मे है, जो कि संपूर्ण उद्योग की तुलना में १७.७२ प्रतिशत है, इसका प्रमुख कारण जैवप्रौद्योगिकी वित्त पोषित क्लस्टर महाराष्ट्र के दो मुख्य शहर कल्याण तथा पुणे में स्थित है। इसके पश्चात १३.५१ प्रतिशत स्टार्टअप यह कर्नाटक राज्य मे है जिसमें बेंगलुरु का अंतर भाव होता है। जौवप्रौद्योगिकी वित्त पोषित क्लस्टर यह दिल्ली मे भी स्थापित है,दिल्ली का संपूर्ण उद्योग मे योगदान १२.५५ प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश का योगदान ७.७३ प्रतिशत है। इस प्रकार से ५० प्रतिशत से अधिक स्टार्टअप यह महाराष्ट्र, कर्नाटक दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश मे है। गुजरात राज्य मे स्टार्टअप का योगदान ४.८८ प्रतिशत है।

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]
1	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]
4	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]
6	[illegible]	[illegible]
7	[illegible]	[illegible]
8	[illegible]	[illegible]
9	[illegible]	[illegible]
10	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

क्र.क्र	वर्ष	[illegible]	प्रतिशत
1	2016	503	100
2	2017	[illegible]	1068.19
3	2018	8724	[illegible]

Source—Number of Tech Startup in India by Year 2014–2019

[illegible]

क्र.क्र	विवरण	[illegible]	प्रतिशत
1	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संदर्भ सूची :-

1. State startup ranking (2019) Startupindia-Government of India Ministry of Commerce and industry department of industrial policy and promotion.Pg no-18,129,130,131
2. LTU Rathore, (20019),-Number of Tech Start up in India by Year 2014 to 2019-http://m.economictimes.com
3. Pooja Sareen, (2018)- I nc42 Presents The Indian Tech startup 2018: Time to Gauge The Pulse of the Indian startup ecosystem.http://inc42.com buzz india
4. Wikipedia and vikaspedia
5. Datta Akanksha (2015) Startup- Initiative. Research, scholar Maharishi Markandeshwar University, sadopur Ambala India.-IOSR Journal of Business and Management [IOSR]e-ISSN:2278-487x,p-ISSN:2319-7668
6. Sharma Upadhyay, Shekhar Rawal Priyanka (2017) International journal for Research and applied Applied Science and Engineering Technology volume 5 issue 10 October 2017 page number 153 1-1 544
7. Pandey Neeraj, (2018) An Analysis of Startup Ecosystem in Metropolitan city in India. International Journal of Engineering and Management Research page number 237 - 244

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq Mukhed Dist.Nanded

IMPACT FACTOR 5.2[illegible]

International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

Hi-TECH RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XIX, Vol. - II
Year - X, (Half Yearly)
Aug. 2020 To Jan. 2021

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913 / 09503814000
07276305000 / 09637935252

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :
JYOTICHANDRA PUBLICATION
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur (M.S.) (Mob. 09423346913)

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Sunanda Rodge
Principal
Govt. B.Ed. College,
Nanded, Dist. Nanded (M.S.)

Scott. A. Venezia
Director, School of Business,
Ensenada Campus,
California, (U.S.A.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur (M.S.)

Bhujang R. Bobade
Director Manuscript Dept.,
D. A. & C. Research Institute,

Dr. Dileep S. Arjune
Professor & Head, Dept. of Economics
J. E. S. College,
Jalna, Dist. Jalna(M.S.)

Dr. U. Takataka Mine
Tokyo (Japan)

Dr. Babasaheb M. Gore
Dean, Faculty of Education & M.C.
Member S.R.T.M.U., Nanded (M.S.)

Dr. Nilam Chhanghani
Dept. of Economics,
KWC Mahavidyalaya
Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.)

DEPUTY-EDITOR

Dr. G. V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Bharat S. Handibag
Dean, Faculty of Arts,
Dr. B.A.M.U. Aurangabad(M.S.)

Dr. S.B. Wadekar
Dept. of Dairy Science,
Adarsh College,
Hingoli, Dist. Hingoli (M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani, Dist. Parbhani (M.S.)

CO-EDITORS

Dr. R.N. Salve
Head, Dept. of Sociology,
Shivaji University,
Kolhapur, Dist. Kolhapur (M.S.)

Ghansham S. Baviskar
Dept. of English,
RNC & NSC College,
Nasik, Dist. Nasik (M.S.)

Dr. Kailash Tombare
Head, Dept. of Economics,
Deogiri Mahavidyalaya,
Aurangabad (M.S.)

Dr. Kailash R. Nagulkar
Head, Dept. of History,
Gulab Nabi Azad College,
Barshi Takli, Dist. Akola (M.S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist. Nanded

Issue - XIX, Vol. II
HI-TECH RESEARCH ANALYSIS
IMPACT FACTOR 5.80
ISSN 2231-667
Aug. 2020 To Jan. 202

7

नियोजन, मनुष्यबळ व शेती संबंधीने यशवंतराव चव्हाणांचे मत ही आजची गरज

डॉ. मिलिंद पांडुरंगराव काळे
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुक्रमाबाद, जि. नांदेड

Research Paper - Economics

प्रस्तावना :

नियोजनाचा अर्थ शास्त्रीय दृष्टिकोनातून समजून घेण्यापेक्षा नियोजनाच्या पाठीमागे दोन तत्व आहेत ते समजून घेणे महत्त्वाचे आहे. त्याची एक बाजू देशात उपलब्ध असणारी साधने त्या साधनाचा परिपूर्ण उपयोग इ.चा विकास करून मानवी जीवनाला अर्थात आपणा सर्वांच्या जीवनाला समृध्द बनविणे यासाठी नियोजनाद्वारे प्रयत्न केला जातो किंवा नियोजन एक माध्यम आहे. तसेच या नियोजनाच्या माध्यमातून जी शक्ती, सामर्थ्य, संपत्ती निर्माण होईल याचा फायदा सर्वसामान्य माणसाला मिळेल याचीही काळजी नियोजनाने घेणे गरजेचे आहे. याचा अर्थ देशात उपलब्ध असणाऱ्या साधनसामग्रीचा पुरेपूर वापर करून तसेच त्या साधनसामग्रीचा उपयोग करून मानवी जीवन समृध्द करणे याचा अर्थ मानवाच्या दरडोई उत्पन्नात वाढ करणे व त्याला पूर्वीपेक्षा चांगले राहणीमान जगता आले पाहिजेत याचा अर्थ पूर्वीपेक्षा वस्तूची प्रत चांगली व जीवन जगण्यासाठी जेवढे आवश्यक आहे तेवढे उपलब्ध होणे गरजेचे आहे. त्याबरोबर त्याचा फायदा सर्वसामान्य जनतेला होणे अपेक्षित आहे याचा अर्थ नियोजनापासून आर्थिक विषमता निर्माण होऊन समाजात आर्थिक विषमतेची दरी निर्माण होऊन एकीकडे दारिद्र्य व दुसरीकडे श्रीमंत अशी अवस्था निर्माण होऊ नये. पण त्यांना अपेक्षित असलेले नियोजनाचे फायदे त्यानंतर जनतेला मिळालेले नाहीत हे वास्तविक आहे कारण भारतात नियोजन काळात विकासाबरोबर आर्थिक विषमता वाढत गेलेली दिसून येते.

यशवंतराव चव्हाणांनी महाराष्ट्राच्या बाबतीत विचार मांडताना महाराष्ट्रात दोन बाबींची उपलब्धता आहे एक जमीन, पाणी, जमिनीखालचे खनिज पदार्थ तर दुसरे मनुष्यशक्ती किंवा श्रमशक्ती. या असणाऱ्या साधनाचा पुरेपूर उपयोग करून घेणे गरजेचे आहे. महाराष्ट्राचे जुने चित्र आता राहिलेले नाही म्हणजे सिंहगड, प्रतापगड, शिवनेरी म्हणजे महाराष्ट्र असे चित्र नाही. त्याचा

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [redacted] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] वीज गेली पाहिजेत हा विचार [illegible] त्यासाठी जगात जे चांगले विचार आहेत ते आपण स्विकारले पाहिजेत. त्यासाठी शेतीच्या विकासासाठी कृषि-उद्योग प्रधान अर्थरचना ही असली पाहिजेत. यासाठी कृषी औद्योगिक समाज निर्माण होणे गरजेचे आहे.

या वरील बाबीचा आपण आजच्या परिस्थितीत विचार केला तर शेतीचा विकास झाला उत्पादकता वाढली पण शेतकरी गरीब किंवा दारिद्र्यात राहिला कृषी उद्योग ही संकल्पना साकार होऊ शकली नाही कारण आज शेतीतून उत्पादीत आलेल्या कच्या मालाचे पक्क्या वस्तूत रुपांतर करणारे कारखाने हे शहरातच आहेत. त्यामुळे खेडे व शहर यांच्या किंवा उद्योगपती व शेतकरी यांच्यातील आर्थिक विषमतेची दरी वाढत जातानाच दिसून येते. तसेच सूतगिरण्या, साखर कारखाने जरी खेड्यात निघाले असले तरी तेही शेतकऱ्यांच्या मालाला योग्य भाव देताना दिसून येत नाही.

सहकारी चळवळीची मत मांडताना ती लोकशाहीची चळवळ आहे पक्षाची नाही यातून शोषिताचा फायदा व्हावा असे मत होणे म्हणजे कृषी उद्योग-सहकार यातून समाजवादी समाजरचना निर्माण करावयाची होती.

निष्कर्ष :

१) नियोजनात बाबतीत सर्वात महत्त्वाचे कर्तव्य म्हणजे जी साधने आहेत त्याचा उपयोग जास्तीत जास्त करून आमचे जीवन समृध्द झाले पाहिजेत. व त्याचा फायदा सर्वसामान्य माणसाला मिळाला पाहिजेत.

२) भारतात व महाराष्ट्रात कोणती साधने आहेत ती म्हणजे एक शेती व दुसरे मनुष्यबळ. शेतीचा विकास हा पाण्यावर किंवा जलसिंचनाच्या सुविधावर अवलूंन आहे. या सुविधा महाराष्ट्रात वेगवेगळ्या विभागात वेगवेगळ्या आहेत. हे पानी मर्यादित आहे. त्याचा उपयोग व्यवस्थित होणे गरजेचे आहे.

देशात व महाराष्ट्रात मनुष्यबळ उपलब्ध आहे. पण ते आळसी आहेत असे म्हणणे चुकीचे आहे कारण वेगवेगळ्या क्षेत्रात काम करणारे मनुष्यबळ उपलब्ध आहे याचा विकास शिक्षणावर अवलंवून आहे म्हणून गरीब व श्रीमंत या दोघांनाही शिक्षण मिळाले पाहिजेत व ते शिक्षण राज्यातील समाजोपयोगी साधनाचा वापर करण्याची शक्ती मुलामध्ये येईल असे शिक्षण असावे.

३) जमिनीचे असमान वाटप हे अतिशय गंभीर बाब आहे यासाठी मर्यादित स्वरुपाची कमाल मर्यादाच जमिनीच्या बाबतीत असावी तसेच भुमिहिनांना जंगलखात्याची व महसूल खात्याची जमीन देण्यात यावी.

४) जमिनीत उत्पादनात वाढ करण्यासाठी आधुनिकीकरण आवश्यक आहे. तसेच पाणीपुरवठ्याच्या सोयी असणे गरजेच आहे. यासाठी धरणाला विरोध करणे चुकीचे आहे.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

५) शेतीत उत्पादनात वाढ होण्यासाठी शेती आधुनिक पद्धतीने करणे शेतकऱ्यांचे सुधारले शेती करण्यासाठी भारत सेवा सहकारी सोसायट्यांची स्थापना करावी. तसेच सहकारी शेती संस्था स्थापन कराव्यात.

६) कृषी-उद्योग हा कुटुंब प्रश्न सोडवण्यासाठी शेतीत उत्पादनात वाढ व्हावी व शेती आधुनिक पद्धतीने करावी याच अर्थ शेतीवर उद्योग म्हणून पाहावे तसेच शेतीवर विकासाचा उद्योग अवलंबून असतात म्हणून शेतीच्या विकासामुळे उद्योगांचा विकास होईल त्यामुळे खेडे व शहर यातील अंतरही कमी होईल.

७) शेतीसाठी लागणारी अवजारे खते यासारखे हे कारखाना निर्माण व्हावेत व शेतीतून निर्माण होणाऱ्या कच्च्या मालावर प्रक्रिया करणारे उद्योगही खेड्यात उभारावेत.

८) शेतीचा सर्वांगीण विकास व्हावा यासाठी खेड्यातील कामगारांना रोजगार, कापूस आणि निर्यात, कुक्कुटपालन, खेड्यात उद्योग, शेतीला मत्स्यव्यवसाय व दुग्धव्यवसाय या सुविधा पुरवल्या पाहिजेत तरच सर्वांगीण विकास होईल या विचारांमुळेच महाराष्ट्रातील शेतीचा उत्पादनात वाढ यशवंतरावांच्या विचारांमुळे शक्य झाली.

सारांश :

जमीन सुधारणा करण्यासाठी त्यांनी मांडलेली कृषी-औद्योगिक समाजरचनेची संकल्पना अतिशय मोलाची ठरली. शेतीचा विकास करण्यासाठी पाणी, बीज, कर्ज, अतिशय महत्त्वाचे आहेत. जमीन कसणाऱ्यांना कसेल त्याची जमीन देऊन मालकी हक्क प्राप्त करून जमिनीचे वाटप योग्य प्रमाणात व्हावे यासाठी कुळकायदा कमाल जमीन धारणा कायदा, शेतीचे आधुनिकीकरण, त्याचा परिणाम, खेडे व शहर यातील अंतर कमी होईल. उद्योगांचा खेड्यात विकास व्हावा, सहकार क्षेत्रात विकास व्हावा व याचा फायदा शेतकऱ्यांना व्हावा हे अतिशय मोलाचे समाजवादी समाजरचना निर्माण करण्यासाठीचे विचार मांडलेले आहेत. [illegible] आणि शेती विकास याचे संपूर्ण [illegible] गरीब व श्रीमंतांना दोघांनाही मिळावे व त्याचा फायदा [illegible] प्रगती करण्यासाठी व्हावा असे मत मांडले म्हणून महाराष्ट्र भारतात अग्रेसर राज्य राहण्याचे एकमेव कारण हे म्हणजे महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री म्हणून यशवंतराव चव्हाण साहेबांनी केलेल्या कामगिरीकडे जाते. [illegible] पुढाऱ्यांनी किंवा राजकारणी मंडळींनी शेतकऱ्यांना कर्जमुक्त करून का त्यांच्या आत्महत्या थांबवता आल्या तर ती सर्वात मोठी श्रद्धांजली यशवंतराव चव्हाण साहेबांना होईल.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

संदर्भ सूची :-

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. [illegible]

५. [illegible]

६. [illegible]

७. [illegible]

८. [illegible]

ISSN 22[illegible]

Volume - 09, Issue - 02, July - December, 20[illegible]

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary National Research Journal of Social Sciences & Humanities

National Journal on...

SOCIAL ISSUES AND PROBLEMS

Gondia Education Society's

SETH NARSINGDAS MOR ARTS, COMMERCE & SMT. GODAVARI DEVI SARAF SCIENCE COLLEGE

TUMSAR, DIST. BHANDARA - 441912

PRINCIPAL
Swami Vive[illegible] Mahavidyalaya

ISSN 2278-3199

Volume -09, Issue -02, July -December, 2020.

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary National Research Journal of Social Sciences & Humanities

National Journal on.......

SOCIAL ISSUES AND PROBLEMS

Chief Editor

Dr. C. B. Masram

Principal

S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College,

Tumsar Dist. Bhandara.

Editor

Dr. Rahul Bhagat

Professor & Head, Department of Sociology,

S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College,

Tumsar Dist. Bhandara - 441912

Published By

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY

S. N. MOR ART, COMMERCE & SMT. G. D. SARAF SCIENCE COLLEGE,

TUMSAR, DIST. BHANDARA - 441912.

Email-principalsnmorcollege@rediffmail.com / rjbhagat1968@yahoo.co.in

Website - www.snmorcollege.org.in

Phone No. - 07183-233300 / 07183-233301 Mobile - 09422113067 / 09420359657

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

'Social Issues and Problems'

- CONTENTS -

	Title of Paper	Author Name	Page
1.	Annihilation of caste, Modernity, and changing trend	Varsha Hasfad	...1
2.	The Mill on the Floss: An Autobiographical Novel	Ramesh[illegible] Gaikwad	...5
3.	Mistry's Women: Microcosm of Indian Society	[illegible]	...8
4.	Customer Problems in Insurance Scheme and Companies	Amritanjali Singh	...12
5.	The Problems of Water Management and Possible Strategies	Siddharth [illegible]	...14
6.	Mass Communication in Ancient and Medieval India	[illegible]	...16
7.	Covid-19 and Social Development	[illegible]	...18
8.	Academic Content on Internet and Access to it	Hemant Kulkarni	...22
9.	Protection of Women Against Domestic Violence	M. [illegible]	...28
10.	Anti-Human Trafficking Laws in India: Challenges and Strategies	S. Vijay Kumar	...33
11.	Awareness and Level of Utilization of Agritourism Center's y	Prachiti Bagalay	...35
12.	Cashless Economy - Challenges and Opportunities in India e	P. W. Bansode	...38
13.	Covid-19, Muslim Community and Indian Media	Shiraj Sultan	...40
14.	Use of ICT in the Teaching of English Language at UG Level	Ganesh M. Patode	...44
15.	Amendment and Protection of Children from Sexual Offences	Devendra [illegible]	...47
16.	The Contribution of "Swadhar" in Childhood Development	Vidya Awachat	...51
17.	Hegemonic Masculinity in Indian Media and Films	Amol M. Kamble	...54
18.	Domestic Violence against Women	Vinayak Sakharkar	...56
19.	Reading Revolution, Vision & Mission	Prashant S. Pagade	...60
20.	[illegible]	[illegible]	...62
21.	[illegible]	[illegible]	...66
22.	[illegible]	[illegible]	...69
23.	[illegible]	[illegible]	...71
24.	[illegible]	[illegible]	...73
25.	[illegible] – २०२०	[illegible]	...78
26.	[illegible]	[illegible]	...80
27.	[illegible]	[illegible]	...82
28.	कोविड-१९, [illegible]	[illegible]	...84
29.	[illegible]	[illegible]	...89
30.	[illegible]	[illegible]	...92
31.	[illegible]	[illegible]	...95
32.	[illegible]	[illegible]	...96
33.	[illegible]	[illegible]	...99
34.	[illegible]	[illegible]	...103
35.	[illegible]	[illegible]	...106
36.	[illegible]	[illegible]	...108
37.	[illegible]	[illegible]	...112

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

Volume - 09, Issue - 02, July - December, 2020 ISSN

अण्णाभाऊ साठेंना अभिप्रेत असलेले समाजपरिवर्तन आणि सद्यकालीन वास्तव

प्रा. डॉ. [illegible], प्रमुख, समाजशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुक्रमाबाद ता. मुखेड जि. नांदेड

प्रस्तावना– मराठी साहित्यातील एक [illegible] साहित्यिक म्हणून अण्णाभाऊंची ओळख आहे. [illegible] अण्णाभाऊ साठे [illegible] शोषित, पीडित व कष्टकऱ्यांच्या [illegible] साहित्यातून [illegible] अण्णाभाऊंच्या [illegible] 'अण्णाभाऊंचे साहित्य' [illegible] साहित्य [illegible] अण्णाभाऊंचे साहित्य [illegible] समाजव्यवस्थेचे [illegible] साहित्यातून [illegible] साहित्यिक म्हणून अण्णाभाऊ साठे यांच्याकडे पाहिले जाते. या देशातील जातिव्यवस्थेमुळे व विषम समाजरचनेमुळे अण्णाभाऊंना अनेक अडचणींना तोंड द्यावे लागले. [illegible] त्यांच्या आयुष्यात अशा अडचणींना सामोरे जावे लागले आहे. सामाजिक [illegible] न्यायासाठी व मानवमुक्तीच्या हक्कासाठी मानवतावादी विचारांची मांडणी अण्णाभाऊंनी साहित्यात केली. विषमतावादी समाजव्यवस्थेला छेद देणाऱ्या साहित्याची निर्मिती त्यांनी केलेली दिसून येते.

महाराष्ट्रातील मांग जातीत १ ऑगस्ट १९२० रोजी अण्णाभाऊंचा जन्म झाला. भारतात त्यांचे 'जन्मशताब्दी वर्ष' साजरे केले जात आहे. यांच्या जन्मशताब्दीनिमित्त अण्णाभाऊंना आपण खऱ्या अर्थाने समजू शकलो आहोत काय? अण्णाभाऊंना अभिप्रेत असलेला समाज निर्माण करण्यात आपण यशस्वी झालो आहोत काय? अण्णाभाऊंनी आपल्या साहित्यातून मांडलेला सत्यशोधकीय विचार समजून समाजाला सांगता येईल काय? महाराष्ट्रातील विविध संघटनांची वाटचाल कोणत्या दिशेने होत आहे आणि नव्याने कोणत्या दिशेने या चळवळीला जाण्याची गरज आहे. समाजातील लोकांकडून अण्णाभाऊ उपेक्षित का राहिले? आणि सद्यस्थितीतील समाजवास्तव समजून घेताना त्यांना अभिप्रेत असलेल्या समाजपरिवर्तनाची संकल्पना तपासून पाहताना अण्णाभाऊंनी अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करून [illegible] झोपडीत राहून विपुल आणि दर्जेदार लेखन केले. परंतु येथील प्रस्थापित जातीय विषमतेने ग्रासलेल्या भारतीय समाजात वाङ्मयीन कार्याचे मूल्यमापन त्यांच्या हयातीत किंवा त्यानंतरही का होऊ शकला नाही. अण्णाभाऊंचे साहित्य [illegible] भाषांत भाषांतरित होऊन त्यावर अनेक प्रकारचे लिखाण झाले परंतु त्यांच्या वाट्याला मात्र उपेक्षितांचे, दारिद्र्याचे, हालअपेष्टांचे जीवन आले. त्यामुळे त्यांना अभिप्रेत असलेले समाज परिवर्तन आणि सद्यस्थितीतील समाजवास्तव जाणून घेण्याची गरज आहे. याच भूमिकेतून प्रस्तुत लेखाची मांडणी करण्यात आली आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे– १) अण्णाभाऊंच्या साहित्यातील [illegible] २) [illegible] ३) अण्णाभाऊंना अभिप्रेत असलेले [illegible] सद्यस्थितीतील [illegible] समाज परिवर्तन आणि सद्यस्थितीतील समाज वास्तव [illegible]

गृहितकृत्ये– १) अण्णाभाऊंच्या [illegible] २) [illegible] ३) महाराष्ट्रातील [illegible] सत्यशोधक समाज [illegible] दिसून येत आहे.

सत्यशोधक अण्णा भाऊ साठे– [illegible] अण्णाभाऊंच्या साहित्यात [illegible] पुढे, [illegible] आर्थिकदृष्ट्या [illegible] अण्णाभाऊंनी निर्माण [illegible] होते. हे त्यांच्या साहित्यातून [illegible] अपेक्षित होते. समतावादी समाजव्यवस्था निर्माण व्हावी असे सुंदर स्वप्न घेऊन अण्णाभाऊ जगत होते परंतु या देशात [illegible] जातीयता अधिक महत्त्व दिल्याने पुढारलेल्या [illegible] गुलामगिरीतून [illegible] अण्णाभाऊ साठे यांनी [illegible] समतावादी समाजव्यवस्थेचा प्रचार केले. तर बाबासाहेब आंबेडकरांनी भारतीय राज्यघटनेत [illegible] समाजाच्या कल्याणकारी कायदे करून सामाजिक प्रतिष्ठान दिले. तर मराठी साहित्यातून अण्णाभाऊंनी प्रेरणा देऊन सामाजिक व आर्थिक विषमतेचा जो [illegible] प्रकाश व देऊन [illegible] उभा करणारे अनेक साहित्यिक मोठ्या प्रमाणात निर्माण होऊ लागले. क्रांतिकारी प्रवाहाला [illegible] शोषित, पिडीत, वंचित व कष्टकरी [illegible] समाजाचे वास्तव [illegible] समाजासमोर आणण्याचे मोठे कार्य अण्णाभाऊंच्या साहित्याने केले. त्यामुळे सत्यशोधक अण्णाभाऊंच्या परिवर्तनाचा वैचारिक वारसा समाजात [illegible] जावा लागेल तरच त्यांना अभिप्रेत असलेले समाज परिवर्तन होऊ शकेल.

अण्णाभाऊ जीवनविषयक दृष्टी व्यापक व मानवतावादी मूल्यनिष्ठ स्वरूपाची होती. त्यांच्या जीवनविषयक दृष्टिकोनातून त्यांचा वाङ्मयीन दृष्टिकोन तयार झाला. औपचारिक शिक्षणाची संधी न मिळताही साहित्याच्या क्षेत्रात अण्णाभाऊंनी केलेली अतुलनीय कामगिरी [illegible] थक्क करणारी आहे. त्यांच्या जीवनाकडे मराठी साहित्यविश्वाने दुर्लक्ष केले नाही अशा माणसाच्या जीवन संघर्षाला महत्त्वाचे स्थान देऊन त्याच्या आशा पल्लवित करण्याचे मोठे कार्य अण्णाभाऊंच्या साहित्याने केल्याचे दिसून येते. ज्या समाजव्यवस्थेने [illegible], अभागी व दलितांची दैन्यावस्था [illegible] केले त्याचे मूळ जातिव्यवस्थेत असून त्यांना समाजाची वागणूक देण्याची

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed [illegible]

[illegible]

संदर्भ सूची

[illegible]

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

प्रवासी मजुरांच्या समस्या

प्रा. चंदू पाटेकर, समाजशास्त्र विभाग, [illegible]

प्रस्तावना:- इंग्रज शासन काळापासून भारतीय ग्रामीण जीवनात अनेक बदल घडून आले. हे बदल घडून येण्यास नागरीकरण औद्योगिकरण, दळणवळण साधने, संपर्कसाधने, शिक्षण इ. ची भूमिका महत्त्वपूर्ण राहिलेली आहे. ग्रामीण व नागरी समाजातील परिवर्तन हे एकतर्फी घडते कारण इंग्रजांनी अधिकांश उद्योग नगरात स्थापन केले. या सर्व कारणांमुळे नगरांची सतत वाढ होत गेली. नगरातील शिक्षण, रोजगार व अन्य सोयी सुविधांमुळे ग्रामीण लोकांना आपल्याकडे आकर्षित करण्यास प्रारंभ केला.

गावाच्या लोकसंख्येत जितकी वाढ होत जाते तितकी त्या प्रमाणात होत नसते. गावात राहणाऱ्या अनेक कुटुंबांमुळे प्रतिकूल नैसर्गिक परिस्थिती आणि नैसर्गिक संकटामुळे शेती उत्पन्नातून आपली उपजीविका भागविण्यात असमर्थ बनते. त्यांच्यासमोर एकच पर्याय उरला होता. ते अशा गावांकडे स्थलांतरीत होत होते जेथे अधिक सुख सुविधा आहे किंवा नगराकडे स्थलांतर करीत होते. हेच कारण आहे की, भारतातील हजारो लोक आपले गाव सोडून दुसऱ्या राज्यात जातात. तेथील रोजगार संपल्यास परत दुसऱ्या ठिकाणी जाऊन दुसरा रोजगार शोधतात. अशाप्रकारे प्रवासी मजुर सतत फिरत असतात.

प्रवासी मजुरांची कारणे –

लोकसंख्येत वाढ – भारतात ग्रामीण लोकसंख्येमध्ये झपाट्याने वाढ होत आहे. लोकसंख्येमध्ये होणाऱ्या वाढीप्रमाणे कृषी उत्पादन होत नाही. त्यामुळे गावामध्ये आपला उदरनिर्वाह भागविण्यासाठी योग्य कामसुध्दा लोकांना मिळत नाही. अशा परीस्थीतीत लोक अधिक साधनसंपत्ती उपलब्ध असलेल्या व रोजगाराची संधी असलेल्या क्षेत्राकडे स्थलांतर करतात.

नैसर्गिक संकटे – भारतीय शेती ही निसर्गावर अवलंबुन आहे. पाऊस चांगला झाला तर पीक चांगले येते नाहीतर पीक येत नाही. वेळोवेळी येणारी नैसर्गिक संकटे जसे दुष्काळ, महापुर, भुकंप, महामारी यामुळे ग्रामीण जनजीवन विस्कळीत होते. ग्रामीण रोजगारांवर कुप्रभाव पडतो. त्यामुळे लोक रोजगारापासुन वंचित होऊन उपजिवीकेचा प्रश्न त्यांना संपन्न क्षेत्राकडे स्थलांतरीत करण्यास भाग पाडतो.

दारिद्र्य आणि बेरोजगारी – वाढती लोकसंख्या आणि वेळोवेळी होणाऱ्या नैसर्गिक संकटामुळे ग्रामीण भारतात गरीबी आणि बेरोजगारी सतत वाढत आहे म्हणुन असे व्यक्ती स्वत: किंवा आपल्या कुटुंबासोबत काम करण्यासाठी औद्योगीक वसाहतीकडे स्थलांतर करतात. काही वेळेस तर अनेक गावाचे लोक सामुहीक रूपाने औद्योगीक नगराकडे स्थलांतर करतात.

शोषण – ग्रामीण समाजात उच्च जातीकडुन सतत कनिष्ठ जातीचे शोषण होते. तसेच सावकार व जमीदार वर्गसुध्दा गरीब मजुरांचे शोषण करतात. यांच्याकडुन ते स्थलांतर करतात.

औद्योगीक क्षेत्राचा विकास – भारतामध्ये औद्योगीक क्षेत्राचा झपाट्याने विकास होत आहे. अधिकांश उद्योग हे दळणवळणाच्या, संपर्क साधनांची उपलब्धता असलेल्या ठिकाणी उभारले जातात. नवीन कच्चा माल, तिन यांची उपलब्धता असणेसुध्दा त्यासाठी आवश्यक असते. औद्योगीक क्षेत्र ग्रामीण भागातील लोकांना आकर्षित करतात.

नगरात असलेली रोजगारीची उपलब्धता – उद्योगधंदे आणि व्यापार क्षेत्राचा विकास नगरात मोठ्या प्रमाणात झाल्यामुळे अधिक रोजगार उपलब्ध होतात. हा रोजगार ग्रामीण लोकांना आकर्षित करते व स्थलांतर करण्यास प्रेरणा देते.

असमान व अनियंत्रीत विकास – भारतामध्ये प्रत्येक राज्याचा किंवा नगरांचा विकास हा समान झालेला नाही काही राज्यात मोठ्या प्रमाणात औद्योगीक व उद्योगधंदे विकास झालेला असतो तर काही राज्य हे मागास असतात. त्यामुळे अशा राज्यातील लोक विकसीत राज्यात रोजगार मिळविण्यासाठी स्थलांतर करतात.

प्रवासी मजुरांचा समस्या –

निरक्षरता – बहुतांश प्रवासी मजुर स्वत: तर अशिक्षीत असतात परंतु आपल्या अज्ञानतेमुळे आपल्या मुलांचा शिक्षणाकडेही विशेष लक्ष देत नाही. कमी वयात त्यांना बालकामगाराच्या रूपाने छोटा मोठ्या उद्योगात लावतात कारण ते आपल्या कुटुंबासाठी काही हातभार लावु शकेल अशा प्रकारे प्रवासी मजुरातील निरक्षरतेची समस्या पिढी दर पिढी चालुच राहते.

घराची समस्या – प्रवासी मजुरांना छोटे मोठे काम तर मीळते परंतु आपल्या जवळील मर्यादीत साधनांमुळे ते निवाऱ्याची व्यवस्था करू शकत नाही. जे स्थलांतरीत मजुर नगरात स्थलांतरीत होतात ते उच्च दर्जाचा मकानात राहु शकत नाही. अशा स्थीतीत गलीच्छ वस्तीत राहण्याशिवाय त्यांच्या पुढे पर्याय राहत नाही.

कुपोषणाची समस्या – आर्थिक स्थिती चांगली नसल्यामुळे प्रवासी मजुरांचा आहार पौष्टीक असत नाही. काही वेळेस अल्पोपहारद्वारे त्यांना राहावे लागते. त्यामुळे प्रवासी मजुरातील मुलांचा जन्माच्या वेळेस आई आणि मुलांचा मृत्युची शक्यता असते.

शोषण – निरक्षरता, अज्ञान आणि मागासलेपणामुळे मालक आणि गावातील श्रीमंत शेतकरी प्रवासी मजुरांकडुन जास्त काम करून घेतात व वेतन मात्र कमी देवुन त्यांचा अज्ञानाचा फायदा घेतात.

यौन शोषण – प्रवासी मजुरांचे यौन शोषण प्रमुख घोर आहे प्रवासी मजुरांचे अध्ययन करणाऱ्या विद्वानांनी विटभट्टी किंवा घरगुती नोकरी करणाऱ्या महीलांवर होणाऱ्या शोषणाकडे आपले लक्ष वेधले आहे. हे यौन शोषण आर्थिक प्रलोभन आणि मालकांचा जबरदस्तीचे शिकार बनतात.

नशावृत्ती – प्रवासी मजुर दिर्घकाळ श्रम करतात त्यांना विडी पिणे, गांजा पिणे, दारू पिणे इ. सवयी जडतात. अशिक्षीत व अज्ञानी असल्यामुळे ते विचार करतात की यांचा वापर थकवा दूर करण्यासाठी आहे परंतु वास्तविकता ही आहे की, त्यांचा सेवनामुळे

ISSN 2248-9145

समाजशास्त्र संशोधन पत्रिका

मराठी समाजशास्त्र परिषद

वर्ष ६८ वे | अंक ९५ वा | डिसेंबर, २०२०

मराठी समाजशास्त्र परिषदेचे मुखपत्र

ISSN 2230-77[illegible]

समाजशास्त्र संशोधन पत्रिका

मराठी समाजशास्त्र परिषदेचे मुखपत्र

वर्ष [illegible] अंक [illegible] डिसेंबर [illegible]

संपादक :- डॉ. नारायण कांबळे

कार्यकारी संपादक :- डॉ. राहुल भगत

सहायक संपादक :- प्रा. प्रियदर्शन भवरे

संपादक समिती सदस्य :-

डॉ. वेदप्रकाश मल्लवाडे, डॉ. बळीराम पवार, डॉ. प्रदीप मलगिरे,
प्रा. प्रशांत सोनवणे, डॉ. स्निग्धा कांबळे, डॉ. शिवाजी ढकारे
डॉ. संजय कोळेकर, प्रा. भगवान शिंदे, डॉ. श्रीराम खाडे,
डॉ. प्रवीण घोडेस्वार, डॉ. हिरालाल भोसले.

संपादकीय सल्लागार मंडळ :-

डॉ. उत्तम भोईटे, डॉ. पी. जी. जोगदंड,
डॉ. प्रदीप आगलावे, डॉ. स्मिता अवचार,
डॉ. सुरेश वाघमारे, डॉ. श्रुती तांबे, डॉ. जगन कराडे.

संपर्क पत्ता :-

अध्यक्ष, मराठी समाजशास्त्र परिषद,
द्वारा : पदवी व पदव्युत्तर समाजशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
शिरूर ताजबंद ता. अहमदपूर जि. लातूर ४१३५१४
website :www.mspsonline.com E-mail : marathisocio@gmail.com

टंकलेखन व मांडणी : श्री. पवन मजलवार, नागपूर
मुद्रीत शोधक : डॉ. शिवाजी ढकारे, डॉ. संजय कोळेकर

सूचना : या अंकातील लेखकांनी व्यक्त केलेली मते ही त्या त्या लेखकांची आहेत. या मतांशी मराठी समाजशास्त्र परिषद अथवा संपादक मंडळ तसेच प्रकाशक, मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

मराठी समाजशास्त्र परिषदेच्या आजीव सदस्यांना अंक विनामूल्य.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	संशोधन निबंध	लेखक	पृ. क्र.
१.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२.	[illegible] .... [illegible]	[illegible]	[illegible]
१३.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४.	लिंगभाव [illegible] व स्त्री पुरुष समानता	[illegible] पाटील	[illegible]
१५.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१६.	कोरोनाचा सामाजिक जीवनावर पडलेला प्रभाव	[illegible]	[illegible]
१७.	[illegible] सांस्कृतिक [illegible]	[illegible]	[illegible]
१८.	[illegible] महिला [illegible] समस्या	[illegible]	[illegible]
१९.	[illegible] सामाजिक समस्या	[illegible]	[illegible]
२०.	नागरी कुटुंबाचे बदलते स्वरूप	[illegible]	[illegible]
२१.	[illegible]: एक ज्वलंत सामाजिक समस्या	[illegible]	[illegible]
२२.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४.	कोरोना महामारीचा भारतीय समाजावरील परिणाम	[illegible]	[illegible]
२५.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६.	[illegible] आणि [illegible]: एक आकलन	[illegible]	[illegible]
२७.	महिलांचे आरोग्य आणि [illegible]	[illegible]	[illegible]
२८.	स्त्री पुरुष समानता: काळाची गरज	सुरेखा [illegible]	[illegible]
२९.	कोरोनाचा उच्च शिक्षणावर झालेला परिणाम	[illegible]	[illegible]

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist. Nanded

मराठवाड्यातील अनुसूचित जातीच्या सामाजिक विकासात आरक्षण धोरणाची भूमिका

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

बहिष्कृत (समाजबहिष्कृत केलेले) असे म्हटले आहे. तर म.गांधी 'हरिजन' (ईश्वराचे पुत्र) हा शब्दप्रयोग करतात. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी 'बहिष्कृत जाती' म्हटले आहे तर वि.रा. शिंदे यांनी 'दलित' असा निर्देश केला आहे. स्वतंत्र भारताच्या राज्यघटनेत अनुच्छेद ३४१ नुसार अनुसूचित जाती (Scheduled Castes)ही संज्ञा आहे. अशा विकासाच्या प्रवाहापासून दूर राहिलेल्या अनुसूचित जातींना आरक्षण धोरणाची आवश्यकता होती त्यासाठी आरक्षण संकल्पना लक्षात घेणे अनिवार्य ठरते.

आरक्षण संकल्पना: भारतात सामाजिक व आर्थिक विषमता मोठ्या प्रमाणात आढळते. विषमतावादी समाजरचनेमुळे विकासात अनेक प्रकारचे अडथळे निर्माण होताना दिसून येतात. जातीव्यवस्थेत उच्च व निम्न प्रकारचा स्तर असल्यामुळे विकासाच्या प्रवाहात पुढे आहेत. तर अनुसूचित जाती त्यापासून दूर आहेत. त्यांना विकासाची संधी देण्याची गरज होती व आहे. त्यासाठी भारतात आरक्षण धोरण राबविले आहे.

आरक्षण ही विषम समाजव्यवस्थेतील गरज आहे. सामाजिक न्याय व समता प्रस्थापित करणे ही मानवतेची प्रेरणा त्यामागे आहे. आरक्षण धोरण सामाजिक न्यायाला गती देणारी, समतेचे राज्य निर्माण करणारी एक व्यवस्था म्हणून अनुसूचित जातींच्या सामाजिक विकासात आरक्षण धोरणाची भूमिका महत्वाची राहिली आहे. आरक्षण ही सामाजिक न्यायाची मुख्य गरज आहे. सामाजिक परिवर्तनाचे महत्वाचे साधन म्हणून आरक्षण धोरणाची भूमिका सार्थ ठरते. वास्तविक भारतातील सामाजिक परिस्थिती समानतेवर आधारलेली नाही. जाती-पोटजातीत विखुरलेली आहे. 'आरक्षण' शब्द 'समान वाटप' किंवा 'सर्वांना न्याय' हा चुकीचा अर्थ घेतला जाऊ लागला म्हणून इतरांप्रमाणे आम्हालाही आरक्षण मिळावे अशी मागणी आज पुढे येताना दिसते. परंतु आरक्षणाचा अर्थ सर्वांना समान वाटप असा होत नसून समाजातील दुर्बल घटकांना समान पातळीवर आणण्यासाठी त्यांना दिलेली विशेष संधी हा त्याचा अर्थ आहे. भारतीय समाजाच्या संदर्भात सामाजिक दृष्टिकोनातून मागास शोषित, दुर्लक्षित लोकांना दिलेली विशेष सवलत होय. त्यात अनुसूचित जातीचा समावेश होतो.

भारतीय संविधानात आरक्षणाचा उल्लेख 'प्रतिनिधित्व' असा आहे. या माध्यमातून मिळालेल्या प्रतिनिधित्वाच्या बळावर १९२८ च्या सायमन कमिशन अहवालात आरक्षणाची तरतूद आहे. १९४३ मध्ये डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी सादर केलेल्या शासनाने जमातीकरिता ८.३३ टक्के जागा आरक्षित ठेवल्या. परंतु आरक्षणाचे खरे जनक महात्मा फुलेच ठरतात. राजर्षी शाहू महाराजांनी २६ जुलै १९०२ मध्ये कोल्हापूर संस्थानात दलितांना ५० टक्के आरक्षण लागू केले ही आरक्षणाची पार्श्वभूमी स्वातंत्र्यपूर्व काळातील आहे. स्वातंत्र्यानंतर मात्र डॉ.आंबेडकरांनी भारतीय राज्यघटनेत अनुसूचित जातीसाठी घटनात्मक आणि आरक्षणात्मक तरतूदी लागू करून अनुसूचित जातीच्या विकासाला बळकटी प्राप्त करून दिली व घटनेत आरक्षण धोरण लागू केले. म्हणून आरक्षण धोरणात म.फुले, राजर्षी शाहू महाराज, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान अधिक महत्वपूर्ण असल्याचे दिसून येते.

महात्मा जोतीराव फुले यांचे योगदान: ब्रिटिशपूर्व काळात शिक्षण ही फक्त सवर्णांचीच मक्तेदारी होती. ब्रिटिश भारतात आल्यावर ते सर्वांसाठी खुले झाले. परंतु उच्च वर्णाचा त्यास विरोध होता. ही बाब लक्षात आल्यानंतर म.फुलेंनी सवर्णांच्या विरोधात रणशिंग फुंकले. भारतात जातीव्यवस्थेवर आधारित समाज रचना असल्यामुळे दलितांना शिक्षण घेण्याचा अधिकार नाकारला गेला. शूद्र-अतिशूद्रांना एकत्र करून सार्वत्रिक शिक्षणाची मागणी फुलेंनी केली. भारतीय समाजव्यवस्थेचा चिकित्सक अभ्यास करून म.फुलेंनी क्रांतिकारी विचार मांडले. त्यांच्या क्रांतिकारी विचारातूनच अस्पृश्यता निर्मूलन, स्त्रीदास्य, स्त्री शिक्षण, अस्पृश्यांना शिक्षण, सांस्कृतिक विषमतेचा अंत, आर्थिक शोषण मुक्ती, समाजशिक्षण बहुजन जातींना आरक्षित आरक्षणाची मागणी केली. महात्मा फुलेंचे हे कार्य अवलोकित आहे नव्हे तो त्यांच्या विचारांचा क्रांतिकारी जाहीरनामाच होय. शूद्र आणि अतिशूद्र गुलामीचे जीवन जगत आहेत हे ओळखून त्यांनी या सर्वांचे कारण अविद्येला मानले आहे. 'शेतकऱ्यांचा असूड' या ग्रंथात फुले म्हणतात–

> विद्येविना मती गेली, मती विना नीती गेली
> नीतीविना गती गेली, गतीविना वित्त गेले
> इतके अनर्थ एका अविद्येने केले'

या विचारात त्यांच्या शैक्षणिक विचाराचे सार आहे. हजारो वर्षांपासून सामाजिक, आर्थिक व राजकीयदृष्ट्या अस्पृश्य राहिलेल्या बहुजन समाजाला जातीनिहाय आरक्षण दिल्यास बहुजन हीत साधले जाईल हा विचार फुलेंनी मांडला.

राजर्षी शाहू महाराजांचे योगदान: २ एप्रिल १८९४ रोजी महाराजांचा राज्याभिषेक झाला. त्यावेळी ते म्हणतात, 'आमची प्रजा सदासर्वदा सुखी व संतुष्ट असावी, दिवसेंदिवस तिचे कल्याण वृद्धीगत व्हावे. आमच्या राज्याचा सर्व बाजूने अभ्युदय व्हावा अशी आमची उत्कट इच्छा आहे.' हा उद्देश सफल करण्यासाठी प्रथम संस्थानाचे सामाजिक अवलोकन केले. तेव्हा त्यांना असे आढळले की, संस्थानाची सर्व लाभाच्या जागा उच्च वर्णीयांच्या हाती होत्या. त्यामुळे समानतेसाठी अस्पृश्यांना समान संधी देणे आवश्यक आहे. त्यासाठीच संधी देण्याचे धोरण अवलंबून २६ जुलै १९०२ रोजी एक अधिसूचना जारी करून कोल्हापूर संस्थानातील सरकारी नोकऱ्यांमध्ये ५० टक्के जागा मागासवर्गीयांसाठी राखीव ठेवल्या जाणार असल्याचे जाहीर केले. हा अभूतपूर्व जाहीरनामा म्हणजेच शाहू महाराजांचे आरक्षण धोरण होय. हा जाहीरनामा शिक्षण, नोकरी याबाबत कमालीचे मागासलेपण असलेल्या बहुजन समाजाला संजीवनी देणारा ठरला.

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान: डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर हे विसाव्या शतकातील मूलगामी समकृती स्पर्धेचे महानायक होते. समता, स्वातंत्र्य,बंधुता आणि सामाजिक न्याय ही समाजातील व्यक्तींच्या संबंधाची किंवा समाजव्यवस्थेची मांडणी यांची चिकित्सा केली. स्वातंत्र्योत्तर काळात संविधानाच्या माध्यमातून मागासवर्गीयांच्या सामाजिक विकासाकरिता क्रांतिकारी निर्णय घेतले. उपेक्षित, दुर्लक्षित राहिलेल्या अनुसूचित जातींना १९५० ला संविधानिक दर्जा प्राप्त करून देऊन राज्यघटनेच्या ३४२ च्या अनुसूचीमध्ये समाविष्ट केले आणि ३४०, ३४१ च्या कलमान्वये राखीव जागांची तरतूद केली.

अल्पसंख्यांक अस्पृश्य जातींना घटनात्मक संरक्षण मिळण्याच्या दृष्टीने डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी तीन पातळीवरील आरक्षणाची मागणी केली. १) कायदेमंडळातील आरक्षण २) कार्यकारी मंडळातील प्रतिनिधित्व ३) सरकारी नोकऱ्यांमध्ये प्रतिनिधित्व. विषमतेने ग्रस्त असलेल्या समाजात समता प्रस्थापित करण्यासाठी प्रथमतः संधी वाटपात विषमता निर्माण केली पाहिजे असे त्यांचे मत होते. कारण समान माणसामध्येच फक्त समानता असू शकते. असमानांना समान मानणे म्हणजे असमानता टिकविणे होय म्हणून बहुसंख्य समाजातील प्रतिनिधीत्व देताना लोकसंख्येच्या प्रमाणात तितके मिळण्याच्या आधारेच ज्या जागा निश्चितपणे भरून घेण्यात येतील त्या अल्पसंख्याकांमध्ये त्यांचे महत्व आर्थिक परिस्थिती व

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Dr. Balaji P. Kharabe. 2020-2021

साहित्य, कला आणि लोकसंस्कृतीला वाहिलेले त्रैमासिक

लिहूण

वर्ष १० वे अंक - ४ था जानेवारी ते मार्च - २०२०

भाग - ३

UGC CARE Listed Journal
ISSN 2231-573X

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

❖ संपादक ❖

डॉ. शिवाजी हुसे
मराठी विभाग प्रमुख
शिवाजी महाविद्यालय, कन्नड, जि. औरंगाबाद.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta Mukhed Dist Nanded

अ.क्र.	विषय आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	[illegible] डॉ. [illegible]	[illegible]
१४	महाराष्ट्रातील सूफी संतांचे मराठी साहित्य : आकलन आणि आस्वाद [illegible]	[illegible]
१५	महात्मा बसवेश्वर यांच्या लिंगायत धर्माचे तत्त्वज्ञान व आचारसंहिता प्रा. डॉ. [illegible]	[illegible]
१६	महात्मा बसवेश्वरांचे धार्मिक सुधारणा संदर्भातील वचन साहित्य प्रा. डॉ. [illegible]	[illegible]
१७	अपरिचित संत साहित्याचे संकलन, संपादन आणि संशोधन (अपरिचित [illegible] संत व वारकरी संप्रदायातील संतकवींसाठी केलेले कार्य) डॉ. [illegible]	[illegible]
१८	[illegible] वाङ्मयाचे अध्ययन, अध्यापन आणि संशोधन प्रा. डॉ. विजय पाटील	[illegible]
१९	वचन साहित्यातील म. बसवेश्वरांचे क्रांतिकारी विचार प्रा. डॉ. [illegible]	[illegible]
२०	महानुभाव साहित्य स्वरूप व आशय डॉ. मनोज श्रीमंतराव पाटील	[illegible]
२१	स्त्रियांची सामाजिक स्थिती आणि संत कवयित्रींचे वाङ्मयीन कार्य प्रा. डॉ. राजेंद्र रामकृष्ण सांगळे	[illegible]
२२	संतसाहित्याचे अध्ययन : विशेष संदर्भ (संत रामदास) रंजना दत्तात्रयराव कुलकर्णी	[illegible]
२३	मराठी शाहिरी वाङ्मयातील सांस्कृतिकता प्रा. बादलशाहा हंसाजी चव्हाण	[illegible]
२४	शाहीर अनंत फंदी आणि परशराम यांच्या लावण्यांतून व्यक्त झालेले भक्ति सौंदर्य - एक अभ्यास सहा.प्रा. संतोष लक्ष्मण [illegible]	[illegible]

PRINCIPAL
Swami Vivekanand [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"देव असे एकची एक
[illegible] अनेक
[illegible]"

[illegible]

समारोप

[illegible]

जे प्रत्येकाला सहज जवळ बाळगता येते. महात्मा बसवेश्वरांच्याही अगोदर इष्टलिंग अस्तित्वात होते असे मानणारा एक वर्ग भारतात आहे. महात्मा बसवेश्वरांचे इष्टलिंग धार्मिक समतेचे क्रांतिकारक साधन आहे. अनुभवमंटपाचे पहिले अध्यक्ष अल्लमप्रभुदेवांनीही त्यांच्या एका वचनातून महात्मा बसवेश्वर इष्टलिंगाचे जनक असल्याचे नोंदविले आहे. म्हणजेच इष्टलिंग ह ज्ञानाचे व आत्मिक समानतेचे, शुद्ध विचार व आचाराचे प्रतीक बनले.

संदर्भग्रंथसूची

१. पुजारी सिद्धराम, 'लिंगायत धर्म : एक आत्मचिंतन', बसव चेतना प्रकाशन मिरज, २००९, पृ.१६.
२. भुसारे सूर्यकांत, 'वीरशैव व इतर धर्म आणि समाज', साधना प्रकाशन, गडहिंग्लज, २००२, पृ.३०.
३. मेनकुदळे अशोक, 'बाराव्या शतकातील आद्य समाजसुधारक महात्मा बसवेश्वर', सुविधा प्रकाशन, सोलापूर, २००३, पृ.८९.
४. दोडमनी शांतिनी, 'महामानव बसवण्णांची समग्र वचनें', बसव समिती बेळगाव, २००९, पृ.७.
५. एकनारे चंद्रकांत, 'क्रांतिकारी विचारक महात्मा बसवेश्वर', मुक्तरंग प्रकाशन, लातूर, २००८, पृ.११६.
६. करजकर श्रीपराव, 'युगप्रवर्तक महात्मा बसवेश्वर' मुक्तरंग प्रकाशन, लातूर, २००६, पृ.१०६.
७. पुंडेवाकर बसवलिंग, 'बसव नैवेद्य', महाराष्ट्र बसव परिषद, हिरेमठ संस्थान, भालकी, २००९, पृ.७१.
८. करजकर विजयकुमार, 'बसवेश्वरी वचन साहित्य', लातूर, २००७, पृ.२०.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

2019 - 2020

ijindex

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

January - 2020
Vol. I No. 13

EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या प्रभावातून निर्माण झालेली

"मरण स्वस्त होत आहे"१८ या कथासंग्रहातील शीर्षककथा 'मरण स्वस्त होत आहे' ही जन्माच्या स्पर्शाचा उपयोग करणारी कथा आहे. कवी आणि कथाकार मित्र साहित्यनिर्मितीत साथ देत नसल्याने घराबाहेर पडतात. एकामागून एक दलितोद्धार मूर्ती नजरेसमोर उभ्या राहतात अशा अनेक व्यक्ती आणि त्यांच्या दुःखमय आयुष्याचे अनुभव त्यांना स्मशानभूमीत प्रत्ययाला येतात. 'मरण स्वस्त होत आहे' ही कथा याच जाणिवेतून साकार होते. जीवन आणि मरण कसे एकत्र नांदते हे बाबूराव बागुलांनी 'मरण स्वस्त होत आहे' या कथेतून साकार केले आहे.

'तहान'१९ ही बागुलांची कथा महानगरातील निराश्रित, बेकार व बेघरांच्या जीवनाशी निगडित आहे. महानगरात कोठेही निवारा नसलेले लोक रात्रीचा आधार घेण्यासाठी एका म्युनिसिपालिटीच्या शाळेत जमतात व अशा हमाल मागणारे लोकांमध्ये कसे स्नेहबंध निर्माण होतात असे अस्वस्थ करणारे जीवन बागुलांनी या कथेतून मांडले आहे.

"सूड"२० बाबूराव बागुलांची 'सूड' ही दीर्घकथा एका भीषण वास्तवाचे दर्शन घडविते. या दीर्घकथेची नायिका जानकी म्हणते, 'या दुःखातून, या देहातून, पापातून आमची कधीच सुटका होणार नाही. मरेपर्यंत आपण अशी भोग भोगीत राहू. अंधारांची वर्मी नजर आपल्याला अशीच नागवी करीत राहील. त्यापेक्षा उलट जीविका संपवून टाकलेले काय वाईट.' हे तिचे दुःख खरे आहे. एक तर स्त्री जातीत जन्म आणि दुसरे म्हणजे दलित जातीची.

बाबूराव बागूल यांच्या कथेवर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा प्रभाव पडलेला आहे या संदर्भात डॉ. जनार्दन वाघमारे म्हणतात, "दलित कथा ही विद्रोहाची भाषा बोलते. शब्दांचा उपयोग ती निखाऱ्यासारखा करते. तिच्यातली दाहकता अगदी असह्य अशी दाहकता आहे. दलित लेखकाचा अनुभव लक्षात घेतल्याशिवाय वाचकाला दलित कथेच्या विद्रोहाचे कारण समजू शकणार नाही. दलित कथा वाचत असताना वाचकांच्या जिभेला व ओठांना तिच्यातील शब्द का पोळतात? याचे उत्तर दलित अनुभवातच दडलेले आहे. दलित कथेचा विद्रोह प्रस्थापित समाजव्यवस्थेविरुद्ध आहे हे उघड आहे. यासाठी बाबूराव बागूल यांची कथा प्रस्थापित समाजाविरुद्ध बंड करण्यासाठी कटिबद्ध आहे."२१

समारोप

अशा प्रकारे बाबूराव बागुलांच्या कथेवर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा प्रभाव पडल्यानुळेच एका विद्रोही स्वरूपाच्या कथानायकाचं खरं रूप त्यांनी आपल्या कथेतून साकार केल्याचे दिसून येते.

संदर्भसूची

१) पै शिरीष, जेव्हा मी जात चोरली होती, अभिनव प्रकाशन, मुंबई, १९८४, प्रस्तावना पृ. ५
२) वानखेडे म. ना., सूड, लोकवाङ्मयगृह प्रकाशन, मुंबई, १९८१, प्रस्तावना, पृ. ३
३) कित्ता, पृ. ७१
४) कित्ता, पृ. ८७
५) वाघमारे जनार्दन,दलित साहित्याची वैचारिक पार्श्वभूमी,स्वरूप प्रकाशन,औरंगाबाद,२०१४, पृ. २५३

डॉ. बालाजी खरावे

मराठी विभागप्रमुख, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय मुखेड, जि. नांदेड

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.

2020 - 2021

डॉ. बालाजी ...

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम

व

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

यांच्या संयुक्त विद्यमाने

एक दिवसीय आंतरविद्याशाखीय राष्ट्रीय परिषद

२७/०२/२०२०

राजर्षी शाहू महाराज, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान

समन्वयक

प्रा. तानाजी बोराडे

डॉ. दयानंद शिंदे

डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे

प्राचार्य

डॉ. श्रीकृष्ण चंदनशिव

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
Swami Vivekanand ... Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

37) महात्मा फुले यांचे मराठी साहित्यातील योगदान
डॉ. सिद्धार्थ आगळे, पुणे ||132

38) महात्मा ज्योतिबा फुले- स्त्रियांचे उद्धारक
प्रा. शुभदा गणपतराव चांदवले, पुणे ||135

39) महात्मा फुले, आंबेडकर यांचे साहित्यातील योगदान
डॉ. सुनील पिंपळे, प्रा. भायगुडे बी. टी., औरंगाबाद ||138

40) शाहू, फुले, आंबेडकर यांचे ऐतिहासिक योगदान
डॉ. घुमरे. एल. बी, बीड ||140

41) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषी विषयक विचार
जनार्दन जानजी देवरे, जळगाव ||143

42) शाहू फुले आंबेडकर यांचे ऐतिहासिक योगदान
प्रा. राहुल सोनवणे, बीड ||145

43) छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज व वंचित घटक
विशाल नामदेव माने, पंढरपूर ||148

44) महात्मा फुले यांचे स्त्री शिक्षणाचे कार्य
प्रा. डॉ. पावडे के. डब्ल्यु., कळंब ||151

45) शाहू, फुले, आंबेडकर यांचे सामाजिक कार्य
शिंदे एल. एस. ||153

46) राजर्षी शाहू महाराज यांचे शिक्षणविषयक विचार
चौधरी प्रदीप विनायक, औरंगाबाद ||157

47) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार
प्रा.डॉ. बालाजी खराबे, नांदेड ||159

48) राजर्षी शाहू, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के आरक्षण विषयक विचार
डॉ. सविता आनंदराव भालेराव, औरंगाबाद ||161

49) महात्मा फुले, शाहू महाराज तथा डॉ. बाबासाहेब अंबेकडकर का समाज सुधार ...
प्रा. डॉ. मांडोत ज्योती पारसमल, भूम ||163

50) डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के आर्थिक विचार
डॉ. प्रा. खरटमोल मदन नामदेव, सोलापुर ||167

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

47

[illegible]

[illegible]

[illegible]

समारोप

[illegible]

संदर्भ

१. [illegible]

२. [illegible]

3. Ambedkar B.R., Annihilation of Caste, Dr.Ambedkar Writings and Speeches, Vol.No.1, Part-I, Education Department, Govt. of Maharashtra, [illegible]

4. Ambedkar B.R., Castes in India, [illegible], Dr.Ambedkar Writings and Speeches, Vol.No.1, Part-I, Education Department, Govt. of Maharashtra, [illegible]

५. [illegible]

६. [illegible]

PRINCIPAL
Swami Vivekanand [illegible] Mahavidyalaya
[illegible] Dist.Nanded

Impact Factor - 6.293

ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

JANUARY - 2020

Executive Editor

Dr. S. M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur,
Dist. Osmanabad (M. S.) India

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Co-Editor

Dr. S. M. Deshmukh

Head, Dept. Marathi

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur, Dist. Osmanabad (M.S.) India

IMPACT FACTOR

SJIF 6.293

For details Visit our website

www.aiirjournal.com

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukhed Ta.Mukhed Dist. Nanded

Sr. No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
144	प्रा. डॉ. [illegible]	[illegible]	[illegible]
145	[illegible]	[illegible]	[illegible]
146	प्रा. [illegible]	[illegible]	[illegible]
147	प्रा. डॉ. [illegible]	[illegible]	[illegible]
148	प्रा. [illegible]	[illegible]	[illegible]
149	[illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
150	डॉ. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
151	प्रा. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
152	प्रा. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
153	प्रा. डॉ. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
154	प्रा. डॉ. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
155	[illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
156	प्रा. डॉ. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
157	प्रा. डॉ. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
158	प्रा. डॉ. [illegible]	अनुवाद [illegible]	[illegible]
159	प्रा. डॉ. [illegible]	प्रसारमाध्यमातील जाहिरातीचे महत्त्व	[illegible]
160	डॉ. [illegible]	जाहिरात क्षेत्र आणि भाषा	[illegible]
161	[illegible]	जाहिरात आणि दूरदर्शन: [illegible]	[illegible]
162	डॉ. [illegible]	जाहिरातीमधील [illegible]	[illegible]
163	प्रा. [illegible] प्राचार्य डॉ. [illegible]	जाहिरात लेखन	[illegible]
164	प्रा.डॉ. शिवाजी तुकाराम पाटील	[illegible] जाहिरात क्षेत्र	[illegible]
165	प्रा. [illegible]	जाहिरात : स्वरूप, [illegible]	[illegible]
166	डॉ. [illegible]	भाषा आणि जाहिरात (दूरदर्शन)	[illegible]
167	डॉ. [illegible]	[illegible] जाहिरात लेखन [illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] "The fascinating pursuit of the interview" [illegible] Hard Talk [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मॅगेझिन"चे प्रमुख जॉर्ज न्यूम्स यांनी मुलाखतींची मालिका आपल्या नियतकालिकातून प्रसिद्ध केली.आज महाराष्ट्रातील भारतीय वृत्तपत्रात 'मुलाखत' हा लेखनप्रकार प्रमुख बनलेला दिसून येतो.

मुलाखतीचे स्वरूप:

सत्य समजण्यासाठी मुलाखतीचा उपयोग होत असतो. 'पेंग्विन' प्रकाशनाने इ.स. १९९३ साली 'इंटरव्ह्यूज' नावाचा मुलाखतीचा ग्रंथ प्रसिद्ध केला. या ग्रंथाचे संपादन इंग्लंड येथील ज्येष्ठ पत्रकार ख्रिस्तोफर सिल्व्हेस्टर यांनी केले आहे.

कोणताही पत्रकार आपण घेत असलेली मुलाखत उत्कृष्ट व्हावी यासाठी धडपडत असतो. म्हणून या तीन अवस्थांत आणून मुलाखत घेण्याचे काम करत असतो. यशस्वी मुलाखतीसाठी उत्तम तयारी व मुलाखत देणाऱ्या व्यक्तिमत्वाचा सखोल अभ्यास मुलाखतकाराला करावा लागतो. अभ्यासपूर्ण आणि रोखठोक स्वरूपात देणाऱ्या विस्तृत मुलाखती हा आता वृत्तपत्रे आणि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमांचा ठळक भाग बनला आहे. अनेक मुलाखती घेणाऱ्या व्यक्तींनाही महत्त्वाचे स्थान असते. आजच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या काळात चांगले मुलाखतकार अतिशय महत्त्वाच्या व्यक्ती बनल्या आहेत. उदा. कुमार केतकर, सुधीर गाडगीळ, नेत्रा दातार या मराठी मुलाखतकारांची नावे महत्त्वाची आहेत. व्यापक स्तरावर रजत शर्मा, राजीव शुक्ला, वीर संघवी, करण थापर, राजदीप सरदेसाई ही नावे समोर आल्याचे दिसून येते. या मुलाखतकर्त्यांनी स्वतःचे स्थान निर्माण केले आहे.

बीबीसी या जगप्रसिद्ध प्रक्षेपण संस्थेने आपल्या 'Hard Talk' या कार्यक्रमातून मुलाखतीच्या विषयाचे वेगळे रूप दाखवून दिले आहे. इंग्लंडमध्ये येणारे जगातील प्रमुख 'Hard Talk' च्या मुलाखत कार्यक्रमातून निमंत्रित केले जातात. उदा. अमिताभ बच्चन, शोभा डे, बेनझीर भुट्टो, माधुरी दीक्षित, कीम फूक इत्यादी. मुलाखतकर्त्यांनी महत्त्वपूर्ण व आगळेवेगळे विषय काळजीपूर्वक निवडायचे असतात. त्याबाबत पूर्वतयारी व काळाचे भान या गोष्टींना महत्त्व असते. वाङ्मयीन व सांस्कृतिक क्षेत्राशी संबंधित महत्त्वपूर्ण व्यक्तींच्या मुलाखती सर्वच माध्यमांत लोकप्रिय झालेला प्रकार आहे.

मुलाखतीचा उद्देश:

यशस्वी व्यक्तींचा जीवनप्रवास, त्यांची दैनंदिनी, काम करण्याची पद्धत, परिश्रम इत्यादी गोष्टी जनमानसांवर परिणाम करीत असतात. अशा मुलाखती समाजाला विचार करायला लावून प्रेरणा देतात. अशा स्वरूपाच्या मुलाखतीचा उद्देश पुढीलप्रमाणे आहे.

१) कामगिरीचे कौतुक करून इतरांना प्रेरणा देणे.
२) विचार, मते आणि प्रतिक्रिया जाणून घेणे.
३) व्यक्तींच्या जीवनावर प्रकाश टाकणे.
४) नवीन माहिती व संशोधन लोकांपर्यंत पोहोचविणे.
५) रहस्य उकलून दाखविणे.

मुलाखतीला सामोरे जाताना घ्यावयाची काळजी:

जागतिकीकरणामुळे मुलाखतीचे आजचे स्वरूप अधिक व्यापक व गतिमान झाले आहे. त्यामुळे मुलाखतीला सामोरे जाताना पुढील गोष्टींची काळजी घ्यावी लागते.

१) मुलाखतीसाठी ठरलेल्या वेळेवर उपस्थित राहावे.
२) आपला पोशाख स्वच्छ व नीटनेटका असावा.
३) मुलाखतीसाठी आवश्यक कागदपत्रे काळजीपूर्वक सोबत घ्यावीत.
४) मन प्रसन्न ठेवावे व सकारात्मक विचार करावा.
५) आपल्या बोलण्यातून मुलाखत घेणाऱ्यांचा आदर करावा.
६) मुलाखतीच्या दालनात परवानगी घेऊनच प्रवेश करावा.
७) विचारलेल्या प्रश्नाकडे नीट लक्ष द्या. उत्तर माहीत नसल्यास 'नाही' असे विनम्रपूर्वक सांगावे.
८) उत्तरे देताना अवघड व कृत्रिम भाषा टाळावी.
९) उत्तरे समर्पक व थोडक्यात द्यावीत.
१०) मुलाखतीच्या शेवटी आभारवाचक शब्दांचा नम्रतापूर्वक वापर करावा.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
...kramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

मुलाखतीचे प्रकार:

मुलाखती या अनेक हेतूने घेतल्या जातात. मुलाखतीचा हेतू व स्वरूप लक्षात घेऊन मुलाखतीचे निरनिराळे प्रकार पडतात.

[illegible]

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. [illegible]

[illegible]

संदर्भ :

१) व्यावहारिक मराठी - [illegible] - प्रा. [illegible], कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगपुरा औरंगाबाद [illegible]
२) [illegible] आणि उपयोजित मराठी लेखन - प्रा. [illegible], कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगपुरा औरंगाबाद [illegible]
३) उपयोजित मराठी (भाग १) - प्रा. [illegible], [illegible] प्रकाशन, लातूर [illegible]
४) साहित्य [illegible] भाग २ - [illegible] कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगपुरा औरंगाबाद - [illegible]
५) उपयोजित मराठी [illegible] स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, [illegible]

Submitparishodh@Gmail.Com

R Parishodh

PARISHODH JOURNAL ~~2019~~ - 2020 - 2021

ISSN NUMBER: 2347-6648

UGC-CARE LIST - GROUP I

OPEN ACCESS JOURNAL

A PEER REVIEWED/ REFERRED JOURNAL

A MONTHLY PUBLISHING JOURNAL

HOME | CALL FOR PAPERS | GUIDELINES | PROPOSAL | ARCHIVES | EDITORIAL BOARD | CONTACT

Volume IX, Issue II, FEBRUARY- 2020

1. A REVIEW ON COMPETITOR PREDICTION OVER BIG DATA THROUGH MACHINE LEARNING
Ganga Patuc; Shri JJT University Rajasthan
Dr.K.E.Balachandrudu; Arjun College of Technology & Sciences Hayathnagar
Page No:1-9
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56784

2. Impact of microfinance on women empowerment in rural areas of R.R. Dist in Telangana State
K.VENKATESHWARLU; Dravidian University, Kuppam, AP
Dr.KANKIPATI SRINIVASA RAO; Vivek Vardhini College of P.G Studies Hyderabad
Dr.Jacob Kalle; ICSSR – Southern Regional Centre Hyderabad
Page No:10-16
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56785

3. Protection of children from sexual offences
CHOPPARAPU SRINIVASARAO.MA.,LL.B. Advocate Guntur.
Page No:17-24
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56786

4. ANALYSIS ON PROTECTION OF CHILDREN IN INDIA
CHOPPARAPU SRINIVASARAO.MA.,LL.B. Advocate Guntur
Page No:25-29
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56787

5. STAMP: ENABLING PRIVACY-PRESERVING LOCATION PROOFS FOR MOBILE USERS
V.MADHUKAR MCA, M.Phil (CS); Chaitanya PG College (Autonomous)
Page No:30-35
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56788

6. STUDY HABITS AND ACADEMIC ACHIVEMENT AMONG B.ED. TRAINEES IN COLLEGES OF EDUCATION IN BANGALORE DISTRICT
Channakeshava .B, Dr. K. Anandan, Dr. A. Tholappan ; Bharathidasan University, Tiruchirappalli, Tamil Nadu
Dr. A. Srinivasacharlu: New Horizon College of Education (Aided), Bangalore
Page No:36-44
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56789

7. A study on Globalization in Manjula Padmanabhan's Harvest
K.SURESH, 2Dr.D.SHANMUGAM; Annamalai University Chidambaram, Tamilnadu, India
Page No:45-54
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56790

8. The distribution of native plants by Pteropus giganteus
E.R. Prasad.S.R.Sivakumar; Bharathidasan University, Tiruchirappalli - 620 024, Tamil Nadu, India
Page No:55-65
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56791

9. Comparative study of recent algorithms used in Natural Language Processing
K.Gurumoorthy; Periyar University, Salem.
Dr.P.Suresh; Salem Sowdeswari College [Govt-Aided], Salem.Tamil Nadu
Page No:66-73
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56792

10. Innovating Safety Measure for Preventing Two Wheeler Accidents
Dr.S.Srividhya, Mrs.D.Sowmya Devi; Sri Ramakrishna College of Arts & Science for Women, Coimbatore
Page No:74-78
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56793

11. A NOVEL METHOD FOR REMOVING GAUSSIAN BLUR FROM IMAGES
MARELLA INDU, Dr A.Swarupa Rani; Siddharth Institute of Engineering and Technology, Puttur-517583.
Page No:79-83
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56794

12. A STUDY ON FINANCIAL PERFORMANCE OF INDIAN COMMERCIAL BANKS: TREND ANALYSIS
K.V.S.Gayathri; Rayalaseema University, Kurnool
M.Chandraiah; Vikrama Simhapuri PG center, Kavali
Page No.84-88
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56795

13. TECHNOLOGICAL CHANGES WITH DYNAMICS OF SOFTWARE PLATFORMS ON E-COMMERCE INDUSTRY
Dr. J. Umamaheswari. School of Maritime Management, Indian Maritime University, Chennai
Page No.89-97
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56796

14. ARTICLE 21 IS REPOSITORY OF VARIOUS HUMAN RIGHTS
N. Karunakaran, Dr. M. Nirmal Kumar; TheTamilNadu Dr.Ambedkar Law University, Chennai, India
Page No.98-104
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.56797

15. An Anatomization of Multimodal Biometric System: A Survey

PRINCIPAL
Swami Vivekanand ... Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

[illegible]
DOI:[illegible]

369. A Study on Factors Influencing the Consumer [illegible]
[illegible]
Page No:[illegible]
DOI:[illegible]

370. Effect of [illegible]
[illegible]
Page No:[illegible]
DOI:[illegible]

371. Women and Development in India
[illegible]
Page No:[illegible]
DOI:[illegible]

372. Implications of the [illegible]
[illegible], Scholar in Political Science
Page No:[illegible]
DOI:[illegible]

373. The [illegible] Autonomy Movement of Assam
[illegible], Gauhati University, Guwahati, Assam, India, [illegible]
Page No:[illegible]
DOI:[illegible]

374. [illegible] and [illegible]
S. Jayasudha; Prince Shri Venkateshwara Padmavathy Engineering College, Ponmar, Chennai.
[illegible]; Prince Dr K.Vasudevan College of Engineering & Technology, Chennai.
G Jothipriya; Prince Shri Venkateshwara Arts and Science College, Gowrivakkam.
Page No:[illegible]
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.[illegible]

375. [illegible]
G Kala Priyadarshini; Prince Shri Venkateshwara Padmavathy Engineering College, Ponmar Chennai-600 127.
[illegible]; Prince Dr K.Vasudevan College of Engineering & Technology, Chennai.
[illegible]; Prince Shri Venkateshwara Arts and Science College, Gowrivakkam.
Page No:[illegible]
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.[illegible]

376. Synthesis And Characterization Of [illegible] Thin Film
G Mahalakshmi; Prince Shri Venkateshwara Padmavathy Engineering College, Ponmar Chennai-600 127.
[illegible]; Prince Dr K.Vasudevan College of Engineering & Technology, Chennai.
U Sarala Devi; Prince Shri Venkateshwara Arts and Science College, Gowrivakkam.
Page No:[illegible]
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.[illegible]

377. Optimal Allocation and Sizing of Multiple DG in Radial Distribution System Using [illegible]
M J Murali; Prince Shri Venkateshwara Padmavathy Engineering College, Ponmar Chennai-600 127.
Ranjani R; Prince Dr K.Vasudevan College of Engineering & Technology, Chennai.
H Usharani; Prince Shri Venkateshwara Arts and Science College, Gowrivakkam.
Page No:[illegible]
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.[illegible]

378. Fuel Cell Power System and Its Applications
Ranjani R; Prince Shri Venkateshwara Padmavathy Engineering College, Ponmar Chennai-600 127.
Valarmathy A S; Prince Dr K.Vasudevan College of Engineering & Technology, Chennai.
G Jothipriya; Prince Shri Venkateshwara Arts and Science College, Gowrivakkam.
Page No:3261-3273
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.57158

379. The Origins of the Word "Martingale"
S. Jayasudha; Prince Shri Venkateshwara Padmavathy Engineering College, Ponmar Chennai-600 127.
Jeba Elizabeth.S; Prince Dr K.Vasudevan College of Engineering & Technology, Chennai.
K.Rajalakshmi; Prince Shri Venkateshwara Arts and Science College, Gowrivakkam.
Page No:3274-3279
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.57159

380. STATISTICAL TOOLS USED FOR ANALYSIS
Suganya V; Prince Shri Venkateshwara Padmavathy Engineering College, Chennai
Bhuvaneshwari S; Prince Dr K.Vasudevan College of Engineering & Technology, Chennai
H.Usharani; Prince Shri Venkateshwara Arts and Science College, Gowrivakkam.
Page No:3280-3285
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.57160

381. [illegible]
डॉ. [illegible]
Page No:3286-3297
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.57161

382. A Note on the British surveys and tours in the Nyishi hills
Dr. Tade Sangdo; Rajiv Gandhi (Central) University, Rono Hills, Doimukh, Itanagar, Arunachal Pradesh-791112
Page No:3298-3316
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.57162

383. [illegible]
डॉ. [illegible]
Page No: 3317-3334
DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I2.0086781.57163

PRINCIPAL
Swami Vivekanand [illegible] Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.[illegible] Dist.Nanded

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]"

[illegible]

PRINCIPAL
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]

5) [illegible] 'अग्निपंख' [illegible]

6) 'अग्निपंख' हे एक [illegible] पुस्तक [illegible]

7) [illegible] 'अग्निपंख' हे पुस्तक [illegible]

8) [illegible] पुस्तक [illegible]

9) 'अग्निपंख' हे पुस्तक [illegible] तीन विभागात विभागणी केलेले पुस्तक आहे-

अ. प्रारंभिक जीवन

ब. भारतीय अवकाश संशोधन

क. क्षेपणास्त्र कार्यक्रम

10) 'अग्निपंख' या पुस्तकातील कहाणी ही एक [illegible] मुलाची कहाणी आहे जो भारतीय अवकाश संशोधन / भारतीय क्षेपणास्त्र कार्यक्रमाचा मुख्य [illegible] बनला आणि नंतर तो भारताचा राष्ट्रपती बनला

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

याशिवाय डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलामांनी संरक्षण संशोधन आणि विकास संघटना (DRDO) आणि भारतीय अवकाश संशोधन संस्था (इसरो) यांच्यावर ताबा मिळविला आणि स्वतंत्र भारतातील काही नाविन्य पूर्ण आणि चित्तथरारक पराक्रमाद्वारे वाचकांना या पुस्तकाद्वारे स्वप्नपूर्तीसाठी संघर्षाची प्रेरणा दिली.

"अग्निपंख"

"अग्निपंख" हे पुस्तका डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम यांनी आई–वडिलांना स्मरून लिहले विशेषत् आईला "माझी आई" या नावाले श्रद्धांजली दिलेली दिसते. हे पुस्तक त्यांच्या जिवनाच्या प्रवासाला चार भागात विभागले –

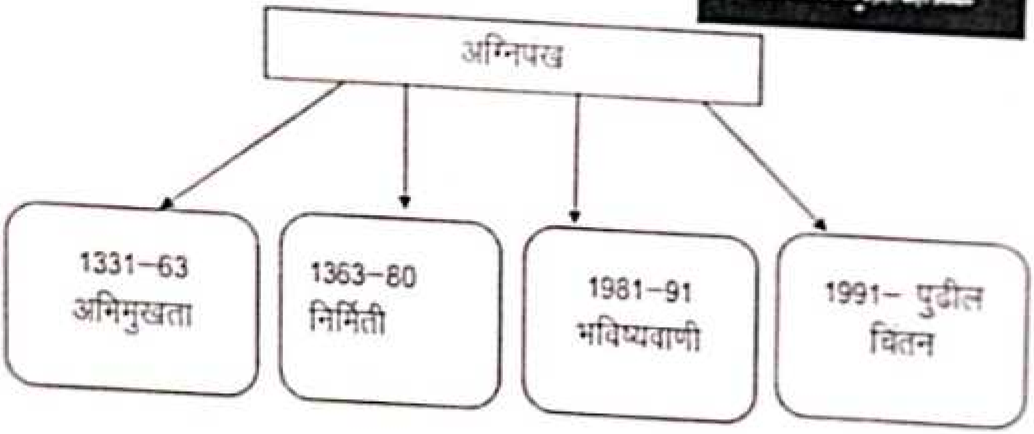

आकृती क्रमांक 1 अग्नीपंख चे चार भाग

वर नमुद केल्याप्रमाणे 'अग्नीपंख' या पुस्तकाचे डॉ. कलामच्या जीवनप्रवासाचे चार भाग पडतात –

[illegible]

1) [illegible] अभिमुखता

2) [illegible] निर्मिती

3) [illegible]

4) [illegible]

अग्निपंख – भाग १ अभिमुखता :

अग्निपंखातील भाग एक हा कलाम यांच्या [illegible] आहे. [illegible] कुटुंबाशी, नातेवाईकांशी, मित्रांशी आणि शिक्षकांशी [illegible] चित्रण आहे. [illegible] रामेश्वर येथे त्यांनी घेतलेल्या शिक्षणाचे आणि [illegible] या भागात वाचकांना पहावयास मिळतात, तसेच त्यांनी या काळात [illegible] आणि [illegible] पण सुंदर रेखाटन केलेले आहे. या भागात त्यांचे प्राथमिक शिक्षणापासून ते मद्रास इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजीच्या एरोनॉटिकल अभियांत्रिकी पदवी पर्यंतच्या शिक्षणाचा प्रवास त्यांनी केलेला आहे.

डॉ.कलाम यांचे वडील रामेश्वरमला येणा–या यात्रेकरुंना होडीतून ने आण करण्याचा व्यवसाय करत. म्हणून त्यांच्याकडे डॉ कलाम यांना महाविद्यालयीन शिक्षणासाठी लागणारे पैसे [illegible] नव्हते त्यांच्या बहिणीने [illegible] दागिने गहाण ठेवून त्यांना हा शिक्षणासाठी पैसे दिले होते. म्हणून या भागात नात्यांना किती महत्व असते हे कळते. डॉ कलाम यांनी लहान असताना भावाला मदत व्हावी, तसेच शिक्षणात येणारी आर्थिक अडचण दूर करण्यास मदत व्हावी म्हणून वर्तमान पत्र विकण्याचे काम केले याच भागात त्यांनी कुटुंब, नातेवाईक, मित्र आणि शिक्षक यांनी अडचणीवर मात करण्याकरिता दिलेली साथ याचे सार्थ वर्णन केले आहे. जेव्हा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करताना आत्मविश्वास किती महत्वाचा आहे याचा परिचय डॉ. कलामांच्या कार्यानुभवावरून निश्चितच वाचकांना प्रेरणादायी ठरणार आहे. विक्रम साराभाई सारख्या तज्ञ व्यवस्थापक कौशल्य तसेच सांघिक निर्माण कौशल्य असणाऱ्या व्यक्तीचे मार्गदर्शन मिळाले आणि त्यांसोबत कार्य करण्याची संधी मिळाली यात ते स्वतःला धन्य मानतात त्याचा उल्लेख आपणास अग्निपंख च्या भाग दोन मध्ये पहावयास मिळतो.

भाग तीन भविष्यवाणी (1981 ते 91) :

भाग तीन हा भारतीय अंतराळ प्रवासातील सर्वात महान वैज्ञानिकाला आदरांजली वाहणारा भाग आहे. डॉ. कलामांच्या आयुष्यातील दहा वर्षांची महत्वाची कारकीर्द, या भागात पहावयास मिळते. त्यांची इसरोनंतर सैन्य संरक्षण संशोधन केंद्रात बदली झाली. या भागात पुस्तकामध्ये डॉ. कलामांनी अनेक चित्रांचा पण समावेश केला आहे. भारतीय वैमानिक आणि अणुसंशोधन साधनांच्या उल्लेख याभागात आढळतो – जसे की SLV–3, PSLV, आकाश नागा, अग्नि, त्रिशुल इ. आणि या तंत्रज्ञानांनी केलेल्या यशाची किर्ती ही एक भारताची सर्वात मजबूत आणि वैमानिक आणि अवकाश संस्था आहे. जिचा उल्लेख अग्निपंखच्या भाग तीन मध्ये सापडते. कलामच्या शिक्षकांनी अंतराळ विज्ञानाची मोठी संधी विचारात घेण्यास त्यांना प्रेरित केले. डॉ. कलाम यांच्या मते प्रक्षेपण वाहनाच्या अवकाश आणि अवकाश विकासामध्ये भारत बराच सक्षम आहे अशी दृष्टी असलेले ते पहिले व्यक्ती होते. त्यांच्या मते SLV भारताच्या सैन्यात अत्याधुनिक क्षेपणास्त्र तंत्रज्ञानाच्या श्रेणीचा पाया प्रदान करतो.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]

[illegible]

[illegible]

2021-2022

Power of Knowledge Peer Review Journal, April Special Issue VI 2021 ISSN 2320-4494 Impact factor 1.

RNI No. MAHMUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Editor
Dr. Sadashiv H. Sarkate

• Mailing Address •
Dr. Sadashiv H. Sarkate
Editor : POWER OF KNOWLEDGE
Head of Dept. Marathi
Art's & Science College, Shivajinagar, Gadhi, Tq. Georai Dist. Beed-431 143 (M.S.)
Cell. No. 9420029115 / 7875827115
Email : powerofknowledge3@gmail.com /
shsarkate@gmail.com

Price : Rs. 300/-
Annual Subscription: Rs. 1000/-

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांची जलव्यवस्थापनविषयक भूमिक

प्रा.डॉ.बालाजी खराबे
मराठी विभाग प्रमुख
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुक्रमाबाद ता.मुखेड जि.नांदेड.

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कार्य सर्वव्यापी व सर्वसमावेशक असे आहे. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी चळवळीच्या माध्यमातून भारतीय समाजात परिवर्तन घडवून आणले. देशाच्या विकासासाठी प्रेरणादायी ठरणारे समतावादी विचार मांडले. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजे दलितांच्या मानवमुक्ती लढ्याचा महानायक, उपेक्षितांना न्याय मिळवून देणारा हाडाचा समाजसेवक, दीनदुबळ्यांचे कैवारी, लोकशाहीचे प्रणेते, भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार, द्रष्टे राजकारणी, शीलवंत प्राध्यापक, थोर शिक्षणतज्ज्ञ व इतिहासमीमांसक, स्त्री स्वातंत्र्याचे पुरस्कर्ते, निःस्पृह पत्रकार अशी बाबासाहेबांची जगाला ओळख आहे. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक, परराष्ट्रविषयक व स्त्रियासंबंधी आपले मौलिक विचार मांडलेले आहेत. बाबासाहेब हे खऱ्या अर्थाने युगपुरुष होते. भारतीय समाजाचे कल्याण करताना बाबासाहेबांनी कधी प्रांत किंवा प्रदेश हा विचार केला नव्हता.

विषय निवडीचा हेतू

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक स्त्रीविषयक व परराष्ट्र धोरणावर अनेक विचारवंतांनी आपापली मते मांडलेली आहेत परंतु अनेकांना डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची जल विद्युत नियोजन बाबतची भूमिका पूर्णपणे माहीत नाही. म्हणून हा विषय सर्वसामान्यांपर्यंत पोहोचविण्यासाठी या विषयाची निवड केली आहे.

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत विषयाची मांडणी करण्यासाठी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीचा वापर करण्यात आला आहे. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या दुर्लक्षित विषयाकरिता प्राथमिक व दुयम साधनांचा वापर करून शोध विषयाची मांडणी केली आहे.

भारत हा मोसमी हवामानाच्या प्रदेशात मोडणारा देश आहे. भारतातील ७०% जनता शेतीवर आपली उपजीविका भागविते. भारतीय शेती निसर्गावर आधारित असून ती बेभरवशाची आहे. म्हणून शेतीचा विकास करण्यासाठी पावसावर अवलंबून न राहता पावसाच्या पाण्याचे योग्य व्यवस्थापन करून त्या पाण्याचा दीर्घकाळ उपयोग करणे आवश्यक आहे. भारतासहित जगातील अनेक देशांमध्ये सिंचन प्रकल्प राबवून शेती विकासाला चालना देण्याचा प्रयत्न होत आहे. शेती विकासाचे महत्त्वाचे साधन म्हणजे सिंचन होय.

सिंचन म्हणजे काय?

जगातील सर्व संस्कृतीचा विकास नदीखोऱ्यांच्या पाणी व्यवस्थेवर झालेला आहे. सामान्यपणे जमिनीवरील व जमिनीखालील पाण्याच्या सिंचनासाठी उपयोग केला जातो.

१९४२ ते १९४६ या कालावधीत व्हाईसरॉय यांच्या काळात डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मजूरमंत्री होते. बाबासाहेबांच्या अर्थशास्त्रीय ज्ञानाचा उपयोग करून घेण्यासाठी त्यांना निवडले होते. प्रो.एस.सी. हार्ट यांनी न्यू इंडिया रिव्हर्सड या पुस्तकात भारतीय ऊर्जा व नियोजनाचे जनक व पायाभरणीचे श्रेय डॉ.बाबासाहेबांना दिले आहे. या कालावधीत सरकारने व्यापक प्रमाणात जलधोरणे आखली होती.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची जलनीती

१९४२ ते १९४६ या कालावधीत जलव्यवस्थापनासाठी अनेक समित्या नेमण्यात आल्या होत्या. पुराला आपत्ती म्हणून गृहित धरून उपाययोजना सुचविण्याच्या विविध समित्यांच्या धोरणे, अहवाल डॉ.आंबेडकरांना योग्य वाटला नाही. म्हणून हा अतिरिक्त पाण्याचा त्यांच्या कमतरतेमुळे शोषित असे असतो. जल ही नैसर्गिक संपत्ती आहे. तिचे योग्य नियोजन करणे महत्व असे डॉ.बाबासाहेब म्हणत असत. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी ८ नोव्हेंबर १९४५ रोजी कटक येथील भाषणात पुराच्या पाण्याला हिमालयाची आपत्ती न समजता राष्ट्रीय संपदा, संपत्ती म्हणून महत्त्वाची नवी दृष्टी दिली आहे.

हिमालयातून बारमाही नद्या उगम पावतात. या नद्यांचे ८०% पाणी आपत्ती बनून समुद्राला जाऊन मिळते. हिमालयातील नद्यांचे पाणी अडवून, त्या पाण्याचे नियोजन करून धरणाद्वारे, जलविद्युत प्रकल्पांची निर्मिती करण्याचा राष्ट्र उभारणीला पूरक योजनेतून, भारताला समृद्धीकडे नेऊन जाण्याचे श्रेय डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या जलव्यवस्थापनाकडे होते हे लक्षात येते. जलसाठ्यामुळे केवळ सिंचन व विद्युत नव्हे तर अंतर्गत नौकानयनासाठी सुरक्षित जलमार्ग पुरविता येतात. म्हणून डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी नद्यांवरील प्रकल्पांवर अधिक भर दिला होता. जल नियोजनामुळे विद्युत, सिंचन, नौकानयन, औद्योगिक विकास साधता येतो यावर डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचा कटाक्ष होता. म्हणूनच डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी देशात विविध जलप्रकल्पांची उभारणी केली.

दामोदर खोरे प्रकल्प

१९४३ ते १९४६ या कालावधीत विविध नद्या प्रकल्पांचा विचार करण्यात आला. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या नेतृत्वाखालील अत्यंत महत्त्वाची योजना म्हणजे दामोदर खोरे प्रकल्प होय. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर हे दामोदर खोरे प्रकल्पाच्या विकासाचे मुख्य अधिवक्ते होते. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी या प्रकल्पासाठी विशेष परिश्रम घेतले. अमेरिकेतील टेनेसी खोरे प्रमाणे त्यांनी दामोदर खोरे प्रकल्पाचा विकास केला म्हणूनच दामोदर नदी प्रकल्पाच्या निर्मितीचे सर्व श्रेय डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांना दिले जाते.

हिराकुड प्रकल्प

भारतातील ओरिसा राज्यातील महानदी ही महत्त्वपूर्ण नदी आहे. महानदीमुळे ओरिसा राज्याला अनेक वेळा पुराला सामोरे जावे लागते. १९२८ मध्ये ओरिसा पूर चौकशी समिती नेमण्यात आली. १९३७ मध्ये डॉ.विश्वेश्वरय्या यांच्या अध्यक्षतेखाली पूर समिती नेमण्यात आली. या समितीचा अहवाल १९४० मध्ये सरकारला सादर करण्यात आला. तोपर्यंत भारत सरकारने डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांशी संपर्क साधून ओरिसातील महानदीवर उपाय शोधावा अशी विनंती केली. ८ नोव्हें. १९४५ रोजी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या अध्यक्षतेखाली महानदीच्या पाण्याच्या प्रश्नावर विचारविनिमय करण्यासाठी परिषद बोलाविण्यात आली होती. ओरिसातील समस्यांवर उपायांकरिता बांध घालावे, पाणीसाठा करावा, त्या पाण्याचा वापर विविध उद्देशांच्या पूर्ततेसाठी करावा असे मत डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी व्यक्त केले. यातून पूरनियंत्रण तर होईलच परंतु जलसिंचन, जलविद्युत व नौकानयनाच्या सुविधा उपलब्ध होतील असे मत डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी मांडले होते. १५ मार्च १९४६ रोजी हिराकुड धरणाची पायाभरणी करण्यात आली. या धरण उभारणीत बाबासाहेबांचा महत्त्वाचा वाटा होता.

सोन नदी खोरे

सोन नदी ही मध्यप्रदेशातील एक प्रमुख नदी आहे. ती पुढे गंगा नदीला जाऊन मिळते. १७ मार्च

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

१९४५ रोजी सोन नदी प्रकल्पाशी संबंधित दिल्ली येथे श्रमविभागाच्या पुढाकाराने बैठक ठेवण्यात आली. या बैठकीत फायद्याचाच विचार करण्यात आला. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी या प्रकल्पाचे महत्त्व विशद केले. या बैठकीत सोन नदी खोरे विकास प्राधिकरणाची निर्मिती करण्यात आली. सोन नदी खोरे प्रकल्पामुळे जलसिंचन, जलविद्युत जलवाहतुकीसाठी पाणीपुरवठा, पूर नियंत्रण यासारखे फायदे होणार होते.

आंतरराज्य नद्या जोड प्रकल्प

२१ फेब्रुवारी १९४८ रोजी घटना मसुदा तयार करण्यात आला. त्यावेळी स्वतंत्र भारताचे जलधोरण ठरविण्यात बाबासाहेबांचा महत्त्वाचा वाटा होता. आंतरराज्य नद्या जोड प्रकल्पामुळे पूर नियंत्रण, जलसिंचन, नौकानयन आणि जलऊर्जा यासारखे फायदे होतील असे बाबासाहेबांनी सांगितले होते. घटनेतील २३९ ते २४२ कलमामध्ये डॉ.आंबेडकरांनी ९ सप्टेंबर १९४९ रोजी सुधारणा सुचवून आंतरराज्य नद्यासंदर्भात लवाद नेमण्यासंदर्भात भूमिका स्पष्ट केली.

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी संपूर्ण भारतीयांसाठी जो आंतरराज्य नदी जोड प्रकल्पाची भूमिका मांडली होती. ती स्वीकारली असती तर आज संपूर्ण देशातील शेतकऱ्यांची आर्थिक उन्नती झाली असती. तसेच सर्वसामान्यांना स्वच्छ व मुबलक प्रमाणात पिण्याच्या पाण्याचा पुरवठा झाला असता. औद्योगिकीकरणासाठी मोठ्या प्रमाणात ऊर्जेचा पुरवठा झाला असता. पर्यायाने भारतवासीयांचा विकास झाला असता.

निष्कर्ष

१) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी स्वातंत्र्यपूर्व काळात ओळखलेले जलव्यवस्थापनाचे महत्त्व आजही मार्गदर्शक ठरणारे आहे.

२) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची आंतरराज्य नदी जोड प्रकल्पाची भूमिका स्वीकारली असती तर भारतात पडणाऱ्या दुष्काळावर मात करता आली असती.

३) जलनियोजनातून जलविद्युत निर्मिती करता येते. जलऊर्जेतून औद्योगिक विकास साधता येतो. विजेचा प्रश्न सोडविण्यास भारतास मदत होईल.

४) भारतातील सर्वच प्रदेशातील शेती ओलीताखाली आणावयाची असेल व हरितक्रांती करावयाची असेल तर डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या जलधोरणाचा अवलंब करावा लागेल.

संदर्भ

१) डॉ.सुखदेव थोरात, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर-नियोजन, जलविद्युत विकास भूमिका व योगदान, सुगावा प्रकाशन, पुणे, पृ.क्र.७

२) कित्ता, पृ.क्र.९

३) ८ नोव्हेंबर १९४५ चे ओडिसातील नदीवरील अधिवेशनातील डॉ.बाबासाहेबांचे मत

४) मध्यवर्ती जलमार्ग, जलसिंचन आणि नौकानयन आयोगाचे कार्यालय, श्री.ए.एन. खोसला यांचे गोखले एच.ई. गव्हर्नर कटक, श्रम विभाग

५) युगपुरुष डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, संपादक डॉ.तंगलवाड, डॉ.सरोदे, शिवानी प्रकाशन, नांदेड, २०१४, पृ.२६२ ते २६८

६) धनंजय कीर, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, चौथी आवृत्ती २००६, पृ.क्र.३९१.

◆◆◆

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed.Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 7.139 Special Issue - 28, Vol. 4 March 2020
ISSN 2319-8648
Peer Reviewed

2020-2021

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2319-86948
Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Relevance of Mahatma Gandhi in Today's World

March 2020 Special Issue – 28, Vol. 4

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors
Guide
Dr. B. G. Gaikwad
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

Editor
Dr. Balasaheb S. Kshirsagar
Director , Gandhian Studyies Center
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Dhale S.U.
Dept. of Political Science,
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Hurgule N.R.
Dept. of Sociology,
Shivaji College, Hingoli (MS)

Shaurya Publication, Latur

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

14. म.गांधीचे ग्राम विकासासंबंधी विचार : विशेष संदर्भ ग्राम स्वराज्य व ग्रामोद्योग 37
प्रा.राम गणपतराव शेवलीकर

15. महात्मा गांधी आणि भारतीय स्वातंत्र्य चळवळ 39
प्रा.डॉ. संतोष गोपाळकृष्ण कुलकर्णी

16. म.गांधी आणि अराज्यवाद 42
प्रा.वाघमारे के.एच.

17. महात्मा गांधीना अभिप्रेत अर्थनीती 47
प्रा.डॉ.जितेंद्र पांडुरंगराव काळे

18. महात्मा गांधी यांचे राष्ट्रभाषे विषयी विचार व कार्य 49
डॉ.श्रीकृष्ण काकडे

19. गांधीजीचे अहिंसेविषयक विचार 51
प्रा.डॉ.बालाजी खरावे

20. बाल तत्वचिंतक : महात्मा गांधी 54
प्रा. डॉ भुसारे एस. आर.

21. ग्रामीण विकासात म. गांधी विचारांची प्रासंगिकता 58
प्रा. डॉ. विलास कऱ्हाळे

22. गांधीजी आणि ग्राम विकास कल्पना 59
प्रा. सौ. गीता विशे

23. महात्मा गांधी आणि ग्रामीण विकास 63
शैलेश रेवा पवार

24. राष्ट्रपिता महात्मा गांधींचा ग्रामीण विकासाचा दृष्टिकोन 65
दिलीप दामु कुमरे

25. विसाव्या शतकात गांधी विचारांची प्रासंगिकता 69
प्रा. संगिता बी. चव्हाणके

26. "महात्मा गांधी यांचे भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील योगदान" 72
प्रा. विनायक नथुराम तंत्रे

27. महात्मा गांधीच्या विचारांचे मराठी साहित्यातील स्वरूप व भुमिका यांचा आढावा 75
प्रा.सिध्दार्थ कुंडलिक इंगोले

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed.Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 28, Vol. 4 | Peer Reviewed | ISSN: [illegible]
March 2020 | SJIF | Impact Factor [illegible]

गांधीजींचे अहिंसाविषयक विचार

प्रा.डॉ. [illegible]

मराठी विभागप्रमुख, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुखेड, ता.मुखेड जि.नांदेड

सारांश (Abstract)

[illegible] 'The father of the nation' [illegible] महात्मा गांधी [illegible] सत्य व अहिंसा [illegible] अहिंसेचे तीन प्रकार सांगितले आहेत.

१. प्रस्तावना

म.गांधीनी [illegible] भारतीय स्वातंत्र्यलढ्याचे नेतृत्व [illegible] महात्मा [illegible] 'The father of the nation' अशी उपाधी दिली.

[illegible] म.गांधीनी [illegible] भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यात [illegible] पूर्ण आहेत.

म.गांधीनी वैयक्तिक, आर्थिक, धार्मिक, राजकीय, सामाजिक, अहिंसात्मक [illegible] भारतीय स्वातंत्र्य [illegible] म.गांधीचे सत्य व अहिंसाविषयक विचारांचा प्रभाव [illegible] आहे.

२. संशोधनाची उद्दिष्टे

१) म.गांधीच्या अहिंसाविषयक विचारांचा अभ्यास करणे.

२) म.गांधीच्या अहिंसाविषयक विचारांची सद्यस्थितीतील उपयुक्तता तपासून पाहणे.

३) म.गांधींचे भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यातील योगदानाची सविस्तर माहिती जाणून घेणे.

३. संशोधन पद्धती

संशोधनाच्या अनेक पद्धती आहेत. 'महात्मा गांधी यांचे सत्य व अहिंसाविषयक विचार' अभ्यासण्यासाठी [illegible] पद्धतीचा वापर करण्यात आला आहे. [illegible] वापर करून हे संशोधन कार्य पूर्ण केले आहे.

४. सत्य व अहिंसाबाबत विचार

म.गांधीच्या विचारसरणीत सत्य आणि अहिंसा या दोन तत्त्वांना महत्त्वाचे स्थान आहे. गांधीच्या सत्य व अहिंसेच्या [illegible] भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यात सत्य आणि अहिंसा या [illegible] सत्य आणि अहिंसा [illegible] गांधी [illegible] अहिंसा [illegible] गांधी सत्य आणि अहिंसा [illegible] अहिंसा [illegible] असे गांधी मानतात. [illegible]

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
[illegible] Ta.Mukhed Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue [illegible], Vol. 4 | Peer Reviewed [illegible] | ISSN : [illegible]

March 2023 | | Impact Factor : [illegible]

५ अहिंसा: मानव मुक्तीचे साधन

अहिंसा हे [illegible]

[illegible]

अहिंसा हे [illegible] अहिंसा परमो धर्म: [illegible]

[illegible]

६. अहिंसेबद्दलची तत्त्वे

1) अहिंसा हे मानव जातीच्या उध्दाराचा एकमेव मार्ग आहे.

2) अहिंसेचा भंग करणे म्हणजे मूर्तिमंत परमेश्वराचा भंग करणे होय.

3) अहिंसा म्हणजे मनापासून केलेल्या प्रार्थनेला अंतरंगात परमेश्वराने दिलेले उत्तर होय.

4) अहिंसा ही प्राचीन संकल्पना असून वेद, उपनिषद, स्मृती, महाभारत, जैन व बौद्ध यांचे [illegible] आहे. आत्मिक व एकात्मिक सामर्थ्याची जाणीव [illegible] असते ती अहिंसा होय.

७. अहिंसेचे प्रकार

सत्याची साधना करण्यासाठी अहिंसेचा मार्ग स्वीकारावा लागतो असा गांधीजीचा आग्रह होता. अहिंसेचा अंगीकार कोण करतो त्यावरुन प्रकार पडतात. अहिंसेचे प्रमुख तीन प्रकार आहेत.

1) शूरांची अहिंसा:

शूर माणूस अहिंसा स्वीकारीत नाही. नैतिकदृष्टया अहिंसा अनिवार्य आहे. असे मनोमन पटल्याने शूराने अहिंसा स्वीकारलेली असते. केवळ शूर अहिंसा स्वीकारतो तेव्हा तो परिस्थितीमुळे नाही तर अहिंसा ही त्याची जीवननिष्ठा असते.

2) दुर्बलांची अहिंसा

हिंसा शक्य नाही म्हणून अहिंसा स्वीकारली जाते. [illegible] म्हणून या प्रकारच्या अहिंसेचा पुरस्कार केला जातो. अशी अहिंसा म्हणजे दुर्बलांची अहिंसा होय.

3) भ्याड लोकांची अहिंसा:

भित्री माणसे अन्यायाचा प्रतिकार न करता निमूट पडून जातात व शरणागती पत्करतात. अशा लोकांच्या अहिंसेला भ्याड लोकांची अहिंसा असे म्हणतात. गांधीजी या प्रकारच्या अहिंसेपेक्षा हिंसेलासुध्दा चांगले असे म्हणतात. त्याप्रमाणे अंधार व उजेड एकत्र नांदू शकत नाहीत. त्याप्रमाणे अहिंसा व भित्रेपणा एकत्र राहू शकत नाहीत.

८. समारोप

एकविसाव्या शतकात समग्र मानव जातीने म.गांधीच्या अहिंसा तत्त्वाचा विचार केल्यास जगात युध्द, [illegible] म.गांधीचा अहिंसा मार्ग स्वीकारल्यास [illegible] म.गांधीनी सांगितलेला अहिंसेचा मार्ग स्वीकारावा लागेल. त्यातच समग्र मानव जातीचे हित व कल्याण आहे.

९. निष्कर्ष

1) म.गांधीनी भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यात सत्य व अहिंसा मार्गाचा अवलंब करुन भारतीय स्वातंत्र्याचा लढा केला.

2) नि:शस्त्रीकरणावर गांधीचा भर होता.

3) एकविसाव्या शतकात जगातील अनेक राष्ट्रे अण्वस्त्रसज्ज झाले

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 28 , Vol. 4 March 2020 | Peer Reviewed SJIF | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

आहेत

४) रशिया-अमेरिकेसारखे बलाढय राष्ट्रांनी अण्वस्त्र कपात करून एक प्रकारे गांधीचा मार्ग अनुकरण केल्याचे दिसून येते.

संदर्भ

१) डो.ना.य.डोळे, प्रमुख भारतीय राजकीय विचारवंत, विदया बुक पब्लिशर्स, औरंगाबाद, प्र.आवृत्ती, जून १९९९ पृ.३७

२) डो.भा.ल.भोळे, भारतीय राजकीय विचारवंत, पिंपळापुरे बुक डिस्ट्रीब्युटर्स, नागपूर, जाने.२००८ पृ.१६२

3) कुलकर्णी, सोमवंशी, अतकरे, भारातीय राजकीय विचारवंत,कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद, जून २००५ पृ.११२-११३

४) सरोज देशपांडे (अनु.), म.गांधीः राजकीय चरित्र, डायमंड बुक डेपो, पुणे, २००७ पृ.२२

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed.Dist.Nanded

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June -2021
Vol.02 Issue VI

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.54

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist.Nanded

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Rjvani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
38	[illegible]	डॉ. [illegible]	165
39	[illegible]	[illegible]	168
40	[illegible] योगदान	[illegible]	171

मराठी विभाग

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
41	'नागरिक': एक संशोधन	श्री [illegible]	176
42	कृषी विपणन: एक आढावा	प्रो. डॉ. ए. डी. [illegible]	178
43	स्वातंत्र्यपूर्व कालखंडातील [illegible] एक दृष्टिक्षेप	प्रा. डॉ. [illegible]	183
44	स्वातंत्र्य आंदोलनात अमळनेर तालुक्यातील शंकर सिताराम शिंपी व बन्सु [illegible] यांचे योगदान	प्रा. डॉ. [illegible] प्रा. डॉ. [illegible]	186
45	'अलविदा' या नाटकातून व्यक्त होणाऱ्या समकालीन जीवनसंदर्भांचा शोध	सहा. प्रा. [illegible]	189
46	आत्मवृत्त प्रवासवर्णन: जावे त्यांच्या देशा	डॉ. [illegible]	192
47	अहिल्यादेवी होळकर: मानवतावादाचा दीपस्तंभ	प्रा. डॉ. सतीश [illegible]	196
48	दहन: दुष्काळाच्या दाहकतेचा वास्तवानुभव	प्रा. डॉ. [illegible]	199
49	शेतमजुरांच्या समस्या आणि उपाय योजना: एक अध्ययन	प्रा. मंगला [illegible] पाटील	203
50	लघुउद्योगांतर्गत महिलांचा उद्योजकता विकास: एक अध्ययन	प्रा. रेणुका [illegible] पाटील	207
51	भारतामध्ये कोविड 19 चा विविध क्षेत्रावर होणारा परिणाम: एक चिकित्सक अभ्यास	प्रा. महेंद्र [illegible]	212
52	गझल छंदबद्ध कविता: एक आकृतिबंध	प्रा. संजय एस. [illegible]	215

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist. Nanded

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

43

स्वातंत्र्यपूर्व कालखंडातील चरित्र वाङ्मय : एक दृष्टिक्षेप

प्रा.डॉ.बालाजी परबतराव खराबे
मराठी विभागप्रमुख
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुक्रमाबाद ता.मुखेड जि.नांदेड
मोबा.9403972820 kharabebalaji68@gmail.com

अनादि काळापासून चालत आलेले काळाचे सातत्य आणि मानवी जगाचा इतिहास यांचा संबंध अनाकलनीय तऱ्हेने चालत आलेला आहे. "इ.स.पूर्व वीस लाख वर्षांपूर्वी द. आफ्रिकेत मानवाचा आदिवंशज निर्माण झाला, असे मत डार्विन या शास्त्रज्ञाने व्यक्त केले आणि मानवी जन्माची उकल आणि उत्क्रांती कशी होत गेली, याचा अभ्यास संशोधकांनी सुरु केला."[1] याच मानवातून देव, दानव, संत, महंत, धर्मसंस्थापक, समाजसेवक, समाजकंटक, राज्यकर्ते, सामान्यजन, शिक्षणतज्ज्ञ, अर्थतज्ज्ञ इत्यादींची निर्मिती झाली. काही चरित्रनायकांचे शरीर नियमन व त्यांचे कार्य सामान्य लोकांच्या बुद्धिमत्तेच्या पलिकडचे दिसते आहे. म्हणून अशा चमत्कृतीयुक्त स्त्री–पुरुषांची चरित्रे लिहिली आहेत. मानवी जीवनाचा प्रवास काळाच्या पटलावर कसा दिसत होता याचे वर्णन चरित्र लेखकांनी चरित्र नायकांच्या जीवनाची कहानी सांगून केले आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे

1. मराठी चरित्र वाङ्मयाची सुरुवात नेमकी कोठून झाली याचा अभ्यास करणे.
2. मराठीतील आद्य चरित्र कोणते आहे याचा सूक्ष्मपणे आढावा घेणे.
3. चरित्र लेखनात कोणकोणत्या घटकांचा समावेश झाला आहे याची माहिती घेणे.
4. प्रत्येक काळात सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, धार्मिक,सांस्कृतिक परिस्थिती कशी होती याचा वेध घेणे.
5. चरित्र वाङ्मयाचे मराठी विषयातील स्थान समजून घेणे.

संशोधनाची पद्धती

'स्वातंत्र्यपूर्व कालखंडातील चरित्र वाङ्मयाचा उदय व विकास' या विषयावर संशोधन करीत असताना संशोधनासाठी प्राथमिक व दुय्यम साधनांचा वापर करण्यात आला आहे. संशोधनासाठी निवेदन पद्धतीचा व चरित्र नायकाच्या कार्याचे मूल्यमापन करण्यासाठी समीक्षा विश्लेषण पद्धतीचाही वापर केला आहे.

मराठी वाङ्मयात निर्माण झालेले चरित्र हे आजच्या मानवाचे गुरू आहेत. त्यासाठीच चरित्र वाङ्मयाचा अभ्यास आवश्यक आहे. स्थूलमानाने इतिहासकारांनी कालप्रवाहाचे आदिकाळ, वैदिक काळ, यादवकाळ, बहामनीकाळ, शिवकाळ, पेशवेकाळ, आंग्लकाळ, स्वातंत्र्यकाळ व स्वराज्यकाळ असे विभाग केले आहेत. प्रत्येक काळात माणसांचे जीवन बदलत गेलेले आहे. त्या त्या काळातील परिस्थितीवर मात करणारे काही चरित्रनायक त्या त्या काळात निर्माण झालेले आहेत.

आदिकाळ : पृथ्वीवर निर्माण झालेला आदिमानव पाने, फुले, फळे व कच्चे मांस खाऊन जगत असत. पुढे कालांतराने घनदाट अरण्यात झाडांच्या फांद्याच्या एकमेकांवर घर्षणाने अग्नीची निर्मिती झाली. त्यातून वणवा निर्माण झाला. या वणव्याच्या भक्ष्यस्थानी पाने, फुले, फळे, पशुपक्षी आले. "आदिमानवाने वणव्याने होरपळून गेलेले फळे व मांस खाल्ले. त्यांना ते अधिक चवदार वाटते. त्यामुळे आदिमानवाने अग्नीचे जतन केले. मानवाने कच्चे मांस भाजण्यासाठी व स्वसंरक्षणासाठी अग्नीचा उपयोग करण्यास सुरूवात केली. ही बाब शास्त्रज्ञांनी सिद्ध केली असून 'मानवाचे पूर्वज' या ग्रंथातून ह.अ. भावे यांनी ही बाब मांडली आहे."[2] आदिमकाळातील आदिमानवाची जीवनचर्या अत्यंत शांत होती. पोटाची भूक भागविण्याची प्रवृत्ती आदिमानवाने वीस लाख वर्षापर्यंत टिकवून ठेवली होती. अन्न मिळविण्यासाठी त्याला संघर्ष करावा लागत असे. एकूण माणसाने पाळीव प्राणी पाळायला सुरुवात केली. मोकळ्या जागेत विश्रांतीसाठी झोपड्या बांधल्या. झोपडीसमोर झाडांच्या बियांचे बीजारोपण केले. हीच बाब ह.अ भावे यांनी 'शिकार ते शेती' या ग्रंथातून विशद केली आहे. भावे लिहितात–"शेतीच्या शोधाने त्याचे केवळ बाह्य जीवनच बदलले असे नाही, तर त्याचे आंतरजीवनमानही बदलून गेले."[3] शेती शोधानंतर शेतीपूरक धंदे व व्यापार निर्माण झाले. त्यातून चलन, दागदागिने, देवदेवता, मंदिरे निर्माण करून मानवाने सुख शोधण्याचा प्रयत्न केला. सुखाचा खरा अर्थ सांगणारे तत्त्वचिंतकही निर्माण झाले. त्यामुळेच मानव स्वार्थी बनला. त्यातून टोळीयुद्धाला सुरुवात झाली. हडप्पा व मोहोजोदारो या समृद्ध संस्कृती जमीनदोस्त झाल्या. याचे वर्णन डॉ.अ.ना. देशपांडे यांनी केले आहे. सतत चालत आलेल्या मानवी विध्वंसक प्रवृत्तीला आवर घालण्यासाठीच चरित्राचे लेखन होत असते.

ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

वेदकाळ : मानवाने माणसांच्या सुख–समाधानासाठी वेगवेगळे मार्ग शोधून काढले. शत्रूपासून रक्षण व्हावा म्हणून विविध देवतांना आवाहन केले. आर्यांचे हे आवाहन ऋग्वेदातून वेदकाळात आले आहे. हिंदूंचे अनेक पुराणातही या देवतांच्या चरित्राने स्थान मिळविले आहे. या देवतांना शरण जावे एवढेच मानवाच्या हाती आहे. ऋग्वेदानंतरचा दुसरा ग्रंथ म्हणजे यजुर्वेद होय. या ग्रंथाचा कर्ता याज्ञवल्क असून त्याचे चरित्र पाहता तो स्वभावाने अत्यंत तापट असून त्याला कोणी विरोध केला तर तो त्या व्यक्तिचा प्राण घेत असे.

वेदकाळातील सामवेद हा असाच महत्त्वाचा वेद असून या वेदातून आर्यांनी अग्नीचे मोठेपण नमूद केले आहे. कारण अग्नी हा मानव जातीचा जसा रक्षक तसाच भक्षक आहे. वेदकाळातील चौथा वेद म्हणून ज्या वेदाला मान्यता दिली गेली आहे, तो अथर्ववेद आहे. अथर्ववेदाच्या मुळाशी यज्ञ व कर्मकांड हे ईश्वरप्रणित आहेत व त्यांचे विधिपूर्वक पालन करणे हीच मानवी जीवनाची इतिकर्तव्यता आहे, हे सूत्र अथर्ववेदातून सांगितले आहे.

यादवकाळ : इ.स. सातव्या शतकापासून नाथ संप्रदायी परंपरेने भक्तीचा नवा मार्ग निर्माण केला. मराठी वाङ्मयात भगवान महावीर, गौतम बुद्ध यांची चरित्रे लिहिली गेली आहेत. तसेच यादवकाळातील संत ज्ञानेश्वर व चक्रधरस्वामी यांचीही चरित्रे लिहिली आहेत. पल्लवांच्या आश्रयात आलेला कांचीचा वात्सायन पंडिताने 'कामशास्त्र' या ग्रंथाचे लेखन केले आहे. यादवकाळातील राजे लोकांची कामवासना किती ओंगळ रीतीने पुरविली जात होती याचे चित्र दिसते.[5] यादवकाळाची सामाजिक स्थिती दर्शविणारा ग्रंथ म्हणजे 'शुक्रनीती' होय. या ग्रंथाने त्याकाळी समाजमनात रुजलेल्या जातीसंस्थेला उघड केले आहे. मुख्य चार जाती असून, या जातीत संकर झाला असल्यामुळे हजारो जाती निर्माण झाल्या असे 'शुक्रनीती' ग्रंथकाराचे मत आहे.[6]

यादवकाळात जातीप्रथेचे निर्मूलन आणि स्त्रियांना धार्मिक बाबतीत समान हक्क प्रदान करण्याचे कार्य चक्रधर स्वामींनी केले. चक्रधर स्वामींनी आपल्या शिष्यांना 'आपली ग्रंथरचना मराठीतून करा' असा सल्ला दिला. त्यामुळेच नरेंद्र पंडितांनी 'रुक्मिणीस्वयंवर' सारखे ग्रंथ मराठीतून लिहिले. त्यामुळेच चक्रधर स्वामींना 'मराठीचे आद्यग्रंथकार' संबोधले जाते. चक्रधर स्वामींच्या निर्वाणानंतर म्हाइंभटानी शके 1205 मध्ये चक्रधर स्वामींचे चरित्र लिहिले. हा मराठी भाषेतील पहिला चरित्रग्रंथ असून, तो गद्यात्मक स्वरूपाचा असल्यामुळे समजण्यास सोपा आहे. या चरित्रग्रंथातून चक्रधरांचे जीवन, त्यांनी केलेले चमत्कार, तत्कालीन चालीरीती, व्रतवैकल्ये या सर्वांचे दर्शन होते. हाच ग्रंथ मराठी वाङ्मयातील गद्यस्वरूपात असलेले पहिले चरित्र होय.

बहामनी काळ : यादव काळानंतर बहामनी काळाला सुरुवात झाली. महाराष्ट्रातील संत एकनाथ आणि हिंदुस्थानचा बादशहा अकबर यांच्या काळास 'बहामनी काळ' असे म्हणता येईल. सम्राट अकबराच्या अगोदर इस्लाम आक्रमकांनी भयावह, भीषण आक्रमकता अवलंबिली होती. परंतु सम्राट अकबर सत्ताधीश झाल्यानंतर हिंदू प्रजेवर आपल्याला राज्य करावयाचे म्हणून त्यांच्याशी मिळतेजुळते घेतले. त्यामुळे सम्राट अकबराला 'हिंदूप्रिय' राजा म्हटले जात होते. सम्राट अकबराने सर्व धर्मातील चांगल्या गोष्टी निवडून सर्व धर्मापुढे ठेवल्या. हिंदुस्थानचा बादशहा म्हणून मराठी लेखकांनी सम्राट अकबराचे चरित्र लिहिले व त्यांचे मोठेपण सांगितले आहे. जातीभेद, धर्मभेद मिटवू पाहणाऱ्या सम्राट अकबराला इस्लामांनी प्रखर विरोध केला. असे असले तरीही अकबराच्या काळात इस्लामच्या अत्याचाराची धार मंदावली गेली.

शिवकाळ : बहामनी काळानंतर शिवकाळाला प्रारंभ झाला. शिवाजी महाराजांबरोबर असलेले, त्यांच्या कार्यासाठी मदत करणारे, गावकुसाबाहेर असलेल्या लोकांची चरित्रे स्वातंत्र्यानंतरच्या काळात लिहिली गेली. याचा उल्लेख 'सरंजामशाही' या ग्रंथातून डॉ.पी.ए. गवळी यांनी केला आहे.[7] शिवकाळातच संत तुकाराम व समर्थ रामदास स्वामी होऊन गेले. यांची चरित्रे प्रत्येक दशकात लिहिली आहेत. संत तुकारामांच्या तुलनेत समर्थ रामदासांची चरित्रे अधिक आहेत. याचे कारण अनादि काळापासून ब्राम्हणांचे ज्ञान मार्गावरील वर्चस्व होय. छ. शिवाजी महाराजांच्या राज्याभिषेकाला गागाभट्टाच्या वंशजांनी याच कारणाने विरोध केला. त्यांचा हा विरोध मनोज मोगले यांनी 'शिवकालीन ब्राह्मण' या ग्रंथातून नोंदवला आहे.[8] शिवकाळातील पाटील व देशमुख हेही चरित्राचे विषय झालेले आहेत. पाटील व देशमुख मंडळी शिवकाळात वतनदार मंडळी होती. वतनाच्या बळावर ते राजसत्तेला चिकटून राहत असत. म्हणूनच वतनदार, पाटील व देशमुख यांची चरित्रे मराठी वाङ्मयात आलेली आहेत.

पेशवेकाळ : शिवकाळानंतर पेशवेकाळाला सुरुवात झाली. या काळात पेशव्यांची चरित्रे तर लिहिली गेली आहेतच परंतु त्यांच्या आजूबाजूला वावरणाऱ्या दुय्यम लोकांचीही चरित्रे मराठी वाङ्मयात आलेली आहेत. या काळात धर्मसत्ता व राजसत्ता ब्राम्हणांच्या हाती एकवटली होती. मस्तानी, शमशेर, पुतळाबाई यांची चरित्रे मराठी लेखकांनी लिहिली आहेत. पेशव्यांच्या काळात अश्लिलपणाची सीमारेषा ओलांडलेल्या सुंदर स्त्रीला पेशव्यांकडून इनाम मिळत होता. याचा पुरावा धनंजय कीर यांनी 'म.जोतिबा फुले' या ग्रंथातून दिला आहे. पेशवेकाळाने स्त्रियांवर व शुद्रांवर अन्याय अत्याचार केला. पेशव्यांच्या अत्याचाराला बळी पडलेल्या कित्येकाचे आर्त स्वर

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq Mukhed Dist Nanded

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

दाबले गेले. 1960 नंतर मराठी साहित्यात 'दलित वाङ्मय' ही नवी शाखा रूढ होऊन बहरू लागली. [illegible] पेशवेकाळात दलितांवर जे अन्याय अत्याचार झाले होते. त्याचा प्रतिध्वनी थेट चरित्र वाङ्मयात उमटला त्यातूनच 'सिदनाक चरित्र' लिहिले गेले.[9] सिदनाक हा नानाचा विश्वासू नोकर होता. याचा उल्लेख नाना फडणवीस यांच्या चरित्रातून येतो.

आंग्लकाळ : पेशवेकाळानंतर आंग्लकाळाला सुरुवात झाली. दुसऱ्या बाजीरावाने इंग्रजी सेनापती माल्कम यांच्या हाती 4 जून 1818 रोजी सत्ता सोपविली. व्यापारी निमित्ताने आलेले इंग्रज खऱ्या अर्थाने मराठी राज्याचेही राज्यकर्ते झाले. इंग्रजांच्या राजवटीत सर्वांसाठी समान कायदे, कर्तृत्वाला महत्त्व, समान न्याय या गोष्टी जनतेला मनोमन पसंत पडल्या. इंग्रजी सत्तेच्या प्रारंभी राज्यकर्ते भारावून गेले. त्यांनी इंग्रजीत शिक्षण घेतले. अशा चरित्रात ना.सी. फडके (टेरेन्स मॅकॅस्विनी चरित्र), वि.दा. सावरकर (जोसेफ मॅझिनी), जे.एम. फिलीप (येशू ख्रिस्त चरित्र) यांच्या चरित्रांचा विचार करावा लागतो. 1946 साली 'अब्राहम लिंकनचे चरित्र' प्रसिद्ध झाले. त्याचे भाषांतर भा.रा. भागवत यांनी केले. प्रखर जिद्द आणि महत्त्वाकांक्षा असेल तर जीवनात यश मिळतेच हा मूलमंत्र जनतेपर्यंत पोहोचविण्यासाठीच भा.रा. भागवत यांनी अब्राहम लिंकनचे चरित्र भाषांतरीत केले. ब्रिटिश सत्तेचा काळ सुरु असताना हिंदुस्थानच्या स्वातंत्र्याची मागणी सुरु झाली. ही मागणी जहाल व मवाळ गटाकडून होऊ लागली. मवाळ गटाने अहिंसक मार्गाने स्वातंत्र्यप्राप्ती होईल असे गृहीत धरले. तर जहाल गटाने जाळपोळी, इंग्रज अधिकाऱ्यांचे खून करणे, रेल्वेमार्ग उखडून टाकणे, पोलीस चौकीवर हल्ला करणे अशा मार्गांचे अनुकरण केले. इंग्रजांच्या राजवटीत आलेल्या चरित्रांनी त्या काळातील लोकांत स्वातंत्र्याची जहाल प्रेरणा निर्माण केलेली होती.

निष्कर्ष

चरित्रलेखकांनी आजूबाजूची परिस्थिती पाहून चरित्रे लिहिलेली आहेत. तर कधी इतरांची दुःखे, श्रम, कष्ट आणि जीवन आपल्यापेक्षा खडतर होते हे दाखविण्यासाठी चरित्राचे लेखन केले आहे. याशिवाय थोर नायकापासून प्रेरणा मिळावी या हेतूने चरित्रलेखन केल्याचे दिसून येते.

संदर्भ

1. प्र.के. अत्रे, दलितांचे बाबा, परचुरे प्रकाशन, मुंबई
2. अंबाले सरदार, चीनचे आक्रमण, पद्मालय प्रकाशन, बीड, 1993
3. आपटे पा.श्री., गांधीची गोष्ट, कॉन्टीनेन्टल प्रकाशन, पुणे, 1950
4. आर्वीकर तेजस, मानवी जीवन उकल आणि क्रांती, आर्वी प्रकाशन, जळगाव, 1990
5. आळतेकर रा.ख., श्री समर्थ चरित्र, कॉन्टीनेन्टल प्रकाशन, पुणे, 1989
6. एड्रीज डी.पी., भगवान येशू ख्रिस्त, टोकळ प्रकाशन, पुणे, 1965
7. कानेटकर शं.के., स्वप्नभूमी, व्हिनस प्रकाशन, पुणे, 1965
8. काळे वैजयंता, कर्मवीर वि.रा. शिंदे, काळे प्रकाशन, ठाणे, 1962
9- कीर धनंजय, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, 1989

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise without the prior permission of the copyright holder.

Editor : [illegible]

Publisher : Swarangi Publication

Sector 10-B, Vasundhara

Ghaziabad (U.P.) 201012

Phone : [illegible]

E-mail : swarangipublication@gmail.com

Website : www.swarangipublication.com

Book : [illegible]

Edition : January 2021

ISBN : [illegible]

Price : [illegible]

Printed By : Swarangi Printers

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya

Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

अनुक्रमणिका

१. [illegible] — १-७

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

२. [illegible] — ८-१२

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

३. [illegible] — १३-१९

[illegible] विज्ञान महाविद्यालय, [illegible]

४. [illegible] — १९-२४

[illegible]

५. [illegible] — २५-२६

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

६. [illegible] भूमिका — २७-३०

[illegible] कला महाविद्यालय, [illegible]

७. [illegible] प्रदेशातील आलेख प्रकार — ३१-३५

[illegible]

८. [illegible] — ३६-४१

[illegible]

९. [illegible] अध्ययन — ४२-४५

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

१०. [illegible] आधार, [illegible] — ४६-४८

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

११. [illegible] महत्त्व आणि समस्या — ४९-५६

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

१२. हिंदी [illegible] भू-आर्थिक महत्त्व — ५७-६१

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

व

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

१३. [illegible] आणि [illegible] सुरक्षितता — ६२-६५

[illegible]

१४. [illegible] — ६६-७०

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

१५. [illegible] — ७१-७५

[illegible] महाविद्यालय, [illegible]

१६. [illegible] — ७६-८२

[illegible]

10

भारतीय लोकशाहीपुढील आव्हान: दहशतवाद

प्रा. डॉ. सूर्यकांत लक्ष्मण सकनूरे

प्रस्तावना: दहशतवाद किंवा आतंकवाद हा नवीन विषय नाही. दहशतवाद सर्वच राष्ट्रांमध्ये मोठ्या प्रमाणात पसरलेला असून भारतातील दहशतवाद हा तर मोठा चिंतेचा विषय बनला आहे. आधुनिक काळात दहशतवाद किंवा आतंकवाद ही संज्ञा सर्वप्रथम 1789 मध्ये घडून आलेल्या फ्रेंच राज्यक्रांतीमधून उदयास आली. दहशतवादी म्हणजे अनेक संघटना स्वतःला मार्क्सवादी, लेनिनवादी म्हणवून घेतात, मात्र कार्ल मार्क्स आणि लेनिन यांनी आपल्या विचारात कोठेही दहशतवादाचे समर्थन केलेले नाही. उलट मार्क्सने दहशतवादी कृत्यास 'अपरिपक्व आणि मूर्खपणाची कृती' असे म्हटले आहे. आज विज्ञान आणि माहिती तंत्रज्ञानाच्या वेगात आलेल्या प्रचंड प्रगतीमुळे दहशतवादास आंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त झाले आहे.

आज 200 हून अधिक आतंकवादी संघटना जगाच्या पाठीवर अस्तित्वात आहेत. 'समकालीन असंतुष्टतेचा' हे लोकशाहीचे रूप आहे. दहशतवादाच्या मुळाशी सामाजिक, राजकीय, सांस्कृतिक आणि आर्थिक कारणे पहावयास मिळतात. 'दहशतवाद' हा शब्द उच्चारताच आपल्या डोळ्यांसमोर गोळीबार, जखमी व्यक्ती, हत्या, रक्ताचे थारोळे चित्र उभे राहते.

उद्दिष्टे : 1) जागतिक दहशतवादाचे स्वरूप अभ्यासणे. 2) भारतातील दहशतवादाचे स्वरूप अभ्यासणे.

संशोधन पद्धती

सदर शोधनिबंधासाठी दुय्यम साहित्याचा आधार घेतला आहे. दुय्यम साहित्यात इंटरनेट, संदर्भ ग्रंथ, दैनिक वर्तमानपत्रातील लेख, पुस्तके, मासिके इत्यादींचा आधार घेतला आहे.

दहशतवाद - अर्थ व व्याख्या

दहशतवाद म्हणजे 'दहशत' आणि त्यातून पसरणारे [illegible] वाद म्हणजेच विशिष्ट विचारसरणीच्या अतिरेकी वापरातून सर्वसाधारण समाजावर सामूहिक, वैयक्तिक नरसंहाराच्या अथवा उपद्रवी दहशत निर्माण करणे.2 यात केवळ बॉम्बहल्ले, गोळीबार, जमावाकडून उद्रेकी हल्ले एवढेच येत नाही तर एखाद्या विशिष्ट विचारसरणीच्या कट्टरतावादातून धार्मिक तणाव निर्माण करणे, संस्कृती-रूढी परंपरांच्या नावाखाली स्वतःचा अजेंडा मुक्तीच्या पद्धतीने राबविणे, आर्थिक अथवा सत्तेचा वापर करून असंविधानिक पिळवणूक करणे याचाही दहशतवाद संबोधणे चुकीचे ठरणार नाही.

डॉ.मधुसूदन रेड्डी:

"दहशतवाद म्हणजे विशिष्ट राजकीय उद्दिष्ट प्राप्त करण्यासाठी हिंसाचार संघटितपणे केलेली कृती होय."3

आंतरराष्ट्रीय विश्वकोशानुसार:

दहशतवाद म्हणजे अशी पद्धती की ज्यात संघटित गट वा पक्ष आपले घोषित उद्दिष्ट, मुख्यतः हिंसेचा पद्धतशीर वापर करून साध्य करण्याचा प्रयत्न करतात.

लॉर्ड ब्रेस:

"राजकीय उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी सरकारच्या किंवा व्यक्तीस विशिष्ट प्रकारे [illegible] भीती निर्माण करण्याच्या उद्देशाने केलेली हिंसात्मक गुन्हेगारी स्वरूपाची कृती म्हणजे दहशतवाद होय."4

[illegible]:

"एखाद्या विशिष्ट राज्याच्या अथवा [illegible] प्रकारे करण्यासाठी [illegible] काही व्यक्तींच्या किंवा समूहाच्या दहशत निर्माण करण्याच्या उद्देशाने केलेला प्रयत्न म्हणजे दहशतवाद होय."5

दहशतवादाचे स्वरूप

- 20 व्या शतकाच्या पूर्वार्धात साम्यवाद, अराजकतावाद, नाझीवाद आणि फॅसिस्ट विचारसरणीच्या [illegible] मागणी [illegible] राजकीय दहशतवादाला [illegible] 1960 च्या दशकात दहशतवादाचा प्रसार करण्यास प्रारंभ झाला. [illegible] दहशतवादाच्या प्रकारात राष्ट्रीय दहशतवाद, धार्मिक दहशतवाद, [illegible] दहशतवाद, प्रादेशिक दहशतवाद, राजकीय दहशतवाद, सामाजिक दहशतवाद, क्रांतिकारी दहशतवाद, [illegible] यांचा समावेश होतो.6

दहशतवादाची मान्य असलेली कोणतीही व्याख्या नाही. दहशतवाद ही अशी कृती आहे की [illegible] दहशतवादी [illegible] 26/11 च्या मुंबईवर झालेला हल्ला [illegible] दहशतवाद [illegible] आहे. [illegible] दहशतवादाचे स्वरूप [illegible] म्हटले आहे.

[illegible] 20 व्या शतकातील 70 च्या दशकात [illegible] आहे.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukhed, Dist. Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1) [illegible]
2) [illegible]
3) [illegible]
4) [illegible]
5) [illegible]
6) [illegible]
7) [illegible]
8) [illegible]

2020-21

ISSN: 2454 – 7905

SJIF Impact Factor: 6 . 91

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

A Peer Reviewed Referred Journal

Quarterly Research Journal

Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering, Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

www.wiidrj.com

Vol. I ISSUE – XXVI Year – 6 8 March 2021

किसान शिक्षण प्रसारक मंडळ, उदगीर द्वारा संचलित

महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर जि. लातूर (महाराष्ट्र)

(एक दिवशीय आंतर - विद्याशाखीय राष्ट्रीय चर्चासत्र)

महिला सबलीकरण - वास्तव आणि अपेक्षा

:: मुख्य संपादक ::

प्राचार्य डॉ. वसंत बिरादार

:: संपादक ::

डॉ. डी. डी. चौधरी

:: सह संपादक ::

डॉ. एन. यु. मुळे

:: समन्वयक ::

डॉ. एस. जी. ससाणे

Address for Correspondence

Mrs. Pallavi Laxman Shete

Principal, Sanskrti Public School, Nanded (MH. India)

Website: www.wiidrj.com

House No.624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (KH), Nanded – 431605 (India - Maharashtra) Email: Shrishprakashan2009@gmil.com umbarkar.rajesh@yahoo.com

Mob. No: +91-9623979067

PRINCIPAL

[illegible]	महिला सक्षमीकरणात बचत गटाचे योगदान	सौ. पल्लवी प्रकाश कांबळे श्री.प्रकाश शियराम कांबळे	312
[illegible]	सामाजिक कायदे आणि महिला सक्षमीकरण	ससाणे आदित्य देविदास	315
[illegible]	महात्मा फुले आणि महिला सक्षमीकरण	प्रा. डॉ. सतीश गंगाराम ससाणे	318
[illegible]	भारतातील महिला सक्षमीकरण सामाजिक चळवळीच्या संदर्भात	प्रा.डॉ. सूर्यकांत लक्ष्मण सकनुरे	320
[illegible]	महिला सबलीकरणात बचत गटाची भूमिका	प्रा. डॉ. एस. जी. अन्सारी	323
[illegible]	महिला सबलीकरण काळाची गरज	प्रा. डॉ. जितेंद्र पांडूरंगराव काळे	326
[illegible]	स्त्रीभ्रूण हत्या : कारणे व उपाय एक अभ्यास	प्रा.डॉ.सुरेखा वैजनाथ दाढगे	329
[illegible]	महिला सक्षमीकरण आणि भारतीय कायदे	प्रा. डॉ. वसंत पांडुरंग सरवदे	332
[illegible]	अहिल्याबाई होळकर महिला सबलीकरणाचे एक प्रतिमान	डॉ. शशिकांत गोकुळ साबळे	334
[illegible]	क्रीडा क्षेत्रातील महिला सक्षमीकरण	प्रा. डॉ. कलवले गोविंद केरबा	338
[illegible]	भारतातील महिलांचे राजकीय सक्षमीकरण- मूल्यांकन	प्रा. डॉ. अशोक रामसिंग बसावे	340
[illegible]	राष्ट्र उभारणी मध्ये महिला सबलीकरणाची भूमिका	डॉ नीता रामेश्वर कळसकर	345
[illegible]	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे महिला सक्षमीकरणाचे विचार आणि भारतीय कायदे	प्रा.संतोष रघुनाथ कांबळे	347
[illegible]	क्रीडा क्षेत्रातील महिला सक्षमीकरणाचे योगदान	प्रा.डॉ.खुशाल पांडुरंग वाघमारे	352
[illegible]	महिला सक्षमीकरण आणि सावित्रीबाई फुले :एक अन्वयार्थ	प्रा. बालाजी गणपतराव भंडारे	354
[illegible]	महिला सक्षमीकरण व भारतीय कायदे	सो. गिरी माधुरी गोविंद	356
[illegible]	नोकरी करणाऱ्या महिलांच्या आरोग्यविषयक समस्या व त्यावर साधे सोपे उपाय	डॉ. संजीवनी श्रीपाद नेरकर	359
[illegible]	घरगुती हिंसाचाराची कारणे, परिणाम व उपाययोजना	प्रा.बळीराम पवार	362
[illegible]	स्त्री मुक्ती चळवळ - स्थित्यंतरे आणि आव्हाने	प्रा. डॉ. सौ. सुनिता एस. राठोड	364
[illegible]	महिला सक्षमीकरण व भारतीय कायदे	प्रा.गजानन आनंता देवकर	370
[illegible]	महिला सक्षमीकरण - वास्तव : स्त्रीभ्रुणहत्या एक [illegible]	डॉ. एस. डी. दहिकांबळे	373
[illegible]	जेंडर बजेट - महिला सक्षमीकरण व कोव्हिड परिणामे	डॉ.दुर्गादास दि. चौधरी	377
[illegible]	महिला सक्षमीकरण व भारतीय कायदे	डॉ. माधव कदम	382

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidy
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Na

ील महिला सक्षमीकरण सामाजिक चळवळीच्या संदर्भात

प्रा. डॉ. सूर्यकांत लक्ष्मण सकनूरे
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुक्रमाबाद, ता.मुखेड, जि.नांदेड.

: व्यवस्थेमध्ये महिलांचे स्थान पुरुषांबरोबरचे असावे या विचाराने जगातील अनेक देशात महिलांनी
लोकशाही शासनव्यवस्थेत महिलांचा कार्यभाग पुरुषाइतकाच महत्त्वाचा आहे. कारण लोकशाहीच्या
सहभाग पुरुषांचा असतो तेवढाच सहभाग महिलांचा असावयास पाहिजे. स्वातंत्र्योत्तर काळात भारतीय
कार मोठ्या प्रमाणावर चर्चिला गेला. महिलांच्या चळवळी महिलांनीच चालविल्या असे नव्हे तर अनेक
ा चळवळींशी आपले नाते जोडले. भारताच्या आणि जगाचा आजपर्यंतचा इतिहास पाहिल्यास महिलांनी
षांपेक्षाही आघाडी घेतलेली दिसते. पण काही वेळा स्त्रियांच्या विकासाचा मार्ग पुरुषांनी अडविलाआहे हे
 नाही.

म्हणजे काय?

 कल्याण कार्यक्रमाच्या माध्यमातून आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व राजकीय सर्व क्षेत्रामध्ये महिलांना
ने हक्क व दर्जा प्रदान करून देणे, विकासाची संधी उपलब्ध करून देणे आणि स्त्री-पुरुष असमानता नष्ट
ा स्त्री सक्षमीकरण असे म्हणतात.

तीचा अर्थ मुळात निकोप दृष्टीने सुद्धा माणुसकीच्या दृष्टीतून स्वतःकडे इतर स्त्रियांकडे व पुरुषांकडे देखील
. वस्तुस्थिती अशी आहे की, स्त्री मुक्तीचे आंदोलन हे पुरुष दास्यापासूनचे मुक्ती आंदोलन आहे.
चे आंदोलन नाही. स्त्री आणि पुरुष हे एकमेकांना पुरक आहेत. कोणीही श्रेष्ठ किंवा कनिष्ठ नाही. दोघांनी
 आणि एकमेकांच्या मर्यादा समजून घेऊन जगायचे आहे. सबलीकरणाचा नंतरचा भाग स्त्रीस आर्थिकदृष्ट्या
आहे.[२] कारण आर्थिक ताकद नसल्यामुळेच स्त्रीला दास्यत्व पत्करावे लागत आहे. नेकआम्बर सारख्या
सक्षमीकरण म्हणजे एखाद्यावर असलेले प्रभावतंत्र, दडपणूक करणे म्हणजेच सक्षमीकरण वाटते.[१]
ई म्हणतात, 'स्त्रियांची चळवळ म्हणजे समानता आणि स्वातंत्र्य हे समान ध्येय मिळविण्यासाठी केलेला
णि स्त्रियांच्या जीवनावर परिणाम करणाऱ्या निर्णायक बाबी विषयी संवेदनशीलता यामध्ये गृहीत धरलेली

खंड (प्राचीन)

जिक, आर्थिक आणि राजकीय कारणांमुळे स्त्रियांना शिक्षण देणे अनिवार्य मानण्यात आले नाही. त्यामुळे
लांना त्यांच्या हक्काविषयी जागरुक राहता आले नाही.[१] भारतामध्ये प्राचीन काळात स्त्रीला महत्त्वाचा दर्जा
ारीची ज्या ठिकाणी पूजा केली जाते तेथे देवता वास करते या श्रुती वचनावरून हे पटते.

तकात कर्नाटकात स्त्रियांना सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजकीय अशा सर्व प्रकारचे हक्क प्राप्त
स्त्रीविषयक कार्य पाहिले असता स्त्री मुक्ती चळवळीचे ते आद्य प्रणेते ठरतात. महात्मा बसवेश्वरांनी
स्काराचा अधिकार का नाही?' असा प्रश्न आपल्या माता-पित्यांना केला. पण त्यांचे उत्तर त्यांना मिळाले
तावादी नवधर्माची स्थापना (लिंगायत) केली. वैदिक समाजाने शुद्र, अतिशूद्र व स्त्रियांना धार्मिक

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed Dist.Nanded

अधिकार, आणि स्वातंत्र्य नाकारले होते. धोंडो केशवांनी असल्याने हा वर्ग ब्राम्हण धर्मांतून [illegible] वंचित होता [illegible]
स्त्रियांच्या हातावर तुळशीपत्र दिले. धर्मकेवल समानाने आणि माणूस म्हणून मानणाऱ्या तिथिमध्ये [illegible]
त्यांच्या या हालाखीत सावित्रीबाईंनी स्त्रियांचे पुनर्वसनाचे स्थान मांडले. भारताचा इतिहास [illegible]
लोकांनी स्त्री-पुरुष समानतेचे धडे कोर्टाच्या हाती दिले. म.शिंदेंसारखे आपल्या स्वातंत्र्यात स्त्रियांचे [illegible]
अबाधित ठेवण्याचा प्रयत्न केला. पण दुसऱ्या बाजूने समाजातील लोकांनी सामान्य असल्यामुळे स्त्रियांना [illegible]
आली तरा : पडदा पद्धती.

आधुनिक काळ

एकोणिसाव्या शतकातील महात्मा फुलेंचे स्त्रीविषयक कार्य अतिशय महत्त्वाचे आहे. [illegible]
कार्यक्षेत्र मर्यादित होते. शिक्षणापासून स्त्री वंचित होती म्हणून फुलेंनी समाजातील अज्ञान [illegible]
त्यापासून घेण्याचा प्रयत्न केला आणि १८४८ साली पहिली मुलींची शाळा पुणे येथे केली आणि [illegible]
स्वतःच्या पत्नी सावित्रीबाई फुले यांना या कामात सोबत घेतले. त्यामुळे [illegible]
घेतले. त्यानंतर राजर्षी शाहू महाराज, महात्मा गांधी, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, [illegible]
रॉय, स्वामी विवेकानंद यांनी स्त्री ही अशिक्षित राहिली पारंपरेतून बाहेर पडावी म्हणून कार्य केले. त्यामुळे [illegible]
काम करताना दिसून येते.

भारतामध्ये राज्यकारभार करणाऱ्या स्त्रिया काही कमी झाल्या नाहीत. भारताच्या इतिहासात [illegible]
चौधरी, अहिल्याबाई, ताराबाई, जिजाबाई, इंदिरा गांधी अशी कितीतरी नावे राज्यकारभार केलेल्या [illegible]
घेतील. भारतीय पातळीवर सरोजिनी नायडू, ॲनी बेझंट, विजयालक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी, [illegible]
राजकुमारी अमृत कौर, सुषमा स्वराज असे अनेक उदाहरणे देता येतील की त्यांनी आपल्या कर्तृत्वाने [illegible]
भारत कायम केली.

विविध विचारवंतांची मत-मतांतरे

भगवान महावीरांच्या मते, स्त्री आणि पुरुष समानतेची स्थापना येथे करणे आहेत. [illegible]
दिसते. इतिहासाची पाने चाळून पाहिल्यास तर असे लक्षात येते की, स्त्रीचे समाजात कमी [illegible]
जायचे. भगवान महावीर यांना या भारतीय लोक मानत. [illegible]
समाजातील स्त्रियांना महत्त्वाचे स्थान आणि सन्मान नव्हते. [illegible]
पुरोहितांनी [illegible] स्त्रियांच्या उपभोग [illegible] होते. [illegible]
म्हणून मानले जात आहे.[1]

म.फुले म्हणतात की, भारतात इंग्रजांच्या आगमनापासूनच स्त्रीशिक्षण [illegible]
पुणे येथे मुलींसाठी पहिली मुलींची शाळा पुणे येथे चालू केली.[2] त्यांनी [illegible] सावित्रीबाई [illegible]
केले व त्यांच्यावर शिक्षिकेचे काम सोपविले. या कामासाठी फुलेंना [illegible]

ज्ञानाच्या क्षेत्रात स्त्री आणि पुरुष यांना समान संधी असावी अशी [illegible] होती. [illegible]
स्त्रियांना [illegible] शिक्षण समाजात [illegible] स्थान मिळवून देण्याचे श्रेय [illegible]
[illegible] स्त्रियांना बाहेर काढले. शिवाय स्त्रीशिक्षणाची [illegible] दिले व शिवाय पुढे आणि

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या मते, कोणत्याही देशाची किंवा समाजाची प्रगती मोजण्याची [illegible]
प्रगतीवरून मोजली जावी. ज्या समाजात स्त्रिया पुढे तो समाज पुढे असे म्हणत. [illegible]
स्त्रियांच्या [illegible] अनेक [illegible] तर तो समाज आणि देश पुढे जाऊ शकतो.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

IMPACT FACTOR 6.10

ISSN 2229-4929

UGC Approved International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

URA

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XXI, Vol. V
Year - XI (Half Yearly)
Sept. 2020 To Feb. 2021

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 -241913
9423346913 / 9503814000
9637935252 / 7276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (MS)

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Professor & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur(M.S.) India.

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Rajendra R. Gavhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldhana

Dr. D. Raja Reddy
Chairman, International Neuro Surgery Association,
Banjara Hill, Hyderabad (A.P.)

Dr. E. Siva Nagi Reddy
Director, National Institue of Hospitality & Tourism Management,
Hyderabad (A.P.)

Dr. A. H. Jamadar
Chairman, BOS Hindi,SRTMUN & Head, Dept. of Hindi, BKD College,Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Yu Takamine
Professor, Faluty of Law & Letters,
University of Ryukyas,
Okinawa. (Japan).

Dr. Shaikh Moinoddin G.
Dept. of Commerce,
Lal Bahadur Shastri College,
Dharmabad, Dist. Nanded(M. S.)

Prashant Kshirsagar
Dept. of Marathi,
Vasant Mahavidyalaya
Kaij, Dist. Beed (M.S.)

Scott A. Venezia
Director, School of Business,
Ensenada Campus,
California, (U.S.A.)

DEPUTY-EDITOR

Dr. N. G. Mali
Head, Dept. of Geography,
M. B. College,
Latur,Dist. Latur (M.S.)

Dr. Babasaheb M. Gore
Principal,
Smt. S.D.D.M.College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

CO-EDITORS

Dr. V.J. Vilegave
Head, Dept. of P.A.,
Shri. Guru Buddhiswami College,
Purna, Dist. Parbhani (M.S.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History
Shivjagruti College, Nalegaon,
Dist. Latur. (M.S.)

Dr. S.B. Wadekar
Dept. of Dairy Science,
Adarsh College,
Hingoli, Dist. Hingoli (M.S.)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
...rao Deshmukh College,
... Dist. Latur (M.S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

A Study of Personal and Social Experiences of Mahatma Gandhi in My Experiments with Truth

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

arguments at home it was decided to send him for higher studies to England. Gandhiji's faith in vegetarianism and atmosphere of England were two poles. His last effort to make a public speech in England was on the eve of his departure for home. He got over shyness in South Africa. He hesitates whenever he has to speak before strange audience. When he stayed in Ventnor his landlady's daughter took him to the lovely hills. Due to shyness he could not freely talk to her. He became friend of an old lady. She invited him for dinner. Gandhiji found difficult to practice at the bar, He had studied the law but not learnt to practice. Dadabhai Nauroji encouraged him for practice in court.

Gandhiji returned from England to India. His brother received him on dock. He told him about death of mother. Gandhiji was in grief. On return Dr. Mehta introduced him with several friends. Gandhiji believes in Hindu theory of 'Guru'. His brother believes that Gandhiji will prove him very efficient lawyer at court. First case was of Mamibai. He charged thirty rupees fees. It was first time of Gandhiji to stand before Indian court. He was not able to do cross examine and left court. His second case was to draft a memorial. In 1893 he left for South Africa. Abdullah seth was at port to receive him at Natal. He observed that Indians were not held in much respect. Living of Gandhiji was expensive like Europeans. The Indians in Natal were divided into three groups. Muslims, Hindus and Parsis. Englishmen use to call Indians labours. The Law society of Natal opposed his application for admission as an advocate of Supreme Court. The chief justice over ruled all objections and said that lawmakes no differences. Gandhiji practiced law as subordinate occupation. He concentrated on public service. Gandhiji formed organization of people in Natal and named it Natal Indian Congress. Gandhiji was its secretary . Gandhiji devoted himself to the service of poor.

The desire of realization made Gandhiji absorbed in the service of community. He realized that God could be realized through community service. He read number of books on religion. Expenses were very high and he had to keep his position as an Indian Barrister in Natal. After staying for three years in South Africa he decided to leave for India in 1896 for six months to bring his wife and children and then return to settle. He gave the charge of responsibilities of congress in Natal. On return, he wrote green pamphlet about condition of Indians in South Africa. Papers in Natal and England took no

PRINCIPAL
Swami Vivekanand ...

[illegible] [redacted] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

cruel customs should be stopped. Gandhi is of opinion that 'Killing or Injury to life can be an act of violence only under certain conditions. These conditions are anger, pride, hatred, selfish consideration, bad intention and similar other consideration. Any injury to life done under these motives is 'Ahimsa'. He attended meetings of Brahmo samaj at Calcutta. He enjoyed fine Bengali music in function. From Calcutta he travelled to Banaras where he did worship of God Vishvanath. On receiving call from South Africa he left for South Africa as per his promise given to Indians in South Africa. Gandhiji had to prepare for a case for the Indians in Africa. He got permission but officials thought that Gandhiji had entered without permission. Gandhjis theosophist friend intended to draw him into their society. He read Swami vivekanand, Bhagwat Gita. Gita exercised great influence on Gandhiji. He thought as God created us, he will take care of us. He gave up all his savings to his brother and decided to live life without any expectation. Ideas of sacrifice and simplicity became more and more realizing to him. He loved all human being equally. He did not make any superfluous distinction man and man. He was serious about untouchables. Gandhiji was sent to jail in 1908. It was his first time. On release from jail Gandhiji gave up milk and cereals. He commenced fasting as a means of self-restraint. He started to keep Ekadashi fast. He also persuaded the muslim youngsters to observe Ramzan fast. The spiritual training of boys was a much more difficult task than their physical and mental training. Gandhiji wanted to acquaint every student with the elements of his own religion and therefore provided for such knowledge as best as he could do. He asks children to read moral books for spiritual development. Satyagraha is essentially based on love. In fact, according to Gandhi, Satyagraha appears to be as a religious pursuit.

In 1914 Gokhale instructed Gandhiji to return to India. He reached Poona. Gokhale and other member overwhelmed him. He wanted to have an ashram in Gujrat to settle down. Gokhale approved the idea and agreed to give him expenses for Ashram. He went to Porbandar where he met his brother's widow and formed ashram at Sabarmati. In India Gandhiji applied weapon of Ahminsa in Champaran. He also launched Kheda satygrah struggle. Gandhiji made good practice for Hindu Muslim unity and extended support for Khilafat movement in 1919. Tragedy at Jaliyanwala Bagh made him sad. He wanted to go to Amritsar but was arrested and sent to Bombay jail. The news of h

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidya

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

References :-

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

INDEX

Sr. No.	Title for Research Paper	Page No.
1	India : Strategic Challenges and Responses [illegible]	[illegible]
2	Rise of land building, Inflation and its Causes in India [illegible]	7
3	ICT Education in India: Special Reference to Distance Education Mode and Major Challenges Dr. M. M. [illegible]	19
4	Agricultural Land Utilization : Ahmedpur Taluka Dr. [illegible]	23
5	Spatial Distribution of Market Centers in Nanded District : A Geographical Study [illegible]	27
6	Anna Hazare: The Face of New Gandhigiri Dr. Anil [illegible]	32
7	[illegible] डॉ. [illegible]	37
8	[illegible] डॉ. [illegible]	43
9	[illegible] डॉ. [illegible]	47
10	दलित साहित्याची [illegible] आणि दलित [illegible] डॉ. [illegible]	52
11	आरक्षण धोरण आणि सामाजिक न्याय डॉ. [illegible]	57

[illegible] [redacted] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[redacted] [illegible] [redacted]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वाक्यों को तोल–तोल कर इस प्रकार रखा है कि प्रत्येक वाक्य अपना वाक्यों के विषयानुसार परस्पर अटूट होकर जुड़े हुए है। हम देखते है कि उनकी नाटकों की भाषा में किसी भाव या विचार को अत्यंत सारगर्भित सूत्र वाक्य में रखने की क्षमता डॉ. शंकर शेष की भाषा में है। अतः डॉ. शंकर शेष के प्रमुख कुछ नाटकों में भाषा का प्रयोग किस प्रकार हुआ है हम निम्न उनके नाटकों में देखते है।

१.मूर्तिकार:

'मूर्तिकार नाटक की भाषा सरल स्वाभाविक, विषयानुकूल तथा रोचक है। नाटक में डॉ. शंकर शेष ने भावावेश, परिहास तथा व्यंग्य के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। संपूर्ण नाटक में कोमलता और भाव व्यंजकता है। मूर्तिकार की भाषा नाटक के पात्रों की मानसिक स्थिति के अनुसार है। नाटक के कारण संवादों में भाषागत व्यंग्यपूर्ण है। नाटक की भाव गरिमा की अभिवृध्दि करने वाली भाषा का प्रयोग हुआ है। नाटक के संवाद की भाषा बोलचाल की प्रचलित भाषा है। नाटक में बिन्दु–बिन्दी का प्रयोग, सूक्तियों का प्रयोग दिखाई देता है। जैसे — आप खरीदेंगे कृकू और साहब, छछूंदर के सिर चमेली का तेल। कृकू तुमने आज साँप को छेडा है। कृकू उसकी एक ही फूत्कार में तुम्हारी यह सब अकड हवा हो गयी तो कहना। इस घर की ईंट से ईंट बजा दूँगा कृकृ तु म्हारे कलाकार को गलियों की धूलन फाँकना पडे तो मेरा नाम मुंशी नहीं। सतीश आस्तीन का साँप है। सतीश जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद करता है। नाटक की वाक्य — रचना चुस्त एवं संक्षिप्त बनी है। मूर्तिकार नाटक में अंग्रेजी, उर्दू, अरबी तथा, फारसी शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। जैसे अंग्रेजी शब्द फोटोग्राफी, मिस्टर प्रेस, नोटिस, पेंटर, वारंट, गुडबाय, फिल्म, आर्डर, चैक आदि तथा उर्दू, अरबी, फारसी शब्द — अखबार, इतंजाम, अक्लमंद, बेफिक्रीर, तबियत, बेताब, मिजाज, तकलीफ, दफ्तर, पैगाम, इन्सानियत, बरकत, गजब, नतीजा, परवाह, जनवा, इश्तिहार, तस्वीर जबान आदि। अतः मूर्तिकार की भाषा अत्यन्त सरल स्वाभाविक सरल है। भाषा में कोमलता एवं भाव व्यंजकता होने से रसपूर्ण बनी हुई है।

२.रत्नगर्भा:

रत्नगर्भा की भाषा सरल, सहज, सुबोध, एवं बोलचाल का है। उसका भाषा में उक्तियों का चमत्कार, सहज प्रवाह, छोटे–छोटे वाक्य मुहावरों का प्रयोग किया है। रत्नगर्भा नाटक की भाषा पात्रानुकूलएवं संवादानुकूल है। रत्नगर्भा नाटक के संवाद अर्थपूर्ण है। रत्नगर्भा नाटक में मुहावरों का प्रयोग हुआ है। जैसे—आस्तीन का साँप, पानी सिर से गुजरना, उल्लू का पट्ठा, आदि। रत्नगर्भा नाटक में संस्कृत के शब्दों का भी

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist.Nanded

Issue : XX, Vol. III
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.21
ISSN 2250-169X
Dec. 2021 To May 2022

प्रयोग हुआ है। जैसे— [illegible], आदि। [illegible] नाटक में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग जैसे— [illegible], आदि, अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है। साथ ही [illegible] में उर्दू—अरबी—फारसी शब्दों का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। जैसे—[illegible], इंतजार, मरीज, निगाह, मेहमान, [illegible], बुखार आदि।

३.नई सभ्यता नये नमूने:

नई सभ्यता नये नमूने नाटक की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक, विषयानुकूल रोचक, बोधगम्य एवं पात्रानुकूल है। डॉ. शंकर शेष ने नाटक में अपनी भाषा में बोझिलता आने का प्रयत्न न करते हुए उसके द्वारा समकालीन जीवन के तनाव बोध को पकड़ने की सार्थक कोशिश की है। नाटक में डॉ. शंकर शेष ने मुहावरे, मुक्ति-लोकहावतें, संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मिलता है। जैसे—संस्कृत शब्द — भाग्य, कर्तव्य, कन्हैया, कृष्ण, प्रतिबिम्ब, आदि। अरबी, फारसी, शब्द — ख्याल, तारीफ, जरूरत, तमाशा, इंतजार, मुहब्बत, बेवकूफ, आवाज, मजाक, मुलाकात, मुश्किल, दास्तान, अदालत, आवाज, फैसला, इजाजत, नजर, आदि, अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है। साथ ही अंग्रेजी शब्द — पिक्चर, फ्रेम, चेक, सेक्शन, टेलीफोन, डिनर, [illegible], ग्रेज्युएट, ऑफिस, टेक्निकल, एडवांस, बैंक स्टेशन आदि शब्दों का प्रयोग — जैसे आँखों में धूल झोंकना, मुँह में ताला लगाना, दाल में काला नजर आना, [illegible] आदि। कहावतों का भी प्रयोग इस नाटक में हुआ है। जैसे — यह मुँह और मसूर की दाल, एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती, सांप को छेड़ना और [illegible] को छेड़ना एक जैसा ही समझो, आदि। वाक्य की दृष्टि से भी नाटक की भाषा प्रभावशाली रही है।

४. बिन बाती के दीप:

डॉ. शंकर शेष का यह बहुचर्चित नाटक रहा है। इस नाटक की भाषा सुबोध एवं सहज है। इस नाटक में नाटकीय भाषा की विशेषता स्पष्ट दिखाई देती है। भाषा सुबोध एवं सहज होने के कारण यह नाटक बोधगम्य बना है। भाषा में कहीं भी क्लिष्टता नहीं है, साथ ही भाषा को अनावश्यक सौंदर्य से नहीं सजाया गया है। भाषा में [illegible] होने के कारण बोझिलता का तनाव दूर होने में मदद मिलती है। [illegible]

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. [illegible] Dist. Nanded

Swami Vivekanand Mahavidyalaya Mukramabad Tq Mukhed Dist Nanded

के माध्यम से अंग्रेजी एवं हिन्दी मिश्रित भाषा का प्रयोग कर हास्य का परिवेश निर्माण करने की कोशीश की गई है। कहीं–कहीं पर हास्य व्यंग्य का प्रयोग हुआ है। इस नाटक की भाषा पात्रानुकुल होने कारण इस नाअक के पात्र सजीव हो उठते है। नाटक की भाषा प्रसंगानुकूल है। नाटक की भाषा में मुहावरे तथा सुक्तियो का प्रयोग हुआ है। अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, – फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। अत: हम कह सकते है कि नाटक की भाषा शैली अत्यन्त प्रौढ, उत्कृष्ठ एवं प्रवाहपूर्ण है। नाटक में अंग्रेजी शब्दो का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। जैसे – टेलीफोन, मेजेस्टिक, वंडरफुल, डॉक्अर, इंजिनियर, डियर, एंडवाल, टाइप, मिस्टर, ट्रासलेटर, रेकार्ड, रामप्लो, रिजर्वेशन, फाइनल, मिलिटरी, ऑफिस, डिक्शनरी, एक्सीडेंट, फ्लाटिडो, फुटपाथ, कप, लिस्ट, मेजर, माइनर, अरेंज, ऑपरेशन आदि।

उर्दू–फारसी–अरबी शब्दो का भी प्रयोग हुआ है। जैसे – इजाजत, परवाह, तहजीब, कब्र, खतरनाक, बेवकूफ, दफ्तर, अफसोस, मेहरबानी, बकवास, नवाब, मुआवजा, तसवीर, इंतजार, अस्पताल, गलतफहमी, बेशरम, दलाखत, अखबार, आदि। कुल मिलाकर नाटक की भाषा प्रभावी है।

५. रक्तबीज:

इस नाटक में डॉ. शंकर शेष ने महानगरीय एवं उच्चमध्य वर्ग लोगो की मानसिकता चित्रण किया है। इस नाटक की भाषा सरल एवं स्वाभाविक रही है। इस नाटक के पात्र शिक्षित होने के कारण इस में अंग्रेजी शब्दो का प्रयोग हुआ है। अत: हम कह सकते है कि नाटक की भाषा पात्रानुकूल है। साथही नाटक में मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे – साँस फूल जाना, कबाब में हड्डी, आपे से बाहर होना, दाँतनिपोरना, रास्ते पर नये पाँव चलना पत्थर की लकीर बनना आदि मुहावरो का प्रयोग हुआ है। अंग्रेजी शब्दो का भी प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। जैसे कोट, मेग्जीन्स, सिगरेट, पाईप, बड्स, शर्ट, फाईल, टेबल, ऑक्टोपस, नाइट गाऊन, ट्यूमर, बायोप्सिस,पेपर, फर्स्ट, सिनस, एक्सरे, इक्वीपमेन्ट, असिस्टेंट, मैनेजर, औफसो, ओवर्स आदि। उर्दू–अरबी–फारसी शब्दो का भी प्रयोग मिलता है। जैसे इस्तेमाल, खूबसूरत, मेहनत, नाकामयाब, खयाल, इजाजत, तकिया, नाराजगी, मकान, वापर्द आदि। अत: रक्तबीज नाटक की भाषा प्रभावशाली है।

६. कोमल गांधार:

इस नाटक का कथा महाभारत से जुडी है। इस नाटक की भाषा अत्यन्त सुन्दर एवं स्वाभाविक है। इस नाटक के शब्द एक दूसरे से मिलकर नाटककार के भावों को

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

[illegible] [redacted] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। साथ ही अंग्रेजी वाक्य एवं वाक्यांशों का प्रयोग किया है।

संदर्भ संकेत :-

१. मूर्तिकार — डॉ. शंकर शेष — पृ. [illegible]
२. रत्नगर्भा — डॉ. शंकर शेष — पृ. ३७
३. नई सभ्यता नये नमूने — डॉ. शंकर शेष — भाग तिसरे
४. बिन बाती के दिप — डॉ. शंकर शेष — पृ. ११९
५. रक्तबीज — डॉ. शंकर शेष — पृ. ४३
६. कोमल गांधार — डॉ. शंकर शेष — पृ. ८२
७. आधी रात के बाद — डॉ. शंकर शेष — पृ. ७८
८. रूपक के आयाम — कर शिल्पी, डॉ. शंकर शेष, डॉ. सुरेश एवं डॉ. वीणा गौतम —पृ. ५४
९. नाटककार शंकर शेष — डॉ. सुनील कुमार लवटे— पृ. ३०
१०. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक — डॉ. गीताकुमार — पृ. १०३

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

PRINCIPAL

[illegible]

लोहपथ, रिवाल्वर आदि प्रतीकों का प्रयोग करके वर्तिक जीवन को अंकित कर दिया है।

"इस दिल के भरे रिवाल्वर में बेचैनी जोर मारती है, इसमें क्या शक। कभी ताकतवर उस मशीन के विस्तृत को सी दिल की धक-धक/उद्दाम वेग से चल रही थे स्टील चक्र"

मुक्तिबोध जी ने अपने कविता में कहीं-कहीं प्रकृति के प्रतीकों को भी सैद्धांतिक प्रतीकों के रूप में ग्रहण कर उनमें नवीन अर्थ भर दिया है।

"उस घाटी के नव क्षितिज तीर। / पर स्तब्ध धधकता हुआ पीन। / अंधार नीड।"

मुक्तिबोध जी ने परंपरागत प्रतीकों को भी आधुनिक संदर्भों से युक्त कर उन्हें मौलिक स्वरूप में चित्रित किया किया है। साथ ही उन्हें सौंदर्य के प्रतीक रूप में वर्णित किया गया है। जैसे-

"रवि निकलता / लाल चिता की रुधिर-सरिता/ प्रवाहित कर दिवारों पर/ उदित होता चंद/ व्रण पर बांध देता श्वेत धौली पट्टियाँ / उद्विग्न भालों पर।"

कवि मुक्तिबोध जी ने प्रतीकों के क्षेत्र में पौराणिक प्रतीकों का प्रयोग करके साहित्य के क्षेत्र में नया मोड अवतरित किया है। पौराणिक प्रतीकों के प्रयुक्ति में मुक्तिबोध जी को आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से कवि ने दूषित सड़ी-गली व्यवस्था का विरोध किया है। पौराणिक प्रतीक के रूप में निम्नांकित पंक्तियाँ देखी जा सकती है-

"वह संवलाया कलिया या मुँह/ है स्नेह भरी चिता में/ वाल्मीकि कुश तन्वे/ उद्विग्न खड़े कनवासी पुरंदर अर्जुन वह/ जिसके नेत्रों में चमक उठे चंदन पावन अंगारे।"

इन प्रतीकों के अतिरिक्त भी संस्कृति से अनेक प्रतीकों को ग्रहण करके आधुनिक संदर्भ को जोड़ने का कार्य कवि ने किया है। जिसमें प्रसिद्ध प्रतीक माने जाते है-ब्रह्मराक्षस, औरांग-उटांग, तिलक, महात्मा गांधी, लालस्ताव आदि।निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य के प्रगतिशील कवि गजानन माधव मुक्तिबोध जी ने विविध प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग करके अपनी भाषा को सक्षम बनाया है। साथ ही साथ यह कहा जा सकता है कि, कवि के प्रतीकों में विभिन्न अर्थ को प्रवाहित करने की क्षमता है। प्रतीकों कों के माध्यम से आज संदर्भ को जोडकर मौलिकता प्रदान की कोशिश सफल हुई है। संक्षेप कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध जी प्रतीक योजना काव्य शिल्प में सुंदरता प्रदान करने में सफल हुआ है।

■ ■ ■

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed Dist.Nanded

Date of Publication

Editor

Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

INDEX

[illegible]

PRINCIPAL

lation distribution and density is a very useful tool for the analysis of mans distribuion in space. One of the important indices of population concentration is the density of population. The analysis of population distribution and density holds immense significance for population geographers, as its successful understanding holds the key to the analysis of entire demographic character of an area.

Study area :-

Bidar district is crown of the state, its located in the north part of Karnataka is selected for present study. It lies in Manjara basin which is sub basin of Godavari river basin. It extends from 17°35' North latitude to 18°25' North latitude and 76°42' East longitude to 77°39' East longitude. The study region is bounded to 6 districts, the east by Medak, north east by Nizamabad district of Telangana state and to the north by Nanded, North west by Latur and to west by Osmanabad districts of Maharashtra, south by Gulbarga district of Karnataka State. It total covers an area of 5448 sq.km and rural area is 5294.17 sq. km. It has a total population of 1703300 and rural population of 1277348 as per the 2011 census which is inhabited in 595 rural settlements. The study region is divided into 5 tahsils for the administrations. These are Bidar which is district headquarter, Aurad, Baswakalyan, Bhalki and Humnabad are other tahsils in district.

Objectives :-

The present paper has attempted to study of Tahsilwise Rural Density of Population and growth rate of population density in Bidar district 2001 and 2011.

Source of data :-

The data collected from various secondany sources. The data is assembled from secondary sources were processed and presented by statistical and cartographic techniques not only basis of secondary data but with the help of various statistical and cartographic methods and techniques. Secondary data from socio economic review district census handbooks gazetteers agricultural epitomes season and crop report published by department of the agricultural the present research work author has been used the following method to calculate different aspect.

Rural Density of Population :-

In the year 2001, the rural density of population for the region was 217 persons per square kilometer as against 276 persons for the total density of population. This shows that there is much increase in density of rural population during the last two decades. Further, rural density is highest for Bidar tahsil, while the lowest for the Aurad tahsil in the year 2001. The agricultural prosperity and other economic allied economic activities are responsible for the high rural density of population for different tahsils of the Bidar district. However, there are wide variations in rural density of population within the various tahsils of Bidar district. Two tahsils show higher rural density, while rest of three tahsils show lower rural density than the region.

Table 1.1

[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]
		2001	2011	2001	2011	2001	2011	
1	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Source: Complied by the Author

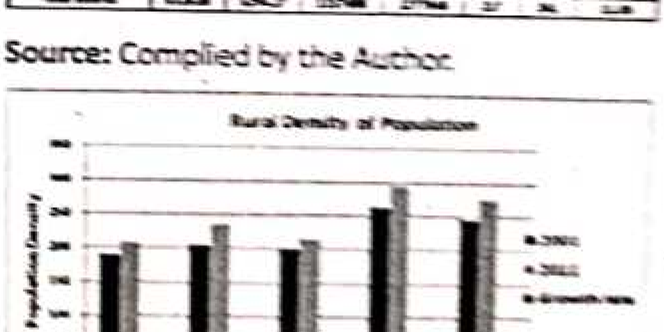

For the year 2011, the rural density of population is 241 persons per square kilometer, while it was 217 persons per square kilometer in 2001. By and large similar trend was also

observed for the year 2011, highest being for Bidar and lowest for the Aurad. The reason behind it is the lower development of secondary and tertiary sectors. One village from each tahsil of the study region i.e. total five villages has been selected for field work. They are selected from different environment such as hilly area, plane area, irrigated area, edge of river with road side and from close to urban centre.

From Table 1.1, Bidar district had the highest population density growth rate between 2001 and 2011 in Basvakalyan tahsil and the lowest in Bhalki tahsil. However, there are wide variations in rural density growth rate of population within the various tahsils of Bidar district. Three tahsils show higher rural density growth rate, while rest of two tahsils show lower rural density growth rate than the region.

Conclusion :-

In the year 2001 - 2011 rural density of population in Bidar district in the study area. In the area 2001, the rural density of population for the region was 217 persons per square kilometer in the year 2011 lowest density of population for the Aurad Tahsil and the highest rural density for the Bidar Tahsil and for the year 2011 rural density of population is 241 persons per square kilometer, while it was 217 persons per square kilometer in 2001. The highest of rural density of population for the Bidar tahsil and lowest for the Aurad tahsil. Apart from this, the rate of population density growth in the district was highest in Basvakalyan tahsil and lowest in Bhalki tahsil.

References:

1. Aurouneau, M. (1920) : The Arrangement of Rural Population : Geographical Review, Vol.10.

2. Anjana, Desai (1985) : "Spatial Aspects of Settlement Patterns", A Study of the Narmada Command Area of Maheshana District, Gujarat, Concept Publishing Company, New Delhi, P. 43.

3. Chandna, R.C. and Sidhu, M. S. (198 : "Introduction to Population Geography", Kalya Publishers, New Delhi.

4. Chandna, R. C. (2001) : "Geograpl of Population", Kalyani Publishers, New Delhi

5. Clarke, J. I. (1971) : "Population G ography and Developing Countries", Pergamc Press, Oxford.

6. Ritchard J. M (1974) " Population G ography", J. M. Dent and Sons Ltd. London. P 1-2.

7. Census of India (2011): District Cer sus Handbook of Bidar, Karnataka.

□□□

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalay

Maharashtra ShikshanSamiti's

Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga

www.mmnilanga.org

Maharashtra ShikshanSamiti's

Maharashtra College of Pharmacy, Nilanga

www.mcpnilanga.org

and,

Hindustani Education Society's

Azad Mahavidyalaya, Ausa

http://azadcollegeausa.org

Jointly Organized

One Day Multidisciplinary International e-Conference

On

Impact of Environment on Agriculture, Health, Water Resources, Social Life & Industrial Development

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms. Vilas Bhaurao Pawar has participated in One Day Multidisciplinary International e-Conference on ***'Impact of Environment on Agriculture, Health, Water Resources, Social Life & Industrial Development'*** Jointly Organized by the ***Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga, Maharashtra College of Pharmacy, Nilanga, and, Azad Mahavidyalaya, Ausa*** on Tuesday, July 20, 2021.

He/She has participated and presented a research paper entitled जागतिक कोरोना महामारी एक अभ्यास

Convener **Dr. M. N. Kolpuke** Principal, Maharashtra Mahavidyalaya Nilanga	**Convener** **Dr. S. S. Patil** Principal, Maharashtra College of Pharmacy, Nilanga	**Convener** **Dr. E. U. Masumdar** Principal, Azad Mahavidyalaya, Ausa

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

ISS

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

July 2021 Volume-11 Issue-27

Impact of Environment on Agriculture, Health, Water Resources, Social Life & Industrial Development

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon

Executive Editors	Executive Editors	Executive Editors
Dr. M. N. Kolpuke	**Dr. S. S. Patil**	**Dr. E. U. Masumdar**
Principal, Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga	Principal, Maharashtra College of Pharmacy, Nilanga	Principal, Azad Mahavidyalaya, Ausa

Co- Editors

Dr. B. N. Paul, Dr. C.J. Kadam, Prof. T. A. Jahagirdar, Dr. Naresh Pinamkar
Dr. C. V. Panchal, Dr. Nisar Syed, Mr. Santosh P Mane

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रस्तावना :-

[illegible]

संशोधन स्वरूप :-

[illegible]

संशोधनाचे उद्दीष्टे :-

१. [illegible]

३. [illegible]

संशोधन पद्धती :- [illegible]

[illegible]

[illegible]			
एकूण रुग्ण	मृत्यू संख्या	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जागतिक कोरोना माहामारीची सद्यकालीन परिस्थिती दर्शविणारा पाई चार

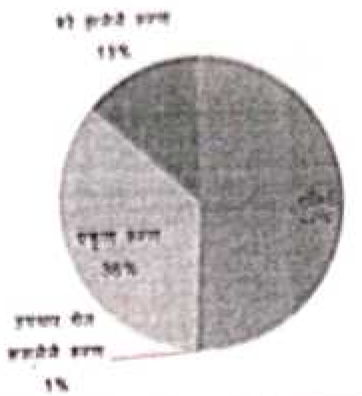

वरील तक्ता आणि पाई चार वरून असे स्पष्ट होते की, जगातील ७.६ अब्ज लोकसंख्येपैकी १०३,९३८,०५१ नागरिकांना कोरोनाची लागन झाली. लागन झालेले प्रमाण जगातील एकूण लोकसंख्येच्या ०.०१३ एवढे आहे. २२,४९,८७९ नागरिक मृत्युमुखी पडले असून याचे शेकडा प्रमाण १ टक्का एवढे आहे. एकूण लागन झालेल्यापैकी ७८,०२६,४८८ रुग्णामध्ये सुधारणा झाली असून त्याचे शेकडा प्रमाण ३६ टक्के आहे. तर सध्या जगातील विविध दवाखाण्यात उपचार घेत असलेल्या रुग्णांची संख्या २७,७०२,०८४ एवढी असून त्याचे शेकडा प्रमाण १३ टक्के आहे.

जागतिक पटलावर पहिल्या दहा देशातील कोरोनाची सद्यकालीन परिस्थिती					
अ.क्र.	देश	एकूण रूग्ण	मृत्यू रूग्ण	सुधारणा झालेले रूग्ण	मृत्यू दर
1.	अमेरिका	२६,९११,३०५	४५६,२१३	१६,६२१,२३०	१.६८
2.	भारत	१०,३६७,२०४	१५४,५२२	१०,६६३,७९०	१.४३
3.	ब्राझिल	९,२३०,०७६	२२५,२३८	८,२०२,३५४	२.४४
4.	रशिया	३,८३५,०८७	७३,६१९	३,३१८,१७३	१.९१
5.	इंग्लंड	३,८३५,७८३	--	१०६,५६४	२.७७
6.	फ्रांस	३,२०१,४६१	७६,५१२	२२५,३१९	२.३८
7.	स्पेन	२,८५२,७२९	५०,०८१	१५७,३७६	१.७५
8.	इटली	२,५००,९५७	८८,८४५	२,०२४,५२३	३.५५
9.	तुर्की	२,४८५,१८२	२६,११७	२,३७०,४३१	१.०५
10.	जर्मनी	२,२३२,४२९	५८,६७०	१,९९५,७६४	२.६१

वरील तक्त्या वरून असे स्पष्ट होते की, जगात सर्वात जास्त अमेरिकेमध्ये ४,५६,२१३ एवढे लोक कोरोनामुळे मृत्यू पावले आहेत. त्याच्यालोचाल अनुक्रमे भारतात १,५४,५२२, ब्राझिल २२५,२३८, रशिया ७३,६१९, इंग्लंड १०६,५६४, फ्रांस ७६,५१२ स्पेन ५०,०८१, इटली ८८,८४५, तुर्की २६,११७ आणि जर्मनीत ५८,६७० एवढे नागरिक मृत्युमुखी पडले आहेत.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

	उत्तराखंड	96180	1648	92105	1081	1.71
	हिमाचल प्रदेश	57561	967	56200	378	1.67
	गोवा	53499	768	51977	724	1.43
	पाँडेचेरी	33348	388	32918	19	1.16
	मणिपूर	29072	371	28562	139	1.27
	चंदिगढ	20957	334	20447	176	1.59
	अरूणाचल प्रदेश	16828	56	16762	10	0.33
	मेघालय	13764	146	13556	62	1.06
	नागालँड	12099	88	11810	54	0.72
	लडाख	9724	130	9526	68	1.33
	सिक्कीम	6091	133	5779	84	2.18
	अंदमान निकोबार	4994	62	4932		1.24
	मिझोराम	4372	09	4333	30	0.20
	दादरा नगर हवेली	3380	02	3334	06	0.05
	लक्षद्वीप	99	00	56	43	00
	एकूण					1.43

वरील तक्त्याचा अभ्यास केल्यानंतर एक बाब स्पष्ट होते की, भारतात सर्वात जास्त मृत्यूदर पंजाब राज्याचा जवळपास ३.२१ टक्के एवढा आहे. त्याच्याखालोखाल अनुक्रमे महाराष्ट्र २.५३, सिक्कीम २.१८, उत्तराखंड १.७१ दिल्ली १.७० याचा क्रमांक येतो. तर सर्वात कमी मृत्यु दर अरूणाचल प्रदेश ०.३३ टक्के असून त्याच्याखालोखाल केरळ ०.४४, आसाम ०.४९, तेलंगाणा ०.५६, आंध्र प्रदेश ०.८० आणि राजस्थान ०.८१ याचा क्रम लागतो.

सारांश :- एकंदरीत भारत आणि जगातील एकूण कोरोना महामारीच्या आकडेवारीचा तुलनात्मक अभ्यास करण्यात आला आहे. यावरून एक बाब स्पष्ट होते की, कोरोनावर कोणत्याही प्रकारची औषधी उपलब्ध नसतानासुद्धा जगातील या महामारीचा मृत्यु दर जेमतेम १.५ च्या दरम्यान आहे. त्यामुळे ही महामारी फार गंभीर स्वरूपाची आहे, असे दिसून येत नाही. जगात कोरोनापेक्षा एड्स, डेंगू, कावीळ, कॅन्सर, रक्तदाब, मधुमेह, ट्युमर, टीबी या आजारावर अनेक प्रकारची औषधी उपलब्ध असतानासुद्धा दररोज लाखो लोक मृत्युमुखी पडतात. परंतु कोणत्याही देशाचे शासन गांभीर्याने लक्ष देत नाही. कोरोनात जे काही लोक मृत्युमुखी पडले आहेत याचे एकमेव कारण विविध आजाराने ग्रस्त आणि भिती हेच एकमेव कारण असू शकते. कोरोना या महामारीची वास्तविक पार्श्वभूमीवर पद्धतशीरपणे जाहिरात करून काही देशांनी याचा योग्य तो फायदा करून घेतला आहे. दुसरी बाब म्हणजे या आजाराचे जगातील जास्त प्रमाण उच्चभ्रू लोकांमध्ये असल्यामुळेच त्यांनी लॉकडाऊन ही संकल्पना शोधून काढली. कारण झोपडपट्टीमध्ये अनेक साथीचे रोग असून सुद्धा कोणत्याही देशाने या रोगाचे निदान करण्यासाठी लॉकडाऊन केल्याचे उदा. इतिहासात सापडत नाहीत.

संदर्भ ग्रंथ :-

www.worldometers.edu

www.who.int

www.wikipedia.org

www.who.org

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist.Nanded

IMPACT FACTOR 6.10

ISSN 2393-8412

International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for Social Sciences

INDO ASIAN SOCIAL SCIENCE RESEARCH JOURNAL

INDO ASIAN PUBLICATION

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XIV, Vol. I

Year-VII, BI-Annual(Half Yearly)

(Feb. 2021 To July 2021)

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Website

www.irasg.com

Contact : - 02382 - 241913
09423346913 / 09637935252
09503814000 / 07276301000

E-mail :
visiongroup1994@gmail.com
interlinkresearch@rediffmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :
Indo Asian Publication,
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 200/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Jaideep R. Solunke
Dept. of Geography,
Shri Pandit Guru Pardikar Mahavidyalaya,
Sirsala, Dist. Beed (M. S.)

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Vinod Jadhav
Head Dept. of Sociology,
M. D. M. Mahavidyalaya,
Aurad (S), Dist. Latur (M. S.)

Dr. H. P. Kadam
VC Principal/Head, Dept. Pol. Science,
Shri P. G. P. Mahavidyalaya,
Sirsala, Dist. Beed (M. S.)

DEPUTY EDITOR

Dr. Mahesh Mothe
Head, Dept. of Pol. Science,
S. M. P. Mahavidyalaya,
Murum, Dist. Osmanabad (M. S.)

Dr. Shankar Lakhane
Head, Dept. of P. A.,
A. C. S. Mahavidyalaya,
Shankar Nagar, Dist. Nanded (M. S.)

CO - EDITOR

Dr.G. V. Gatti
Head, Dept. of History
Shri P. G. P. Mahavidyalaya,
Sirsala, Dist. Beed (M. S.)

Dr. D. B. Maske
Librarian
Shri P. G. P. Mahavidyalaya,
Sirsala, Dist. Beed (M. S.)

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Dr. Jyoti A. Upadhye
Dept. of Phy. Edu & Sports Sciences,
K. S. A. Women's University,
Vijayapura, Dist. Vijayapura (K.A.)

Dr. Sunil Kumar
Dept. of Physical Education,
Dr. Babasaheb Ambedkar College,
Amravati, Dist. Amravati (M.S.)

Dr. Alok Tiwari
Dept. of Yoga Science,
Dr. R.M.L.A University,
Ayodhya, Dist. Ayodhya (U. P.)

Dr. Vaishali Deshmukh
Head, Dept. of Music,
Govt. Arts & Science College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad (M.S.)

Dr. Sanjay Shinde
Head, Dept. of Sociology,
S. B. M. Mahavidyalaya,
Rahimatpur, Dist. Satara (M.S.)

Dr. Yadhav Ghodke
Dept. of Sociology,
P. V. P. Mahavidyalaya,
Pathoda, Dist. Beed (M. S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed

IAP
Issue - XIV, Vol. I
IASSRJ
IMPACT FACTOR
6.10
ISSN 2393-8412
Feb. 2021 To July 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	A Geographical Study of Environmental Pollution **Dr. Jaideep R. Solunke**	1
2	Use of Multimedia in College Libraries **Dr. D. B. Maske**	4
3	A Study of the effect of circuit training on Vertical Jumpingability and skill ability of Weightlifter Players aged 18 to 25 Years **Dr. Sanjay Binarwar**	9
4	Relationship of Playing Ability Between Physical Fitness Components Among Wardha District Men Soccer Players **Dr. Sunil Kumar**	12
5	The effect of Yoga Practice on Expiratory Reserve Volume(ERV) ofair in Lungs **Atul Sharma**	16
6	तबला वाद्य का इतिहास **डॉ. वैशाली देशमुख**	20
7	आरोग्यता प्राप्ति का साधन - हठयोग **डॉ. आलोक तिवारी**	25
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार **कल्याण सर्जेराव घोडके**	30
9	अनुसुचित जमातीच्या संकल्पनेचा विश्लेषणात्मक अभ्यास **नारायण हणमंतराव पांचाळ**	34
10	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार **सुलक्षणा किशनराव इंगोले**	40
11	ख्याल गायनाची साथसंगत करण्यासाठी हार्मोनियम वादकास उपयुक्त पलटे आणि त्यांचे महत्व **प्रविण कासलीकर**	44
12	संक्षिप्त तबला व साथसंगत एक विचार **मिलिंद क. पोटे**	54

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist. Nanded

Indo Asian Social Science Research Journal (IASSRJ)

IMPACT FACTOR
6.10

ISSN 2393-8412
India Asian Social Science Research Journal (IASSRJ)
Issue : XIII, Vol. I
August 2020 To Jan. 2021
www.iassrj.com

Research Paper 9 Geography

अनुसुचित जमातीच्या संकल्पनेचा विश्लेषणात्मक अभ्यास

नारायण हणमंतराव पांचाळ
भूगोल विभाग,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुक्रमाबाद, जि. नांदेड

प्रस्तावना :

प्रदेशानुसार अनुसुचित जमातीचा वेगवेगळ्या नावांनी ओळखले जाते. जसे अमेरिकेत रेड इंडियन ऑस्ट्रेलियात ॲबोरीजिनीझ युरोपीय देशात जीप्सी व आफ्रिका आणि आशिया देशात त्यांना आदिवासी या नावाने ओळखले जाते. आर्य भारतात येण्यापूर्वी आदिवासी सांस्कृतिक आणि आर्थिक दृष्ट्या संपन्न होते. परंतु आर्यांच्या आगमनानंतर त्यांच्याशी होत असलेल्या नेहमीच्या संघर्षामुळे अनुसुचित जमातीच्या स्वातंत्र्यावर मर्यादा आल्या. त्यामुळे अनुसुचित जमाती सुपीक जमीनीवर आणि संपन्न नगरांवर आर्यांनी ताबा मिळवल्यामुळे अनुसुचित जमातीच्या संघर्षमय जीवनाला सुरुवात झाली. आदिवासी समाज हा पुर्वीपासूनच उपेक्षित जीवन जगणारा समाज म्हणून ओळखला जातो. जंगल, डोंगरदऱ्याच्या साहाय्याने त्यांचे स्वातंत्र्य अबाधित राहिले. इतर समाजापासुन हा समाज दूर राहिल्याने हा समाज आत्मकेंद्रित बनला. अशा अलिप्तपणामुळे त्यांनी संस्कृती टिकवून ठेवली असली तरी त्याचा विपरीत परिणाम त्यांच्या दूरगामी विकासावर झाल्याचे ठळकपणे दिसून येते. अल्पभूप्रदेश, तंत्रज्ञानाचा अभाव, साधी अर्थव्यवस्था, विशिष्ट भाषिक गट इत्यादी वैशिष्ट्यांमुळे अनुसुचित जमाती इतर समाजापेक्षा सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक तसेच सामाजिक दृष्ट्या मागासलेला दिसून येतो.

कालसापेक्ष परिस्थितीनुसार भारतामध्ये मध्यंतरीच्या काळात अनेक राजसत्तेचा उदय आणि अस्त झाला, परंतु त्याचा अनुसुचित जमातीच्या सांस्कृतिक स्वातंत्र्यावर व सामाजिक जीवनावर फारसा परिणाम झाला नाही. असे असले तरी ब्रिटिश राजवटीत आदिवासी समाजाचे जीवन ढवळून निघाले. कारण ब्रिटीशांनी आपल्या राज्यकारभारासाठी आदिवासींच्या आर्थिक जीवनात ढवळाढवळ करण्यास सुरुवात केल्याबरोबर आदिवासींच्या अलगपणा व अलिप्तपणावर आघात होऊ लागला. त्यामुळेच आदिवासींच्या परिस्थितीचा विचार करण्याची गरज समाजसुधारकांना वाटू लागली. त्यामुळे ख्रिश्चन मिशनऱ्यांच्या

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist. Nanded

यासंदर्भात मानववंशशास्त्रज्ञांनी वैज्ञानिक पद्धतीने आदिवासी समाजाचा अभ्यास करून आदिम समाजाविषयी चुकीचे समज तर दूर केलेच.

जगात सर्वाधिक आदिवासी जमातीची लोकसंख्या दक्षिण आफ्रिकेत आहे. त्यानंतर भारताचा क्रमांक लागतो. सन २०११ च्या जनगणनेनुसार भारताची एकूण लोकसंख्या १,२१०,५६९,५७३ असून त्यापैकी १०४,२८१,०३४ एवढी लोकसंख्या आदिवासी जमातीची आहे. एकूण लोकसंख्येपैकी ८.६२ टक्के आदिवासी भारतात वास्तव्य करतात.

आदिवासीचे भारतीय राज्यघटनेत त्यांचे वर्णन अनुसूचित जमात असे केलेले आहे. भारतीय राज्यघटनेत अदिवासी जमातीची विशिष्ट अशी व्याख्या मांडण्यात आलेली नाही. त्यांना केवळ आदिवासी जमात या नावाने संबोधण्यात आले आहे. राज्यघटनेतील कलम ४६ अंतर्गत समाजातील दुर्बल घटक म्हणून आदिवासी जमातीचा उल्लेख आहे.

आदिवासी समाजाच्या व्याख्या :

१) गिलीन व गिलीन यांच्या मते -

एका विशिष्ट भूप्रदेशात राहणारा समान बोली भाषा बोलणारा व समान सांस्कृतिक जीवन जगणारा पण अक्षर ओळख नसलेल्या स्थानिक गटाच्या समुच्चयाला आदिवासी समाज म्हणतात.

२) डब्ल्यु. जे. पेरी -

यांच्या मते समान बोली भाषा बोलणाऱ्या व एकाच समान भूप्रदेशात वास्तव्य करणाऱ्या समूहाला आदिम समाज असे म्हणतात.

३) डॉ. रिव्हर्स -

यांच्या मते समूहातील सदस्य एक समान बोली भाषा बोलतात, उद्दिष्ट पूर्तीकरिता एकत्र होऊन जगतात व झगडतात अशा सरळ व साध्या समाजिक समूहाला आदिवासी समाज असे म्हणतात.

४) इंपिरियल गॅझेट -

यांच्या मते इंपिरियल गॅझेटनुसार समान बोली भाषा बोलणाऱ्या एकाच भूभागात राहणाऱ्या, सुरुवातीला अंतर्विवाह असण्याची शक्यता असलेला पण सर्वसामान्यपणे अंतर्विवाह नसलेल्या व समान नाव धारण करणाऱ्या कुटुंबाच्या समुच्चयाला आदिवासी समाज असे म्हणतात.

५) शिलाँग येथील परिषद (१९६२) -

यांच्या मते एका समान भाषेचा वापर करणाऱ्या एकाच पुर्वजापासून उत्पत्ती सांगणारा, एका विशिष्ट भूप्रदेशात वास्तव्य करणारा, तंत्रज्ञानाच्या दृष्टीने मागासलेला, अक्षर ओळख नसलेला व रक्त संबंधावर आधारित सामाजिक व राजकीय रीतिरिवाज व प्रामाणिकपणाचे पालन करणारा समाज म्हणजे आदिवासी समाज होय.

६) डी.एन. मुजूमदार -

यांच्या मते समान नाव असणारा, एकाच भूप्रदेशावर वास्तव्य करणारा, एकच भाषा बोलणारा व विवाह, व्यवसाय इत्यादी बाबतीत निषेध नियमाचे पालन करणारा व परस्पर उत्तरदायित्व निर्माण करण्याच्या दृष्टीने एक पद्धतशीर व्यवस्था स्वीकारणारा समाज म्हणजे आदिवासी समाज होय.

वरीलप्रमाणे वेगवेगळ्या विचारवंतांने केलेल्या व्याख्येवरून हे स्पष्ट होते की, विचारवंत असो किंवा

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavid...
Mukramabad Tq. Mukhed ...

[illegible]

आदिवासी कुळ -

[illegible]

आदिवासी कुळाची वैशिष्ट्ये -

१) कुळ एकपक्षीय असते

[illegible]

२) कुळ बहिर्विवाही समूह आहे -

[illegible]

३) समान एक प्रतीक -

[illegible]

४) काल्पनिक पूर्वज -

[illegible]

५) कुळचिन्ह -

[illegible]

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya

प्रतिकात्म कुल प्रतिक असे म्हणतात. शरीर कुळांचा रिसिप्रतात्म असे म्हणून येते की, हे [illegible] पूर्वजांशिवरी निर्मित कथा प्रचलित असतात. सर्वसामान्य आदिवासींचे टोटेमवादाने हे त्यांचा [illegible] काल्पनिक दृढ श्रद्धा आणि समान कुळातील वडलांचे असलेले सोबतीवादाचे प्रतिक हे विज्ञानाच्या कसोटीचे तत्वज्ञान प्रगत समाजासाठी मात्र ठळकपणे आहे.

आदिवासी जमातीचे राज्यघटनेतील घटनात्मक स्थान व तरतुदी :

१) कलम ३४१ नुसार राष्ट्रपती, राज्यपालाच्या सल्ल्याने जाती, वंश, जमाती किंवा त्यातील कोणत्याही भागाला किंवा जाती-जमातीस सूचीत समाविष्ट करू शकतात.

२) कलम ३४० नुसार मागासवर्गीयांची व आदिवासी लोकांची स्थिती जाणून घेण्यासाठी आयोगाची नेमणूक करण्याचा समावेश केला आहे.

३) कलम २४४ नुसार अनुसूचित जमातीच्या नियंत्रणासाठी विशेष प्रशासकीय व्यवस्था करण्याची तरतूद केलेली आहे.

४) कलम ४६ नुसार राज्यातील दुर्बलवर्ग विशेषतः अनुसूचित जमातीच्या शिक्षण आणि आर्थिक हितासंबंधीविशेष काळजी घेऊन त्यांचे रक्षण्याचा तसेच सामाजिक अन्याय व सर्व प्रकारच्या शोषणापासून संरक्षण देऊन मुक्त करण्याचा प्रयत्न केला.

५) कलम ३३८ नुसार अनुसूचित जाती व अनुसूचित जमातीसाठी विशेष अधिकारी नेमण्याचा अधिकार राष्ट्रपतींना आहे.

६) कलम ३३० व ३३२ नुसार भारतातील अनुसूचित जमातीसाठी त्यांच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात लोकसभेत ४० जागा तसेच विधानसभेत राखीव जागाची तरतूद करण्यात आली आहे.

७) कलम ३३५ नुसार केंद्र व राज्य शासनाच्या नोकऱ्यामध्ये अनुसूचित जमातीच्या लोकांसाठी राखीव जागा ठेवण्याचा प्रबंध केला आहे.

आदिवासी जमातीचा विकास व सर्वांगीण कल्याण करण्यासाठी भारतीय संविधानात नोकऱ्यामध्ये राखीव जागा, लोकसंख्येच्या प्रमाणात विधान सभा व लोकसभेतील प्रतिनिधित्व, अनुसूचित जमातीच्या नियंत्रणासाठी विशेष प्रशासकीय व्यवस्था, दुर्बल वर्ग म्हणून अनुसूचित जमातीच्या आर्थिक व शैक्षणिक हितसंबंधाची काळजी घेणे अशा प्रकारे अनुसूचित जमातीचा विकास करण्यासाठी भारतीय संविधानात घटनात्मक तरतुदी आहेत.

ग्रामीण, नागरी आणि आदिवासी समाज मिळून भारतीय समाज व्यवस्थेचा विचार केला जातो. आदिवासी समाज हा आपल्या भारतीय संस्कृतीचा एक अविभाज्य घटक आहे. तो जर प्रगतीपासून वंचित राहिला तर प्रगत राष्ट्राची संकल्पना पुर्णत्वास जाऊ शकत नाही. त्यासाठी त्यांचा विकास होणे हा अत्यंत महत्वाचा भाग आहे. आधुनिक सुख सोयीपासून कित्येक मैल दूर राहून आपल्या पद्धतीने काम करीत हे आदिवासी बांधव आजही मुक्त आणि स्वच्छंदी जीवन जगत आहेत. घनदाट जंगलात राहणाऱ्या आदिवासी बांधवाना आधुनिक व नागरी सुधारणांच्या वाऱ्याचा स्पर्शही होत नाही. तरीही सदाफुली सारखी हसणारी, निसर्गावर अपार प्रेम करणारी आणि पारंपारिक कला व संस्कृतीचे जतन करणारी ही आदिवासी जमात. उपजीविकेसाठी शेती, शेतमजुरी आणि आजही आदिवासींची आर्थिक परिस्थिती केविलवाणी आहे.

PRINCIPAL

[illegible] आदिवासी [illegible]
[illegible]
[illegible] पूर्ण होत नाही.

निष्कर्ष -

१) [illegible]

२) [illegible]

३) आदिवासी समाजाच्या समतोल विकास करण्यासाठी भारतीय संविधानात कलम ४६, २४४, ३३०, ३३२, ३३४, ३३५, ३३८, ३४२ इत्यादींमध्ये महत्त्वपूर्ण तरतुदी करण्यात आल्या आहेत.

संदर्भ सूची :-

१) Jainanand Tribhuwan, Anover view of Tribal research studies, Tri, pune १९९५

२) Negiand Gaikwad, Social Cultural dynamics of Tribal development

३) Bose N.K. Nandi Dasand Tyagi D.S., Tribal of village system presentific in India, calcatta geographical survey of India, [illegible]

४) अटल योगेश, आदिवासी भारत एक सामाजिक सांस्कृतिक एवं विकासात्मक विवेचन, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, २०११

५) तुकाराम जाधव, भारतीय राज्यघटना व घटनात्मक प्रक्रिया, युनिक ॲकॅडमी, पुणे

६) आदिवासी संशोधन पत्रिका, आदिवासी संशोधन व प्रशिक्षण संस्था, पुणे, Vol. xxxxx No. २ सप्टेंबर २०११

७) www.tribal.nic.in

८) www.tribalaffairs.nic.in

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalay
Mukramabad Ta. Mukhed Dist. Nanded

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

I June-2021 Volume-11 Issue-16

On

Sustainable Development Goals: Initiatives, Execution and Challenges

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Guest Editor

Dr. Prof. H. B. Rathod

Principal

Gramin (ACS) Mahavidyalaya, Vasantnagar (Kotgyal), Tal. Mukhed

Executive Editors

Dr. V. T. Naik Mr. B. C. Rathod

Co- Editors

Dr. D. K. Kendre
Mr. S. A. Jewale
Dr. U. D. Padamwar

Editorial Board

Mr. Thorve A. B.	Prof. Zamapalwad S. S.	Prof. Kalyan G. S.	Dr. Kshirsagar S. G.
Shri. Dethe S. K.	Shri. Kalmath S. K.	Shri. Baburao S.	Mr. Kamble S. R.
Prof. Shinde P. A. Shri. Mathpati G. H.	Prof. Pawar S. K. Shri. Patil S. S.	Smt. Ikkapalle A. P. Mr. Naik N. U.	Dr. Gore S. Y. --

Published by- Principal, Dr. Prof. H. B. Rathod, Gramin (ACS) Mahavidyalaya, Vasantnagar (Kotgyal), Tal. Mukhed

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed Dist. Nanded

लिंगभाव विरहित समाज रचनेची गरज

पंचशील नारायण इंगोले
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुक्रमाबाद, ता.मुखेड जि.नांदेड
E-male:panchaim@gmail.com

प्रस्तावना :-

मानवी जीवन जगत असताना निसर्गत: पुरुष बरोबरीने स्त्री एक व्यक्ती आहे. परंतु व्यक्तीला असामान्य निसर्गत: बुद्धी या घटकांमुळे व त्यांच्या वैचारिक क्षमतेमुळे त्याने इतर सजीव प्राण्यांपेक्षा सर्व क्षेत्रात नेत्रदीपक प्रगती केली. परंतु ही प्रगती साध्य करत असताना शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक दृष्टिकोनातून स्त्री ही आपल्यापेक्षा कनिष्ठ दर्जाची असून तीचे स्थान फक्त आणि फक्त चार भिंतीच्या स्वयंपाकापुरते मर्यादित आहे. हा विचार समाज व्यवस्थेत रुजवला गेला. साहजिकच स्त्री ही पुरुषी वर्चस्व व दबावाखाली आपले जीवन व्यतीत करत राहिली. अशा पद्धतीने सामाजिक जीवन जगण्याची पुरुषप्रधान व पुरुषसत्ताक व्यवस्था आजही प्रबळ असलेली दिसून येते. म्हणून या असमान स्त्री-पुरुष जीवन जगण्याच्या पद्धतीबाबत समाजप्रबोधन, विचारमंथन व्हावे स्त्री ही व्यक्ती आहे व ती पुरुषांप्रमाणे समान पातळीवर आपले जीवन जगू शकते ही विचारधारा समाजात विकसित करण्याचा सदोदित प्रयत्न केला.

संशोधन समस्या :-

समकालीन स्थितीमध्ये मानवाने नेत्रदीपक प्रगती करून जमीन, आकाश आणि समुद्र या तीन्ही स्थानावर वर्चस्व निर्माण केले आहे. या सर्वच क्षेत्रात महिलांनीसुद्धा पुरुषांच्या खांद्याला खांदा लावून पुरुषांना लाजवेल अशी कामगिरी केली आहे. मग यामध्ये संरक्षण खाते असो, राजकारण असो, समाजकारण असो, प्रशासन, विज्ञान तंत्रज्ञान असो किंवा अंतराळ मोहीम असो या सर्वच क्षेत्रात महिला आघाडीवर आहेत. परंतु असे असतानासुद्धा पुरुषाने तीला समान दर्जा दिला नाही. त्यामुळे स्त्री व पुरुष यांच्यातील निसर्गत: काही वेगळेपण आहे का? म्हणून तर पुरुषांचा स्त्री बद्दलचा मानसिक दृष्टिकोन जाणून घेणे आणि लिंगभाव विरहित समाज रचनेला महत्त्व देण्यासाठी हा विषय निवडला आहे.

संशोधनाचे उद्दिष्टे :-

1. स्त्री-पुरुष असा भेदभाव करण्याच्या कारणांचा शोध घेणे.
2. स्त्री निसर्गत: अबला आहे का? हे जाणून घेणे.
3. लिंगभावात्मक भेदभाव योग्य का? हे जाणून घेणे.

संशोधन पद्धती :-

तथ्य संकलनाच्या अनेक पद्धती आहेत. परंतु प्रस्तुत विषयाशी संबंधित असणारी ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धतीचा प्रस्तुत संशोधनासाठी उपयोग करण्यात आला आहे.

लिंगभावाचा अर्थ :-

समकालीन स्थितीमध्ये 'लिंगभाव' या शब्दाला समाजशास्त्रीय अर्थाने पर्यायी 'जेंडर' हा शब्द प्रयोग केला जात आहे. या नवीन अर्थानुसार जेंडर या संज्ञेचा वापर स्त्री आणि पुरुषाची सामाजिक आणि सांस्कृतिक ओळख स्पष्ट करण्यासाठी करतात. मराठीत जेंडर या शब्दालाच लिंगभाव म्हणतात. स्त्री-पुरुषाचे स्थान व भूमिका यात

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq Mukhed Dist Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

असतो. नैसर्गिकदृष्ट्या, नैतिकदृष्ट्या, विवेकवादी भूमिकेतून योग्य असणे म्हणजे न्याय होय. न्याय या संकल्पनेसाठी इंग्रजीमध्ये "Justice' शब्द वापरला जातो. जस्टिस हा शब्द 'जस्टिसीया' या ग्रीक शब्दापासून बनला आहे. त्याचा अर्थ जोडणे किंवा बंध निर्माण असा होतो. स्वातंत्र्य, समता, बंधुता या तीन तत्वांना जोडून न्याय प्रस्थापित करणे ही भूमिका यामध्ये येते. या ठिकाणी लिंगभाव न्याय प्रस्थापित न होण्यापाठीमागे काही प्रमुख कारणे खालील प्रमाणे सांगता येतील.

१. लैंगिक भेदाचा दृष्टिकोन

निसर्गतः स्त्री व पुरुष हे दोन्ही घटक, समाजविकास, पुनरुत्पादन यासाठी आवश्यक असले तरी सामाजिक पातळीवर स्त्री जन्माला आल्यानंतर किंवा एकंदरीत स्त्रीकडे शारीरिक, मानसिक, वैचारिक पातळीवर ती कमकुवत आहे, नाजूक आहे अशा भावनांनी तिच्याकडे पाहिले जाते. तिच्याकडे मादी, वस्तूरूपाने पाहिले जाते व त्यामुळे साहजिकच बघण्याची मानसिकता सामाजिक पातळीवर नव्हे तर लिंगभाव न्यायाच्या दृष्टीने ती दुर्बल ठरविली जाते.

२. धार्मिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोन

विविध धर्म व समाजाच्या संस्कृतिचा अभ्यास केला तर त्यामध्ये स्त्रीत्वास कमी लेखले आहे. धार्मिक, सांस्कृतिक घटकांमध्ये स्त्रियांवर विविध प्रकारची बंधने, मर्यादा घातलेल्या आहेत. विविध संस्कृती, धर्माचा पगडा समाज जीवनावर वर्षानूवर्षे रूजला गेला असल्याने समाजातील अनिष्ठ प्रथा, परंपरांना सहजा सहजी समाज विरोध करत नाही. त्यामुळे धार्मिक व सांस्कृतिक या गोष्टीमुळे लिंगभाव न्याय प्रस्थापित होताना दिसत नाही.

३. कौटुंबिक व सामाजिक दृष्टिकोन

लिंगभाव प्रत्यक्षात गर्भलिंग चाचणी करून स्त्रीगर्भ असेल तर तिची भ्रूणहत्या केली जाते. म्हणजेच कौटुंबिक पातळीवरच लिंगभाव न्याय नाकारलेला आपणास दिसतो. याच पद्धतीने समाज जीवनात ती जीवंत असताना तिच्याकडे एक व्यक्ती म्हणून पुरूषाप्रमाणे आहे असे न समजता तिला सामाजिक पातळीवर कमी लेखले जाते. पुरुषत्वाचे वर्चस्व रहावे यादृष्टीने तिच्याकडे पुरूष-कौटुंबिक पातळीपासून ते सामाजिक पातळीपर्यंत तिला गौण ठरवतो. यामुळे लिंगभव न्याय कुटुंबापासून जोपासला जात नाही. मुलगा-मुलगी भेदभाव मग तो खाण्यापिण्याच्या बातीत, हौसमजेच्या बातीत, शिक्षणाच्या बाबतीत, आवडीनिवडीच्या बाबतीत, कुटुंबापासून समाजापर्यंत रूजला गेला असल्याने लिंगभाव न्याय.प्रस्थापित होताना दिसत नाही.

४. राजकीय व आर्थिक दृष्टिकोन

स्त्रीचे पहिले कर्तव्य म्हणजे 'चूल व मूल' ही संकल्पना जोपर्यंत पुरूषांच्या किंबहुना समाजाच्या व व्यवहाराच्या विचारातून पूर्ण जात नाही तोपर्यंत लिंगभाव न्याय प्रस्थापित होणे अशक्य आहे. राजकीय पातळीवरसुद्धा स्त्रीने सत्ता हस्तगत केली किंवा आर्थिक पातळीवर ती जर कमवती स्त्री असली तरी तिच्याकडे वस्तूतः स्त्री म्हणून बघण्याचा दृष्टिकोन समाजमानसामध्ये रूजला असल्याने तिच्या कामाच्या ठिकाणी मानसिक, शारीरिक आणि लैंगिक शोषण होत असते. वेतनाच्या बाबतीत काम करूनही तिची आर्थिक पिळवणूक करणे अशा अनेक गोष्टीमुळे लिंगभाव न्यायाची संकल्पना रूजणे किती आवश्यक आहे हे लक्षात येते. ज्याची आज तीव्र गरज आहे.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

६. न्यायिक दृष्टिकोन

समाजाची मांडणी ही मुळातच पुरूषप्रधान आहे. येथील पोलीस, जेल, न्यायदान या सर्व व्यवस्था पुरूषप्रधान आहेत. स्वाभाविकच सगळी पुरूषी सत्ता असल्याने स्त्रीवर कोणत्याही प्रकारचा अन्याय झाल्यास त्याचे निराकरण करतानाही तिला विचार करावा लागतो. लैंगिक अत्याचार, बलात्कार, ॲसिड हल्ला, कौटुंबिक हिंसाचार असा अनेक अत्याचाराबाबत ज्यावेळी न्याय मागण्यासाठी स्त्रिया न्याययंत्रणेकडे याचना करतात त्यावेळी तिथल्या एकूणच पुरूषी मानसिकतेपुढे स्त्रिया घाबरतात. न्याय मिळण्याच्या प्रतिक्षेमध्ये तिथे होणाऱ्या मानसिक, शारीरिक छळाबाबत पुढेच दाद मागता येत नाही. त्यामुळे लिंगभाव न्यायाच्या बाबतीत स्त्रियांना न्याय मिळणाऱ्या यंत्रणेचाच तीव्रतेने विचार करावा लागतो.

साधारणपणे लिंगभाव न्यायास अनुसरून स्त्री-पुरुष समानतेविषयक कायदे अस्तित्वात आले. परंतु प्रत्यक्षात कायदे राबविणाऱ्या यंत्रणेमध्येच जर स्त्री-पुरूष असमानतादर्शक मानसिकता रूजली असल्याने लिंगभाव न्याय प्रत्यक्षात प्रस्थापित होणे अवघड आहे. यासाठी काही गोष्टी शासकीय पातळीवर व आंतरराष्ट्रीय पातळीवर राबविल्या गेल्या. स्त्री विकास, स्त्री संरक्षण अशा विविध दृष्टिकोनातून योजना राबविल्या जात आहेत. मात्र आणखीन काही गोष्टीचा विचार होणे आवश्यक आहे.

लिंगभाव विरहित समाज रचनेचे गुण किंवा महत्त्व

समाजात स्त्री-पुरूष यांच्यात असलेल्या न्यून गंडाच्या भावना कमी होण्यासाठी लिंगभाव विरहित समाज रचनेचे महत्त्व किंवा गुणांचा आढावा पुढीलप्रमाणे घेण्यात आला आहे.

१. कौटुंबिक मानसिकता बदलणे आवश्यक

लिंगभाव न्याय प्रस्थापित होण्याच्या दृष्टिकोनातून कौटुंबिक पातळीवर मुलगा व मुलगी हा भेदभाव पालकांनी करता कामा नये. पालकांनी या दृष्टीने स्वतःची मानसिकता परिपक्व करून समतोल राखणे महत्त्वाचे आहे. मुला-मुलींची लिंगभेदास अनुसरून भेदभाव करण्याची मानसिकता नाकारली गेली पाहिजे. मुलाप्रमाणेच मुलीला आरोग्य, शिक्षण, संधी, आवडीनिवडी, छंद या सर्व गोष्टी करण्याची समान भूमिका जर कुटुंबाने घेतली तर कुटुंबातील तरूण प्रौढ होणाऱ्या पुरुषाची मानसिकता स्त्री-पुरूष समानतेबाबत सकारात्मक होईल व समाजात तशी ती रूजली जाईल.

२. शिक्षणव्यवस्थेत लिंगभाव समानता आवश्यक

शिक्षण हे समाज परिवर्तन व समाजविकासाचे प्रभावी माध्यम आहे. परंतु शैक्षणिक वातावरणात स्त्री-पुरुष समानतेची तत्त्वे मुळापासून रूजणे आवश्यक आहे. स्त्री शिक्षणाबाबत खुप योजना राबविल्या जातात. परंतु त्याची प्रत्यक्षात अंमलबजावणी करताना येणाऱ्या अडचणी लक्षात घेऊन त्याबाबतीत निराकरण करणे गरजेचे आहे. आर्थिक असमानता, सामाजिक असमानता यामुळे मुलींच्या बाबतीत शाळांकडे बघण्याचा दृष्टिकोन वेगळा आहे. त्यामुळे शाळेतील मुलींच्या शिक्षणाबाबत असणारे वातावरण, शिक्षकांची भूमिका महत्त्वाची ठरते. याचबरोबर शैक्षणिक अभ्यासक्रमात लिंगभावाचे शिक्षण, लैंगिक शिक्षण यांचा अंतर्भाव झाला तरी त्याबाबतीतील निरपेक्ष व मोकळ्यापणाने शिक्षण देण्याची पद्धती या सर्व गोष्टी लिंगभाव न्याय रूजण्यासाठी व खऱ्या अर्थाने तो समजण्यासाठी शिक्षणव्यवस्थेत लिंगभाव समानता आणने आवश्यक आहे.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq.Mukhed.Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

20 July 2021 Volume-11 Issue-27

On

Impact of Environment on Agriculture, Health, Water Resources, Social Life & Industrial Development

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Executive Editors

Dr. M. N. Kolpuke **Principal** Maharashtra Mahavidyalaya Nilanga	**Dr. S. S. Patil** **Principal** Maharashtra College of Pharmacy, Nilanga	**Dr. E. U. Masumdar** **Principal** Azad Mahavidyalaya, Ausa

Co- Editors

Dr. B. N. Paul	Dr. C.J. Kadam	Prof. T. A. Jahagirdar
Dr. Naresh Pinamkar	Dr. C. V. Panchal	Dr. Nisar Syed
	Mr. Santosh P Mane	

Editorial Board

Dr. A.B. Dhalgade	Dr. S.V. Garad	Dr. M.A. Barote
Dr. B.S. Gaikwad	Prof. R.R. More	Dr. R.V. Suryawanshi
Dr. A.M. Mulajkar	Prof. S.P. Kumbhar	Dr. Amjad Pathan
Dr. S.G. Benjalwar	Miss A.B. Tagarkhede	Dr. S.B. Shaikh
Prof. R.S. Madarse	Dr. V. P. Sandur	Dr. P. B. Achole

Published by- Dr. M. N. Kolpuke, Principal, Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta.Mukhed Dist.Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

महाराष्ट्रातील अर्थव्यवस्थेवर [illegible] परिणाम झाले. [illegible] कार्यान्वित [illegible] करण्यात आले. [illegible] तीन महिन्यांचे रेशन [illegible] निर्णय झाला. [illegible] करणाऱ्या [illegible] करण्यात आली. कोरोनाला [illegible] नागरिकांनी घरातच राहावे, [illegible] प्रशासनाने [illegible] दिले नाहीत. [illegible] कोरोनामुळे [illegible] करण्यात आले आहे. [illegible] न्यायालयाचे न्यायमूर्ती [illegible]. ८ एप्रिल रोजी [illegible] सर्वोच्च न्यायालयात दाखल केलेल्या याचिकेवर [illegible] कोरोनाच्या चाचणी [illegible] सुनावणी झाली व सर्वोच्च न्यायालयाने [illegible] चाचणी मोफत करण्यात यावी असा निर्देश केंद्र सरकारला दिला [illegible] दिल्या. १३ एप्रिल रोजी सर्वोच्च न्यायालयाने ८ एप्रिलला दिलेल्या आपल्याच आदेशात बदल केला, नव्या आदेशानुसार फक्त दारिद्र्यरेषेखालील, [illegible] आणि आयुष्मान भारत योजनेच्या लाभार्थी असलेल्यांनाच ही चाचणी मोफत असेल असा निकाल दिला. [illegible] कोरोनाची चाचणी [illegible] करण्यासाठी [illegible] चाचणीसाठीचे दर [illegible] आहे.

संशोधन समस्या :-

संशोधन समस्या ही संशोधनाची प्रथम पायरी आहे. त्यामुळे कोणतेही संशोधन करताना संशोधकाला संशोधनाची समस्या निश्चित करावी लागते. त्यामुळे प्रस्तुत संशोधनात महाराष्ट्रातील कोरोना विषाणू आणि वास्तव परिस्थितीचा आढावा ही संशोधनाची समस्या निवडली आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे :-

1. महाराष्ट्रातील करोनाच्या स्थितीचा आढावा घेणे.
2. करोना महामारीचा इतर घटकांवर झालेल्या परिणामाचा अभ्यास करणे.
3. करोना या महामारीला रोखण्यासाठीच्या उपाय योजनांचा आढावा घेणे.

संशोधन पद्धती :-

तथ्य संकलनाच्या अनेक पद्धती आहेत. परंतु [illegible] ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धतीचा प्रस्तुत संशोधनासाठी उपयोग करण्यात आला आहे.

प्रयोग शाळा :-

कोरोनाव्हायरस रोगाच्या निदानासाठी महाराष्ट्रातील [illegible] प्रयोगशाळांची [illegible] २०२० [illegible] महाराष्ट्रातील कोरोना विषाणू उद्रेकात कोरोनाव्हायरस रोग २०१९ च्या निदानासाठी ११ सरकारी व ५० खासगी अशा एकूण राष्ट्रीय विषाणूविज्ञान संस्थाद्वारा मान्यताप्राप्त प्रयोगशाळा आहेत.

चाचणीचे प्रकार

१० जानेवारी २०२० रोजी जागतिक आरोग्य संघटनेने सार्स-सीओव्ही-२ साठी अनेक आरएनए चाचणीचे मानदंड प्रकाशित केले व रिअल-टाईम रिव्हर्स ट्रान्सक्रिप्शन पॉलिमरेज चेन रिॲक्शन (आरटीपीसीआर) ही चाचणी कोरोना लागण झाल्याचे पुष्टीकरण करण्यासाठी प्रमाणित केली. ७ एप्रिल २०२० रोजी भारतात कोरोनाचा वाढता प्रादुर्भाव पाहता राष्ट्रीय विषाणूविज्ञान संस्थाने [illegible]

PRINCIPAL
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आर्थिक परिणाम :-

[illegible]

कृषी व्यवसायावरील परिणाम :-

[illegible]

PRINCIPAL
[illegible]

Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, 20 July-2021, Volume-11, Issue-27
Impact of Environment on Agriculture, Health, Water Resources, Social Life & Industrial Development

व शेतकऱ्यांना आर्थिक सिद्ध हे फक्त देशिक सोलापूर जिल्ह्यातील बार्शी तालुक्यातील मालवंडी या गावातील शेतकऱ्याला कोरोना विषाणूमुळे शेतातच टाकून देण्याची वेळ आली. कोरोना विषाणूने द्राक्ष बागायतदारांना द्राक्ष उत्पादक शेतकऱ्यांची निर्यात बंद झाली. मोठ्या कष्टाने सांभाळलेली द्राक्षाच्या बागेतली द्राक्षे तोडायला मजूर नाही, बाजारात न्यायला व्यवस्था नाही म्हणून बागायतदाराने स्वतःच्या हाताने आपली बाग तोडून टाकली. संचारबंदीमुळे व नाशवंत असल्याने आंब्याचे उभे पीक समोर असताना ग्राहक नसल्यामुळे आंबा उत्पादक शेतकरी बरबादीत सापडला. कापूस, मक्याची खरेदी बंद झाल्याने विक्रीअभावी घरात पडून असलेल्या मालाला भाव न मिळाल्यामुळे शेतकरी हैराण झाले. ठिबक सिंचनाद्वारे टरबूज, काकडी, टोमॅटो आदी पिके घेतली जातात, त्यासाठी मोठा खर्च केला जातो. ही पिके निघण्याच्या काळातच कोरोनाची साथ पसरल्याने शेतात सोडण्याची खराब झाली.

पोल्ट्री उद्योगावरील परिणाम :-

महाराष्ट्रात ब्रॉयलर चिकनची एका दिवसासाठीची मागणी ही अंदाजे २८०० टन एवढी आहे. चिकन खाल्ल्याने कोरोना व्हायरसची लागण होते, अशी अफवा सोशल मीडियावरून पसरली. या अफवेमुळे महाराष्ट्रातील पोल्ट्री उद्योगाला मोठा फटका बसला. कोल्हापूरमध्ये सेल लावून कोंबड्यांची विक्री केली गेली असल्या १०० रुपयामध्ये ५ कोंबड्या विकल्या गेल्या. पानपरभणीत एका उद्योजकाने नऊ लाख अंडी, दीड लाख पिल्ले आणि एक लाख कोंबड्या जमिनीत पुरून त्याची विल्हेवाट लावली. केंद्र सरकार आणि राज्य सरकार अशा दोन्ही सरकारांनी जनजागृती केली. कुक्कुट पक्षी किंवा कुक्कुट उत्पादन यांचा कोरोना व्हायरसच्या प्रादुर्भावाशी कोणताही संबंध नाही. कुक्कुट मांस आणि कुक्कुट उत्पादने मानवी आहारामध्ये वापरण्यासाठी पूर्णपणे सुरक्षित असून, नागरिकांनी अशाप्रकारे अफवांकडे दुर्लक्ष करावे असा आशयाचे परिपत्रक महाराष्ट्र सरकारच्या पशुसंवर्धन विभागाने काढले. ९५ डिग्री सेल्सिअसच्या वर अन्न शिजवल्यास, त्यात कुठलाही विषाणू शिल्लक राहत नसल्याने कोरोनाच्या भीतीने मांसाहार टाळण्याची काहीही आवश्यकता नसल्याची माहिती इंडियन मेडिकल असोसिएशनचे महाराष्ट्र राज्याचे अध्यक्ष डॉ. अविनाश भोंडवे यांनी दिली.

वाहन उद्योगावरील परिणाम :-

कोरोनाच्या उद्रेकाचा महाराष्ट्रातील वाहन उत्पादन उद्योगाला मोठा फटका बसला आहे. बजाज ऑटो कंपनीने आपले आकुर्डी आणि चाकण येथील कारखाने ३० मार्चपर्यंत बंद ठेवण्याचा निर्णय घेतला. टाटा मोटर्सने देखील पुण्यामधील उत्पादन कमी केल्याचे जाहीर केले. अशोक लेलँडने ठाणे आणि आयशर मोटर्सने भारत येथील सुटे भाग तयार करणारे कारखाने बंद ठेवण्याची घोषणा केली. मर्सिडीज बेंझ कंपनीने चाकण येथील कारखाना ३१ मार्चपर्यंत बंद ठेवण्याचा निर्णय घेतला. फियाट, फोर्ड मोटर्स आणि जेसीबी कंपन्यांनी ३१ मार्चपर्यंत कारखाने बंद ठेवण्याची घोषणा केली. महिंद्रा आणि महिंद्रा कंपनीने देखील २३ मार्च रोजी त्यांचे कांदिवली, नागपूर आणि चाकण येथील कारखाने ३१ मार्चपर्यंत बंद ठेवण्याचा निर्णय घेतला. १७ मार्चच्या एका अहवालानुसार कोरोना विषाणू उद्रेकामुळे मुंबईमधील सेवा क्षेत्राचे दर महिना कमीत कमी १६००० कोटी रुपयांचे नुकसान होणार असल्याचा अंदाज आहे. परदेशी प्रवाशांना न येण्याने मुंबई शहराचे अंदाजे १९०० कोटी रुपयांचे नुकसान होण्याचा अंदाज वर्तवला जात आहे. कोरोना विषाणूच्या उद्रेकामुळे मुंबईमधील मनोरंजन उद्योगालाही मोठा फटका बसणार आहे. बॉलीवुडमधील अनेक चित्रपटांचे प्रदर्शन पावसाळ्यापर्यंत ढकलण्यात आल्याचे. या उद्योगाशी निगडीत अनेक कामगार आर्थिक अडचणीत आले आहेत. बॉलीवुड चित्रपट व्यवसायाचे लॉकडाउनमुळे अंदाजे ११०० कोटी रुपयांचे उत्पन्न कमी होण्याचा अंदाज आहे. २० मार्च रोजी कोरोना विषाणूच्या उद्रेकाशी लढा देण्यासाठी महाराष्ट्र सरकारने तीन विभाग पुरता ५ सप्टेंबरपर्यंत ८% कपात जाहीर केली त्याचे उपयुक्तपणी अधिक पगार घरी नेऊन

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]

[illegible]

ISSN 2394 5303 | Printing Area | Issue 68, Vol-01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

June-2020, Issue-68, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

PRINCIPAL

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor [illegible] | Printing Area Peer-Reviewed International Journal | [illegible] Issue-[illegible], Vol-[illegible] | [illegible]

[illegible]

[illegible] :-

[illegible]

[illegible] :-

[illegible] :-

[illegible]

[illegible] :-

[illegible]

[illegible] :-

[illegible]

[illegible] :-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

INDEX

[illegible] [illegible]
[illegible] || [illegible]

[illegible] The Covid-19 [illegible]
[illegible] || [illegible]

[illegible] Effects of academic stress and peer pressure on mental health of [illegible]...
[illegible] || [illegible]

[illegible] CORPORATE CRIMES – CORPORATE HUMAN RIGHTS
[illegible] || [illegible]

[illegible] A CRITICAL REVIEW ON DETECTION OF [illegible]...
[illegible] || [illegible]

[illegible] Miniature Paintings [illegible]...
[illegible] || [illegible]

[illegible] Secularism: [illegible]
[illegible] || [illegible]

[illegible] ENVIRONMENTAL ETHICS: ISSUES AND POSSIBLE SOLUTIONS
[illegible] || [illegible]

[illegible] Kamala Markandaya's The Coffer Dams: [illegible]...
[illegible] || [illegible]

[illegible] Libraries during pandemic situation
[illegible] || [illegible]

[illegible] DIGITAL LIBRARIES: AN OVERVIEW
[illegible] || [illegible]

[illegible] THE THEMATIC STUDY OF [illegible]
[illegible] || [illegible]

[illegible] Digital Transformation of Education during COVID-19 and its impact on...
[illegible] || [illegible]

08

ENVIRONMENTAL ETHICS, ISSUES AND POSSIBLE SOLUTIONS

Dr. Ramdas B. Madale
Associate Professor and Research Guide,
Dept. of Geography,
S.V. College, Mukramabad, Dist Nanded

****

ABSTRACT

Ethics is one branch of philosophy. Ethics seeks to define fundamentally what right and what is wrong, regardless of cultural differences for e.g. most cultures have a reverence for life and feel that all individuals have a right to live. It is considered unethical to deprive and individual of life. In the 1970s, philosophers began to formulate a new field called environmental ethics, a study concerned with the value of the physical and biological environment. The focus of this field of study contrast with traditional ethical studies, which had to do with the relationship among people. Only few aspects of the academic subject are introduce in this chapter. In recent years, the study of environment ethics has grown into a large and complex field. There are practical are moral reasons for placing a value on the environment. There are four categories of justification, utilitarian, ecological, aesthetic and moral.

Introduction

Environment ethics is a critical study of the normative issues and principles relevant to the relationship between human and nature world.

The main concern is that to which inherent value can be ascribed to things that are not human, including animals, vegetation and even land.

The integrated efforts are to be put so as to examine the interrelated components of environment system. Environmental ethics has much to contribute to the solution of global environmental problems and raise awareness about environmental problems. Human have a duty to act as benign stewards of the earth.

What we need a new set of ethics for the environmental the answer includes three factors :

1) New effects on nature

Because our modern technological civilization affects nature the ethical consequence of these new actions

2) New knowledge about nature

Modern science demonstrated how we have changed and are changing our environment in way not previously understood, thus raising new ethical issues. For e.g. until the past decade, few people believed that human activities could be changing earths global environment.

Now however, scientist believe that burning fossil fuels and clearing forests have changed the amount of carbon dioxide in the atmosphere and hat this may change our climate. Hence we have emphasized a global perspective in Rio Summit June 3 to 14, 1992 and Kyoto Protocol Dec. 1 to 10, 1997 in Kyoto city of Japan, 1997. The concrete steps has taken in this conference. This new perspective raise new moral issue.

3) Expanding moral concerns

Some people argue that animals, trees and even rocks have moral and legal rights and that it is a natural extension of civilization to being including the environmental ethics. These expanded concerns lead to a need for a new ethic.

It are to respond to those problems successfully, our environmental ethic must express itself in broder and more fundamental ways. We have to recognize that each of us is individually responsible for the quality of the environment we live in and that our personal actions affect

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta Mukhed Dist Nanded

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]